जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

बीकानेर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 2200660 फैक्स : 0151-2527371 वर्षः 47 संख्याः 118 प्रभात बीकानेर, शुक्रवार, 21 नवम्बर, 2025 डाक प.स.बीकानेर/045/2020-22 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रू.

प. बंगाल में वामपंथी सरकार के 1970 के दिनों से ही वोटर लिस्ट में हेराफेरी चुनाव प्रक्रिया का अंग बन चुकी है

ममता बनर्जी ने नंदीग्राम में कार फैक्ट्री के लिए भूमि अधिग्रहण को मुद्दा बनाकर वोटर लिस्ट की हेराफेरी की स्थापित व्यवस्था को बदल दिया था

- अवैध बांग्लादेशियों के खिलाफ ममता बनर्जी ने लोकसभा में कई बार हल्ला किया था, पर, अब यही बांग्लादेशी उनकी वोटों की हेराफेरी के मुख्य आधार हैं।
- ममता बनर्जी के बाहुबली, जिनका चित्रण सोशल मीडिया पर बहुत विस्तार से देखा जा सकता है, इस बात को सुनिश्चित करते हैं कि विपक्ष को कोई मतदान न कर सके।
- इन बाहुबलियों को पूर्ण प्रशासनिक सहयोग मिलता है, इसीलिए ममता बनर्जी, बंगाल में एसआईआर की प्रक्रिया पूरी न हो सके, इसके लिए कुछ भी करना पड़े, करेंगी।
- एसआईआर की प्रक्रिया पूरी होने की संभावना से ममता बनर्जी और उनकी पार्टी बेचैन होती जा रही है।

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 नवम्बर। सारी ज़िंदगी एक मज़बूत और आक्रामक राजनीतिक लड़ाकू रही ममता बनर्जी इस बार खुद को सम्भवत: कुछ मुश्किल स्थिति में महसूस कर रही हैं।

मतदाता सूची की जो गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया चल रही है, वह ममता बनर्जी की जीत की रणनीति को सीधे चुनौती दे रही है। उनके वोट बैंक के कई बड़े हिस्से अब उजागर होने और हटाए जाने के खतरे में हैं।

चुनाव परिणामों पर एसआईआर का संभावित असर देखते हुए, ममता बनर्जी अब पूरी ताकत से इस पुनरीक्षण प्रक्रिया के खिलाफ आवाज़ उठा रही हैं और किसी तरह इसे रोकने के तरीके खोज रही हैं। लेकिन इसके लिये अब काफी देर हो चुकी है, क्योंकि एसआईआर प्रक्रिया गति पकड चुकी है और काफी प्रभावी तरीके से चल रही है।

पश्चिम बंगाल की मतदाता सूचियों में गड़बड़ियां 1970 के दशक के मध्य से सदैव ही होती रही हैं, जब से लैफ्ट फ्रंट ने बंगाल में चुनावी प्रक्रिया पर दबदबा बनाया था। ममता बनर्जी ने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'हमारी आवाज़ बंद नहीं होगी'

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 नवम्बर। जम्मू और कश्मीर पुलिस की स्टेट इन्वेस्टिगेशन एजेंसी (एसआईए.) ने आज दावा किया कि जम्मू में कश्मीर टाइम्स के दफ़्तर पर मारे गये छापे के दौरान एके-47 राइफ़लें और अन्य हथियार व गोलाबारूद बरामद किए गए, जबकि अख़बार के मालिकों ने इन आरोपों की निन्दा करते हुये इन्हें "डराने, बदनाम करने और अंतत: चुप कराने की कोशिश" बताया।

अधिकारियों ने कहा कि अखबार और उसके संचालकों के खिलाफ दर्ज हुये एक केस के बाद, एसआईए की टीम ने अख़बार के दफ़्तर और कंप्यूटरों की

- कश्मीर टाइम्स ने समाचार पत्र के कार्यालय से हथियार बरामद होने के आरोप को बेबुनियाद बताया।

पूरी तलाशी ली। अधिकारियों ने कहा कि छापे में एजेंसी ने एके राइफ़लों के कारतूस, कुछ पिस्तौल के राउंड और हैंड ग्रेनेड के पिन सहित, इसी प्रकार की कई अन्य चीजें ज़ब्त कीं। उन्होंने कहा कि प्रकाशन के संचालकों से पूछताछ की जा सकती है।

कश्मीर टाइम्स प्रबंधन ने अखबार के जम्मू दफ़्तर पर छापे की कडी आलोचना की और राज्य-विरोधी गतिविधियों के आरोपों को एक स्वतंत्र

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

बिहार में आजमाये गये फार्मूले को यू.पी. में दोहराने की तैयारी में है भाजपा

यू.पी. के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य, जो स्वयं कुर्मी हैं, को बिहार में 25 सीटों पर कुर्मी मतदाता का मन व सोच जानने के लिए छोड़ा गया था

- यू.पी. में कुर्मी जनसंख्या बिहार से दोगुनी है, पर, कुर्मी और ईबीसी सपा का वोट बैंक रहे हैं।
- भाजपा इस वोट बैंक को अपने पक्ष में जोड़ने के लिए कुर्मी/ईबीसी मुख्यमंत्री बनाने का सोच रही है।
- वैसे भी कहा जाता है कि अमित शाह व मोदी पूर्णतः खुश नहीं हैं, योगी आदित्यानाथ के काम करने के तरीके से।
- पंद्रह महीने बाद यू.पी. में भी विधानसभा चुनाव होंगे, पर, क्या आसानी से बिहार का सोशल इंजीनियरिंग का फार्मूला यू.पी. में लागू कर लेगी भाजपा।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 नवम्बर। 20 नवंबर को नीतीश कुमार की नई कैबिनेट के शपथ लेने के बाद यह साफ़ होता जा रहा है कि (जदयू) नेता और भाजपा, दोनों ने अपनी राजनीतिक रणनीति सिर्फ़ बिहार के लिए नहीं, बल्कि पड़ोस के बड़े चुनावी राज्य उत्तर प्रदेश के लिए भी बहुत सोच-समझकर बनाई है। यूपी विधानसभा चुनाव अब सिर्फ़ 15 महीने दूर हैं और इन चुनावों ने भाजपा की दीर्घ अवधि की योजना को अभी से नया आकार देना शुरू कर दिया है।

पिछले एक साल से भाजपा ने अपने ज़्यादातर राजनीतिक संसाधन बिहार पर लगाए हुए थे और पार्टी, जरुरत पड़ने पर, अकेले लड़ने की स्थिति के लिए भी पूरी तरह तैयार थी। इसके साथ ही, पार्टी नेतृत्व को पूरा भरोसा था कि केन्द्र में मोदी सरकार से लगातार मिल रहे सहयोग को देखते हुए नीतीश कुमार अचानक अपनी राजनीतिक दिशा नहीं बदलेंगे।

एक अहम कदम उठाते हुये, केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने यूपी के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य को प्रचार अभियान के दौरान बिहार की जातीय गणित को करीब से देखने की ज़िम्मेदारी दी। बताया जाता है कि मौर्य, जो कुर्मी समुदाय के काफ़ी प्रभावशाली नेता माने जाते हैं, को लगभग 75 सीटों की निगरानी की ज़िम्मेदारी दी गई थी, जहाँ वे वोटर व्यवहार और ओबीसी मतदाताओं की चुनावी गतिविधियों और तौर -तरीकों की मॉनिटरिंग कर सकें।

उनकी तैनाती रणनीतिक थी: कुर्मी समुदाय, जो बिहार के ओबीसी वोटों का लगभग 9 से 10 प्रतिशत हिस्सा है,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

– थरूर ने अपनी पुस्तकों में मोदी की काफी आलोचना की है

किताबों के अनुसार, मोदी ने प्रजातंत्रीय ढाँचे को कमज़ोर किया है व देश की इकॉनमी को हानि पहुँचा रहे हैं

- पर, हाल ही में उन्होंने मोदी को बधाई दी, उनके इकोनॉमिक सोच व सांस्कृतिक सामंजस्य बैठाने के लिए।
- पर, इस खुली प्रशंसा के बावजूद कांग्रेस थरूर पर अंकुश क्यों नहीं लगा पा रही, क्या थरूर केरल में कांग्रेस को सैंटर "राईट" जगह बनाने में मदद कर रहे हैं, अपने उद्गारों से।
- या कांग्रेस केरल में चुनाव के पहले पार्टी में कुछ उथल-पुथल नहीं होने देना चाहती, थरूर को निष्कासित करके।

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 नवंबर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के हालिया भाषण की प्रशंसा करने के बाद, कांग्रेस नेता और तिरुवनंतपुरम के सांसद शशि थरूर ने एक बार फिर राजनीतिक तूफ़ान खड़ा कर दिया है, खासकर केरल में, जहां अगले साल विधानसभा चुनाव होने हैं। लेकिन असली सवाल यह है: कांग्रेस नेतृत्व थरूर पर कार्रवाई क्यों नहीं कर पा रहा है? क्या इसकी वजह यह है कि थरूर केरल की राजनीति में कांग्रेस की सेंटर-राइट स्पेस को बनाए रखने में मदद करते हैं? या फिर कांग्रेस उच्च नेतृत्व ऐसे समय में राज्य इकाई में खलबली नहीं मचाना चाहता, जब विधानसभा चुनाव ज्यादा दूर नहीं हैं।

थरूर की हालिया टिप्पणियाँ दिलचस्प विरोधाभास दिखाती हैं। अपनी किताबों में उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी पर तीखा हमला किया है, लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमज़ोर करने का आरोप लगाया, अर्थव्यवस्था को बर्बाद करने की बात कही, और उन पर स्वयं को बढ़ावा देने का भी आरोप लगाया। लेकिन कई मौकों पर उन्होंने प्रधानमंत्री की प्रशंसा भी की है, जैसे विरासत संरक्षण और वैश्विक प्रतिष्ठा के मामले में। कुछ समय पहले उन्होंने भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी की रथयात्रा की भी तारीफ की थी।

थरूर ने राजनीति में "नैपो किड कल्चर" की आलोचना करके पार्टी के समर्पित नेताओं को भी नाराज़ कर दिया है, जिसे गांधी परिवार पर परोक्ष हमले के रूप में देखा गया है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'पढ़े लिखे बुद्धिजीवी आतंकी ज्यादा खतरनाक होते हैं'

नई दिल्ली, 20 नवंबर। दिल्ली पुलिस ने सुप्रीम कोर्ट में आज 2020 के उत्तर-पूर्व दिल्ली दंगों को देश की आजादी पर हमला और सरकार बदलने की सोची-समझी साजिश करार दिया और उमर खालिद, शरजील इमाम समेत, कई एक्टिविस्ट्स की जमानत याचिकाओं का गुरुवार को कड़ा विरोध

- दिल्ली पुलिस ने सुप्रीम कोर्ट में 2020 के दिल्ली दंगों के साजिशकर्ता की जमानत याचिका का विरोध किया।

किया। दिल्ली पुलिस ने लाल किले के पास हुए धमाके का हवाला देते हुए कहा कि जब पढ़े-लिखे बुद्धिजीवी आतंकवादी बन जाते हैं, तो वे जमीनी कार्यकर्ताओं से कहीं ज्यादा खतरनाक हो जाते हैं।

दिल्ली पुलिस की ओर से पेश एडिशनल सॉलिसिटर जनरल एसवी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

लैपर्ड ने सिविल लाइंस में हड़कंप मचाया

गुरुवार की सुबह 9 बजे लैपर्ड मंत्री सुरेश रावत के घर व टाइनी ब्लॉसम्स स्कूल में घुसा

- स्कूल प्रशासन ने छोटे बच्चों को क्लास रूम में बंद कर दिया। दो घंटे की मशक्कत के बाद वन विभाग की टीम लैपर्ड को ट्रैंकुलाइज़ कर पाई।

जयपुर, 20 नवम्बर। राजधानी के वीवीआईपी इलाके में गुरुवार सुबह लैपर्ड के आ जाने की सूचना पर हड़कंप मच गया, जिसके बाद जयपुर के पॉश इलाके में रहने वाले स्थानीय लोगों में दहशत का माहौल बन गया। लैपर्ड आने की जानकारी लोगों को सुबह 9 बजे मिली। इसके बाद स्थानीय लोगों ने मोबाइल के जरिए एक दूसरे को इस घटना की जानकारी दी और स्थानीय लोग अपने-अपने घरों की खिड़कियां और दरवाजे बंद कर अंदर ही दुबके रहे। वहाँ स्थित स्कूलों में डर के चलते स्कूल प्रशासन ने छोटे-छोटे बच्चों को क्लास रुम में बंद कर दिया। लैपर्ड सुबह करीब 9 बजे सबसे पहले लेन नंबर 6 पर बने एक घर में घुसा और कुछ देर घूमने के बाद दीवार फांद कर जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत के सरकारी बंगले में देखा गया। इसके कुछ देर बाद चहलकदमी करते हुये, लैपर्ड टाइनी ब्लॉसम सीनियर सेकेंडरी स्कूल में घुस गया। ऐसे में सुरक्षा के लिहाज से बच्चों को क्लासरूम में बंद कर दिया गया।

जयपुर के वीवीआईपी इलाके सिविल लाइंस में गुरुवार को घुसा लैपर्ड बंगलों की दीवार के पीछे छुपता रहा।

लैपर्ड इलाके के एक से दूसरे घर में दीवार फांदकर मूवमेंट करता रहा।

वीवीआईपी इलाके में लैपर्ड घुसने की सूचना मिलने के बाद वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची। लेकिन वन विभाग की कार्रवाई के दौरान ऐसा लगा, जैसे वो इस कार्यवाही का आदी हो और बार-बार वन विभाग की टीम को गच्चा देकर अपनी जगह बदलता रहा। लेकिन वन विभाग की टीम ने कडी मशक्कत के बाद 11 बजे सिविल लाइंस की लेन - 6 से लेपर्ड को ट्रेंकुलाइज कर लिया, जिसके बाद उसे झालाना रिजर्व ले जाया गया।

बताया जा रहा है कि वीवीआईपी इलाके सिविल लाइंस में राजभवन, सीएम आवास समेत, कई मंत्रियों और वरिष्ठ अधिकारियों के सरकारी आवास हैं, जहां लेपर्ड की सूचना से हडकम्प मचा रहा। दो घंटे बाद लेपर्ड को रेस्क्यू किए जाने की सूचना के बाद स्थानीय लोगों ने राहत की सांस ली।

पंजाब पुलिस ने लुधियाना में दो आतंकियों का एनकाउंटर किया

लुधियाना, 20 नवंबर। लुधियाना में पंजाब पुलिस ने दो आतंकियों का एनकाउंटर किया है, दोनों आतंकियों के तार आतंकी ग्रुप से जुड़े हुए हैं, जो पाकिस्तानी आतंकी मॉड्यूल का है।पुलिस कमिश्नर ने बताया कि इन

- दोनों संदिग्ध लोग हैंड ग्रेनेड तय शुदा जगह फेंकने की फिराक में थे।

दोनों संदिग्ध लोगों को हैंड ग्रेनेड इकट्ठा करके तयशुदा जगहों पर फेंकने का काम सौंपा गया था। पुलिस ने समय रहते इन्हें धर दबोचा है। पुलिस ने मौके से हैंड ग्रेनेड, कुछ पिस्तौल और कारतूस भी बरामद किए हैं। जानकारी के अनुसार, एनकाउंटर की ये घटना लुधियाना शहर से बाहर लाडोवाल टोल प्लाजा के पास हुई। अगर पकड़े ना जाते तो ये दोनों आतंकी किसी बड़ी घटना

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

डॉ. उमर उन नबी धुरी थे उस वाइट कॉलर नेटवर्क के जिसने दिल्ली के आतंकवादी हादसे को अंजाम दिया था

डॉ. उमर के सहपाठी उन्हें शांत स्वभाव का पठनशील व्यक्ति ही मानते रहे हैं

- उन्होंने पाकिस्तान में अपने हैंडलर से बम बनाने की प्रक्रिया सीखी तथा फरीदाबाद के मकान में उसका एक्सपैरीमैंट करते रहे।
- उमर के व्यक्तित्व का बहुत बारीकी से अध्ययन हो रहा है, यह जानने के लिए कि कैसे आतंकवादी विचारधारा डॉक्टरों के पढ़े लिखे दिमाग में स्थान बना रही है।
- जाँच एजेंसियाँ इस पूरे प्रकरण का वॉटर टाइट केस बनाने में तो जुटी हैं ही, पर, उनके समक्ष एक चुनौती यह भी है कि कैसे ऐसे मॉड्यूल्स को पहचानें और पनपने से पहले ही रोक लें।

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 नवंबर। लाल किले के पास हुए विनाशकारी कार विस्फोट की जांच जैसे-जैसे आगे बढ़ रही है, एक नाम इसके केन्द्र में उभरकर सामने आया है: डॉ. उमर उन-नबी (कुछ रिपोर्टों में उमर मोहम्मद), एक कश्मीरी डॉक्टर, जिन पर अब भारतीय एजेंसियों ने जैश-ए-मोहम्मद से जुड़े एक सॉफिस्टिकेटेड "वाइट-कॉलर" आतंकी मॉड्यूल का प्रमुख ऑपरेटिव होने का आरोप लगाया है।

सुरक्षा एजेंसियों और मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, लाल किले के पास जिस हुन्डई आई-20 कार में धमाका हुआ, उसे उमर ही चला रहे थे। जांचकर्ता इस घटना को किसी हादसे की तरह नहीं, बल्कि कार से किए गए सुसाइड अटैक की तरह देख रहे हैं। फोरेंसिक और डीएनए टीमें मलबे से मिले अवशेषों की पहचान की पुष्टि में लगी हैं।

डॉ. उमर दक्षिण कश्मीर के पुलवामा ज़िले के कोइल गांव के रहने वाले हैं, जहां सुरक्षा बलों ने जांच के सिलसिले में उनका घर गिरा दिया। कई मीडिया स्रोतों के मुताबिक, उनका जन्म 24 फरवरी 1989 को हुआ था। वे उस पीढ़ी के पढ़े-लिखे कश्मीरियों में आते हैं, जिनकी प्रोफेशनल पहचान अब उन पर लगे गंभीर आरोपों के बिल्कुल विपरीत है।

उनका डॉक्टर बनने का सफर जम्मू-कश्मीर से शुरू हुआ, जहां उन्होंने एम.बी.बी.एस. किया और फिर श्रीनगर के गवर्नमेंट मैडिकल कॉलेज से एम.डी. किया। उन्होंने अनंतनाग में सीनियर रेजिडेंट के रूप में काम किया और बाद में फरीदाबाद में अल-फलाह मैडिकल कॉलेज और हॉस्पिटल में असिस्टेंट प्रोफेसर के तौर पर शामिल हुए। फरीदाबाद में वे कॉलेज के पास एक साधारण किराए के कमरे में रहते थे, जिन्हें जानने वाले शांत और पढ़ने-लिखने में लगे रहने वाला व्यक्ति बताते हैं। अधिकारियों के अनुसार, उमर अकेले काम नहीं कर रहे थे। पुलिस सूत्रों का कहना है कि वे डॉक्टरों, छात्रों और स्टाफ का एक ऐसा मॉड्यूल चला रहे थे, जो कथित तौर पर कट्टरपंथी था और जैश ए मोहम्मद (ऐ.ई.एम.) से जुड़ा हुआ था। नेटवर्क से जुड़े अन्य नामों में डॉ. अदील अहमद राथर और डॉ. मुजम्मिल शाकिल शामिल हैं, जो दोनों कश्मीर के ही रहने वाले हैं।

जांच एजेंसियों का कहना है कि उमर ने फरीदाबाद में अपने कमरे में एक गुप्त लैब बनाई हुई थी, जहां वे विस्फोटकों पर प्रयोग करते थे। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, वे पाकिस्तान में बैठे

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

नीतीश ने 26 मंत्रियों के साथ शपथ ली

पटना, 20 नवंबर। बिहार के मुख्मयंत्री नीतीश कुमार ने 26 मंत्रियों के साथ गुरूवार को ऐतिहासिक गांधी मैदान में आयोजित भव्य समारोह में शपथ ली, जिनमें भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के 14, जनता दल यूनाईटेड

- इनमें भाजपा के 14, जदयू के 8, लोकजनशक्ति पार्टी के 2 तथा राष्ट्रीय लोक मोर्चा व हिन्दुस्तानी आवाम मोर्चा के एक-एक मंत्री थे।

(जदयू) के आठ,लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के दो और राष्ट्रीय लोक मोर्चा (रालोमो) तथा हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा (हम) के एक-एक मंत्री शामिल हैं।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय मंत्री अमित शाह, जे. पी.

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

न्याय युक्त व्यवहार करना, सौंदर्य से प्रेम करना तथा सत्य की भावना को हृदय में धारण करके विनयशील बने रहना ही सबसे बड़ा धर्म है।
–डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

आधार जन्मतिथि, पता तथा नागरिकता का प्रमाण नहीं है, एसआईआर में इसका उपयोग मात्र पहचान सत्यापित हेतु है

बिहार चुनाव विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के आधार पर शान्तिपूर्वक भारी मतदान से चुनाव सम्पन्न हो गया। बिहार चुनाव के बाद चुनाव आयोग ने देश के 12 राज्यों में एसआईआर प्रारम्भ कर दी है। यह प्रक्रिया राजस्थान सहित 12 राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में हो रहा है और 4 दिसम्बर 2025 तक पूरा होना है। राजस्थान के अतिरिक्त अन्य राज्य व केन्द्र शासित प्रदेश पश्चिम बंगाल, उत्तरप्रदेश, तामिलनाडु, मध्यप्रदेश, केरल, गुजरात, गोवा, छत्तीसगढ, अण्डमान-निकोबार व पाण्डुचेरी हैं। अनुमान है कि 12 राज्यों में कुल 50,99,72,687 मतदाताओं को शामिल किया जावेगा। ऐसा प्रतीत होता है कि दिनांक 04.012.2025 मतदाता सूची तक ड्राफ्ट तथा फाइदल मतदाता सूची दिनांक 09.02.2026 तक प्रकाशित हो जावेगी।

एसआईआर की वैधानिकता को लेकर सुप्रीम कोर्ट और राज्यों के हाईकोर्ट्स में कई याचिकायें पेश हो चुकी हैं। सुप्रीम कोर्ट का यह मत प्रतीत हो रहा है कि जो पिटीशन्स हाईकोर्ट्स में पेश हुई हैं, वे सुप्रीम कोर्ट अपने पास ट्रान्सफर करा लें, अथवा हाईकोर्ट्स सुप्रीम कोर्ट के आदेश की प्रतीक्षा करें। इस समय दो मुख्य याचिकायें सुप्रीम कोर्ट के समक्ष विचाराधीन हैं और दोनों ही 26 नवम्बर, 2025 को सुनवाई पर लगी हैं। मुख्य याचिका W.C. (P) NO.640/2025 एसोसियेशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफोर्म एण्ड अन्य बनाम इलेक्शन कमीशन ऑफ इण्डिया है, इसके साथ कई पिटीशन्स संलग्न की गई हैं तथा दूसरी पिटीशनें .P. (P) NO.634/2025 अश्विनी कुमार उपाध्याय बनाम यूनियन ऑफ इण्डिया व अन्य है।

भारत के संविधान में कानून बनाने का अधिकार संसद तथा विधानसभा को दिये हैं। संसद का गठन संविधान के अनुच्छेद 79, राज्यों की विधान सभाओं का अनुच्छेद 168, संघ की न्यायपालिका का गठन अनुच्छेद 124 में तथा राज्यों की विधानसभाओं का गठन अनुच्छेद 168 व उच्च न्यायालयों का गठन अनुच्छेद 216 में किया गया है। ये सब इस प्रकार Statutory Bodies हैं। इसी प्रकार चुनाव आयोग भी एक स्वतंत्र Statutory Body है, इसका गठन संविधान के अनुच्छेद 324 में दिया गया है। चुनाव (निर्वाचन) के अधीक्षण, निदेशन तथा नियंत्रण का सम्पूर्ण अधिकार चुनाव आयोग को दिया गया है। संसद, विधानसभा, न्यायपालिका की तरह यह अपने कार्यक्षेत्र में सुप्रीम है। चुनाव आयोग का कार्यक्षेत्र चुनावों के लिये चुनाव की मतदाता सूची तैयार करने, चुनावों के संचालन, निदेशन, नियंत्रण का है। इस प्रकार चुनाव आयोग जो कि संवैधानिक संस्था है उसे चुनाव सम्बन्धित सभी कार्यों को सम्पादित करने का सम्पूर्ण अधिकार संविधान ने दिया है। इस प्राकर यह भी स्पष्ट है कि मतदाता सूची कैसे तैयार की जावेगी, इस बाबत भी चुनाव आयोग को पूर्ण अधिकार है, इस प्रकार साधारण चुनाव मतदाता सूची व शुद्धिकरण के हेतु एसआईआर प्रक्रिया का भी उसे अधिकार है। चुनाव के अधीक्षण, निदेशन और नियंत्रण में एसआईआर का अधिकार चुनाव आयोग में निहित है।

अनुच्छेद 326 स्पष्ट शब्दों में घोषणा करता है कि मताधिकार वयस्क मताधिकार पर आधारित है और केवल उसे प्राप्त है जो भारत का नागरिक है। सभी पिटीशन्स अनुच्देद 32 के तहत हैं और पीआईएल हैं। वे कैसे नागरिक अधिकार के संरक्षण हेतु हो सकती हैं?

उपरोक्त प्रावधानों के अधीन संसद को चुनावों के सम्बन्ध में कानून बनाने का अधिकार अनुच्छेद 327 में दिया है। अनुच्छेद 329 में पुन: इसे स्पष्ट कर दिया है कि चुनाव के विषय में न्यायालयों का हस्तक्षेप वर्जित किया है। हाँ चुनाव विवाद चुनाव हेतु बनाये गये कानून के तहत् केवल चुनाव पिटीशन के द्वारा किया जा सकता है। चुनाव पिटीशन सुनने का अधिकार हाईकोर्ट को दिया गया है।

सुप्रीम कोर्ट में खण्डपीठ के समक्ष पुन: पुन: यह प्रश्न उठाया जा रहा है कि आधार कार्ड के आधार पर, व्यक्ति को मताधिकार दिया जाना चाहिये तथा यदि उसका नाम पूर्ववर्ती चुनाव नामावली मे आ चुका है तो उसे चुनाव में मतदान करने का अधिकार दिया जाना चाहिये। इस संबंध में समय-2 पर कुछ निर्देश सुप्रीम कोर्ट की खण्डपीठ ने दिये हैं, किन्तु प्रत्येक बहस के समय वही बहस पुन: हो रही है। खण्डपीठ में सुनवाई जस्टिस सूर्यकान्त व जस्टिस जोमाल्या बागची कर रहे हैं।

यहाँ एक प्रश्न एसआईआर का है और दूसरा प्रश्न आधार कार्ड का है। एसआईआर पर उपरोक्त चरणों में लेखक ने अपने व्यक्तिगत विचार अभिव्यक्त किये हैं। इस लेख के माध्यम से 'आधार' के विषय पर अब तक जो समीक्षायें न्यायालयों द्वारा की गई हैं, उन पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है।

एसआईआर की प्रक्रिया के बाद नई लिस्ट पर बिहार के चुनाव हो चुके हैं। भारी मतदान हुआ है, जैसे पहले आज तक नहीं हुआ है। किसी भी पिटीशनर ने मतदान के समय किसी प्रकार की गडबडी की शिकायत मतदान केन्द्रों पर नहीं की है। अभी भी कोई भी मतदाता आर पी एक्ट 1951 के तहत् कानून के अनुसार विजयी उम्मीदवार के विरूद्ध चुनाव याचिका प्रस्तुत कर सकता है।

यहाँ एक प्रश्न एसआईआर का है और दूसरा प्रश्न आधार कार्ड का है। एसआईआर पर उपरोक्त चरणों में लेखक ने अपने व्यक्तिगत विचार अभिव्यक्त किये हैं। इस लेख के माध्यम से 'आधार' के विषय पर अब तक जो समीक्षायें न्यायालयों द्वारा की गई हैं, उन पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है।

पिटीशनर अश्विनी कुमार की पिटीशन पर चुनाव आयोग ने अपना जवाब पेश कर अपनी भूमिका की विस्तृत जानकारी अभिव्यक्त की है।

चुनाव आयोग ने अश्विनी कुमार उपाध्याय के केस में अपना जवाब दावा पेशकर निवेदन किया है कि आधार कार्ड केवल व्यक्ति की पहिचान को दर्शाता है वह न तो जन्मतिथि की सत्यता का प्रमाण है और न उसके आधार पर मतदाता सूची में उसका नाम ही दर्ज किया जा सकता है तथा न उसका उपयोग मतदाता सूची में नाम काटने तथा जोड़ने हेतु हो सकता है। जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 की धारा 23(4) इस विवेचन को विशेष तौर स्पष्ट करती है। चुनाव आयोग ने संतोष कुमार दुबे सेक्रेटरी, चुनाव आयोग के शपथ पत्र जो उन्होंने केस के समर्थन में पेश किया है कहा है कि इलेक्शन लॉज (अमेण्डमेण्ट) एक्ट 2021 की धारा 23 में संशोधन कर, अभिव्यकत किया है कि संशोधन की आवश्यकता इस हेतु थी कि कई जगह की चुनाव नामावली में एक ही व्यक्ति का नाम आने की असंगति को रोकना था। इसी आधार पर फॉर्म 6 भी संशोधित दिनांक 17.06.2022 को किया गया था। धारा 9 आधार अधिनियम 2016 भी इस बात को प्रमाणित करता है कि यह नागरिकता का प्रमाण पत्र नहीं है। इसके समर्थन में शपथ पत्र में बम्बई हाईकोर्ट के निर्णय स्टेट ऑफ महाराष्ट्र बनाम यूआईडीएआई (Criminal Petition No.3002 of 2002) का आश्रय लिया है कि आधार जन्मतिथि की प्रमाणिकता का सबूत नहीं है। शपथ पत्र में यह भी उल्लेख है कि स्वंय सुप्रीम कोर्ट अपने दिनांक 08.09.2025 के आदेश में जो बिहार एसआईआर की प्रक्रिया में पारित किया था या माना है कि उसका उपयोग केवल व्यक्ति पहिचान का परिचायक है।

एसआईआर के आधार पर जब मतदाता सूची प्रकाशित हो चुकी है तो स्पष्ट है, उससे सम्बन्धित विवाद अनुच्छेद 327 के अनुसार केवल चुनाव याचिका में ही उठाये जा सकते और यह निर्विद कानूनी व्यवहार है कि रिट याचिका के पेन्डिग होने का इस पर कोई असर नहीं है। सुप्रीम कोर्ट की खण्डपीठ ने केस कोलन जियम्मल (डी) एलआर बनाम रेवेन्यू डिवीजनल आफिसर व अन्य, 2025 लिव लॉ (एससी) 1108 में दिया है इसका प्रमाण है। इस केस में राजस्थान हाऊसिंग बोर्ड बनाम कृष्णा कुमारी 2005 (13) एससीसी 151 को समर्थन हेतु रेफर किया है।

दिनांक 26 नवम्बर 2025 की पेशी के समय बहस पर उपरोक्त कानूनी बिन्दुओं पर माननीय कोर्ट में विचार होगा। उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है सुप्रीम कोर्ट की खण्डपीठ यह करार दे सकती है कि मतदान का अधिकार केवल देश के नागरिक को ही है अन्य को नहीं तथा आधार केवल पहिचान का परिचायक है, किन्तु नागरिकता का प्रमाण नहीं है। नागरिकता तो संविधान के भाग-2 के प्रावधानों के अनुसार ही तय की जा सकती है। संसद द्वारा नागरिकता के अधिकार का विधि द्वारा ही विनियमन किया जा सकता है साथ ही चुनाव सम्पन्न होने के बाद चुनाव सम्बन्धित शिकायतों पर यानी मतदाता सूची की वैधता के सम्बन्ध में विवादों का निपटारा चुनाव याचिका द्वारा ही हो सकता है।

यह निर्विवाद सत्य है कि संविधान के तहत् गठित संस्थाओं को अपने कार्यक्षेत्र में कर्त्तव्य के निर्वाहन के हेतु सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न (Sovereign) अधिकार प्राप्त है। पार्लियामेण्ट, सुप्रीम कोर्ट को अपने कार्यक्षेत्र में काम करने का पूर्ण अधिकार है, वे कार्य में त्रुटियां कर सकते हैं, किन्तु उसे चुनौती नहीं दी जा सकती। सुप्रीम कोर्ट के संवैधानिक पीठ के कई निर्णय बाद में बडी बैंच ने त्रुटिपूर्ण करार किये हैं। वन शक्ति आदेश को बाद में एक्स पोस्ट फेक्टो ईसी की व्यवस्था फिर से लागू करने वाले दिनांक 18.11.2025 के सुप्रीम कोर्ट के फैसले ने इस विचारधारा को प्रमाणिकता प्रदान की है। हाँ यदि ये संस्थान संविधान की मर्यादा के विरूद्ध कार्य करती हैं तो वह अधिकार शून्य होने से अमान्य कहा जा सकता है। फिर चुनाव आयोग के एसआईआर पर सुनवाई करने के अधिकार पर प्रश्न क्यों कर उठाया जा सकता है? एसआईआर की प्रक्रिया मतदाता सूची से सम्बन्ध रखती है, और मत सूची के बाबत Soverign (सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न) अधिकार चुनाव अयोग का है।

चुनाव आयोग के गठन को लेकर एक याचिका सुप्रीम कोर्ट में पेश हो चुकी है, किन्तु यह विषय तो संविधान के संशोधन का है।

सत्यमेव जयते!

-अतिथि सम्पादक,
पानाचन्द जैन,
पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान हाई कोर्ट

देश का सबसे कड़ा धर्मांतरण विरोधी कानून : राजस्थान ने रखी सामाजिक सुरक्षा की नई मिसाल

विधि विरुद्ध धर्म संपरिवर्तन प्रतिषेध विधेयक-2025 न केवल कानूनी दृष्टि से मजबूत है, बल्कि सामाजिक और संवैधानिक स्तर पर भी यह महत्वपूर्ण मील का पत्थर बनकर उभरा है

अरुण चतुर्वेदी

वर्तमान राजस्थान सरकार ने एक ऐतिहासिक कदम उठाते हुए देश का सबसे कड़ा धर्मांतरण विरोधी कानून लागू किया है। विधि विरुद्ध धर्म संपरिवर्तन प्रतिषेध विधेयक-2025 न केवल कानूनी दृष्टि से मजबूत है, बल्कि सामाजिक और संवैधानिक स्तर पर भी यह एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर बनकर उभरा है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की सरकार ने दृढ़ता और स्पष्टता के साथ इसे आगे बढ़ाया है। इससे स्पष्ट है कि राजस्थान अब छल, लालच, दबाव या विदेशी फंडिंग के सहारे कमजोर तबकों का धर्म परिवर्तन कराने वाली गतिविधियों के प्रति अत्यंत सख्त है।

भारतीय संविधान ने हर नागरिक को अपनी आस्था का अधिकार दिया है, लेकिन यह अधिकार पूरी तरह निरंकुश नहीं है। यह सार्वजनिक व्यवस्था, नैतिकता और सामाजिक शांति के दायरे में ही मान्य है। इसी संवैधानिक मूल भावना के अनुरूप राजस्थान का नया कानून तैयार किया गया है।इसकी शक्ति और कठोरता इसे सभी राज्यों से अलग बनाती है।

सबसे बड़ी बात यह है कि इस कानून में सजा का प्रावधान देश में सबसे अधिक कठोर है। जबरन या धोखे से धर्मांतरण कराने पर सीधे 7 से 14 वर्ष की सजा तय की गई है। यदि नाबालिग, महिला, दिव्यांग अथवा अनुसूचित जाति-जनजाति के व्यक्ति को निशाना बनाया गया है तो सजा 20 वर्ष तक जा सकती है। सामूहिक धर्मांतरण के मामलों में तो आजीवन कारावास का प्रावधान देश में पहली बार किया गया है। विदेशी फंडिंग का दुरुपयोग करने वालों की संपत्ति जब्त की जा सकेगी और सजा भी अत्यंत कठोर होगी। विवाह के बहाने धर्मांतरण करने वालों के खिलाफ न्यायालय ऐसी शादी को अमान्य घोषित कर सकेगा। इन प्रावधानों ने यह विधेयक वास्तव में देश का सबसे प्रभावशाली और सबसे कठोर धर्मांतरण रोकने वाला कानून बना दिया है।

राजस्थान के संवेदनशील और जनजातीय क्षेत्रों में लंबे समय से धर्मांतरण की शिकायतें आती रही हैं। बांसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर, प्रतापगढ़ और अलवर जैसे जिलों में प्रलोभन, आर्थिक सहायता या सेवा की आड़ में जनजातीय समुदायों को प्रभावित करने के प्रयास कई बार उजागर हुए। समाज की यही पीड़ा आज एक मजबूत कानून के रूप में सामने आई है। सरकार ने स्पष्ट संदेश दिया है कि सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक अस्मिता के साथ खिलवाड़ को अब किसी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इस कानून की खासियत यह है कि यह केवल सख्ती के सहारे काम नहीं करता, बल्कि पारदर्शिता को भी पूरा महत्व देता है। यदि कोई व्यक्ति सचमुच अपनी इच्छा से धर्म बदलना चाहता है, तो उसे 90 दिन पहले जिला मजिस्ट्रेट को सूचना देनी होगी। धर्मगुरु को भी 60 दिन पहले नोटिस देना अनिवार्य है।

पूरी प्रक्रिया सार्वजनिक होगी और यदि कोई आपत्ति आती है, तो उसका निस्तारण होने के बाद ही धर्म परिवर्तन मान्य माना जाएगा। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि धर्मांतरण स्वतंत्र निर्णय से हो, न कि किसी छिपे हुए दबाव या प्रलोभन की वजह से। इसी के साथ घर वापसी को इस कानून के दायरे से बाहर रखा गया है, ताकि कोई व्यक्ति अपनी पुरानी आस्था में सुगमता से लौट सके। विधेयक को लेकर कुछ विरोधी दल इसे व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर अंकुश बताते हैं। लेकिन यह तर्क तब कमजोर पड़ जाता है, जब हम देखते हैं कि कानून का उद्देश्य स्वतंत्रता को सीमित करना नहीं, बल्कि उसे सुरक्षित रखना है। यदि धर्मांतरण वास्तव में स्वैच्छिक है, तो कानून में निर्धारित प्रक्रिया उसका सम्मान करती है और उसे वैधता प्रदान करती है। लेकिन यदि किसी की स्वतंत्रता खरीदी, दबाई या डराई जा रही है, तो उसे रोकना राज्य का संवैधानिक दायित्व है।

देश के कई राज्यों में धर्मांतरण विरोधी कानून पहले से लागू हैं, लेकिन राजस्थान का यह कानून अपनी कठोरता, स्पष्टता और व्यापकता के कारण उनसे कहीं आगे है। यहां सामूहिक धर्मांतरण पर आजीवन कारावास का प्रावधान, विदेशी फंडिंग के दुरुपयोग पर कड़ी सजा, विवाह-आधारित धर्मांतरण की वैधता की जांच आदि इसे देश का सबसे शक्तिशाली कानून बनाते हैं। यह स्पष्ट है कि राजस्थान ने केवल कानून नहीं बनाया, बल्कि एक राष्ट्रव्यापी मानक स्थापित किया है। इस कानून से सामाजिक और प्रशासनिक स्तर पर कई सकारात्मक परिणाम दिखाई देंगे। कमजोर समुदाय अब भय और लालच के दबाव में आने से बचेंगे। विदेशी फंडिंग का दुरुपयोग रोका जा सकेगा। जनजातीय क्षेत्रों में धार्मिक ध्रुवीकरण की कोशिशें विफल होंगी। समाज में कृत्रिम विभाजन कम होंगे और सौहार्द बढ़ेगा। साथ ही, स्वैच्छिक धर्म परिवर्तन को अब एक स्पष्ट, सुरक्षित और निष्पक्ष प्रक्रिया मिलेगी।

निस्संदेह, विधि विरुद्ध धर्म संपरिवर्तन प्रतिषेध विधेयक-2025 राजस्थान की सामाजिक दृढ़ता, राजनीतिक इच्छाशक्ति और संवैधानिक संतुलन का अद्भुत उदाहरण है। यह देशवासियों को यह विश्वास दिलाता है कि हमारी सांस्कृतिक जड़ों, हमारी एकता और कमजोर वर्गों की सुरक्षा के लिए राज्य पूरी जिम्मेदारी निभा रहा है।

राजस्थान ने इस कानून के माध्यम से यह साबित कर दिया है कि लोकतंत्र में स्वतंत्रता उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी उसकी रक्षा। और जब बात समाज की बुनियाद, उसकी आस्था और उसकी अस्मिता की हो, तब राज्य का हस्तक्षेप केवल उचित ही नहीं, बल्कि अनिवार्य हो जाता है। यह कानून आने वाले वर्षों में राजस्थान ही नहीं, पूरे देश की सामाजिक संरचना को एक नए संतुलन की ओर ले जाएगा। यही इसकी सबसे बड़ी ऐतिहासिक उपलब्धि है।

अरुण चतुर्वेदी
अध्यक्ष, राज्य वित्त आयोग

राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं पुरातत्व के ज्ञाता ''डॉ. एल.पी. टैसिटोरी''

डॉ. दुलीचंद मीना

इटली के फ्लोरेंस विश्वविद्यालय में लुई द इंडियन के नाम से प्रसिद्ध एल पी टैसिटोरी राजस्थानी भाषा के महत्त्व को स्वीकार करने वाले पहले विदेशी विद्वान थे जिन्होंने राजस्थानी भाषा की मुक्त कंठों से इन शब्दों मे प्रशंसा की:-

''मनैं जित्तो प्रेम म्हारी मातभासा इटालियन सूं है, उण सूं बेसी राजस्थानी सूं है,
कारण इण में बळ है, तेज है, ओज है, मिठास है, अर आ बड परबार भासा है।''

राजस्थान के इतिहासकारों में जो स्थान कर्नल टॉड का है, वही स्थान राजस्थान के साहित्यकारों में डॉ.लुइजि पियो तैस्सितोरी का है। डॉ. तैस्सितोरी का जन्म 13 दिसम्बर, 1887 को उदीने (इटली) में हुआ। उदीने में अपनी हाईस्कूल की पढाई पूरी करने के बाद तैस्सितोरी ने फ्लोरेंस विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया, जहाँ उन्होंने भाषा विज्ञानी ग्राजियाडियो इसिया एसकोली से प्रभावित होकर संस्कृत पाठ्यक्रम में दाखिला लिया तथा संस्कृत के विद्वान प्रोफेसर पाओलो एमीलियो पावोलिनी के निर्देशन में ''तुलसीदास की रामचरितमानस एवं वाल्मीकि रामायण'' का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जिस पर उन्हें पीएचडी की उपाधि मिली। पहले यह शोध-प्रबंध इतालवी भाषा में तथा बाद में अंग्रेजी में 'इण्डियन एंटीक्वेरी' के दो भागों में प्रकाशित हुआ। प्राच्य भाषाओं के महान विद्वान डॉ.ग्रियर्सन डॉ.तैस्सितोरी की प्रतिभा से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने भारत सरकार को भारतीय रियासतों के मध्यकालीन इतिहास तथा वीरगाथा काव्य के शोध हेतु डॉ.तैस्सितोरी की सेवाएं प्राप्त करने की सिफारिश की। डॉ.ग्रियर्सन की सिफारिश पर ऐसियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, कलकत्ता द्वारा डॉ.तैस्सितोरी को चारणी एवं ऐतिहासिक शोध सर्वेक्षण कार्य का अधीक्षक के पद पर नियुक्ति पत्र जारी किया।

यूरोप में जब प्रथम विश्वयुद्ध के बादल मंडरा रहे थे तब डॉ.तैस्सितोरी 12 मार्च, 1914 को नेपल्स से यूरोपियन जलयान 'रोमां' से रवाना होकर बम्बई होते हुए 11 अप्रेल, 1914 को कलकत्ता पहुँचे। वहाँ उन्होंने एशियाटिक सोसायटी को पत्र लिखकर राजपूताना में जाकर राजस्थानी भाषा का अध्ययन करने का आवेदन किया गया जिसे स्वीकार कर लिया गया। बीकानेर के महाराजा श्री गंगासिंह के आमंत्रण पर तेस्सितोरी जोधपुर होते हुए बीकानेर पहुँचे। वहाँ उन्हें पहले 04 महीने तथा बाद में एक वर्ष के लिए बीकानेर राज्य में रखा गया। महाराजा गंगा सिंह ने उन्हें दरबार की लाईब्रेरी के काव्य व ऐतिहासिक सामग्री का अध्ययन कर भविष्य के लिए कार्ययोजना बनाने का काम सौंपा गया। राजस्थान व राजस्थानी भाषा के प्रति तैस्सितोरी के रग-रग में प्रेम भरा हुआ था। उन्होंने डिंगल साहित्य की अपूर्व सेवा की।

उन्होंने डिंगल साहित्य की अमूल्य निधि 'वचनिका राठौड़ रतनसिंह जी री महेस दासोत खिडिया जगारी कही', 'बेलि क्रिसन रुकमणी री', 'छन्द राव जैतसी रो' का संपादन किया और एशियाटिक सोसायटी से उन्हें प्रकाशित करवाया। राजस्थानी भाषा की ढूंढाडी बोली के ग्रंथ कर कुंडरी कथा का इटालियन भाषा में अनुवाद कर संपादन किया। श्री तैस्सितोरी ने अपभ्रंश, गुजराती व राजस्थानी भाषा का सांगोपांग अध्ययन किया जिसके आधार पर 'प्राचीन पश्चिमी राजस्थान का व्याकरण' शीर्षक से एक शोध निबंध लिखा। जिसकी प्रशंसा में प्रसिद्ध भाषाविद् डॉ.सुनीति कुमार चटर्जी ने लिखा है कि, पुरानी राजस्थानी, उच्चारण, रीति, रुपतत्व और वाक्य रीति के पूरे विचार के साथ तैस्सितोरी की आलोचना ऐसी महत्वपूर्ण है कि इसे मारवाड़ी तथा भाषा-तत्व की बुनियाद यदि कहा जायें तो अत्युक्ति न होगी। डॉ नामवर सिंह ने इस निबंध का हिंदी में अनुवाद कर हिन्दी पाठकों के लिए सुरमय बनाया हैं।

डॉ.तैस्सितोरी भाषा शास्त्री के साथ-साथ अपनी पुरातात्विक पारखी दृष्टि से ऐतिहासिक एवं पुरातत्वविद भी साबित हुए हैं। उन्होंने अपने अन्वेषण मे मृण मूतियाँ, प्रस्तर प्रतिमाओं, शिलालेखों व मुद्राओं का संठाह किया जो बीकानेर के राज्य संठाहालय में संग्रहित है। उन्होंने पुरातात्विक अवशेष रंगमहल, मालिखेडी, बडोपल, कालीबंगा व पीलिबंगा आदि गांवों में खुदाई करके एकत्र किए। इनसे हडप्पा सभ्यता के व्यापक फैलाव की झलक मिलती है। उन्हें पल्लू की खुदाई में सरस्वती की सोलंकी शैली की दो जैन प्रतिमाएं प्राप्त हुई। दोनों ही भारतीय शिल्पकला की दृष्टि से अद्वितीय है। प्रसिद्ध जर्मन विद्वान हर्मन गोएट्ज ने उन्हें 'मध्ययुगीन भारतीय शैली की सर्वोत्तम कृति' माना है।

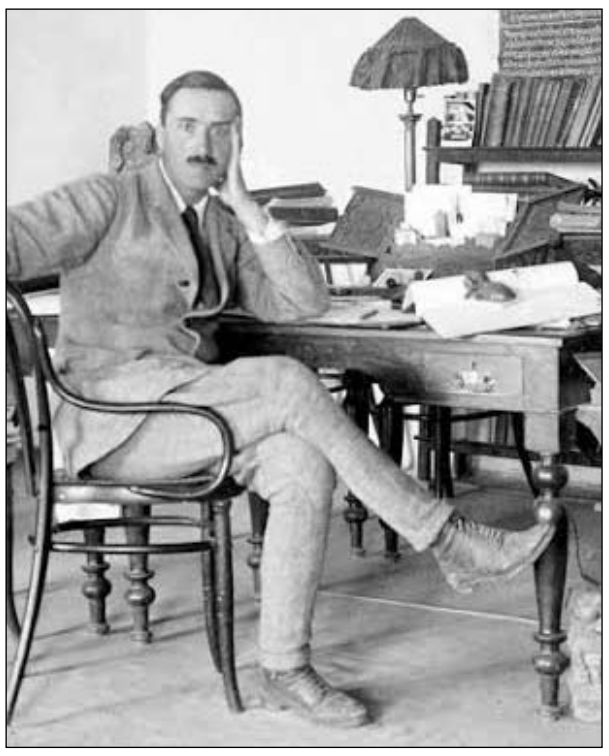

डॉ. टैसिटोरी अपने कार्यालय में, (फाइल फोटो)।

भारत आने से पूर्व डॉ.तैस्सितोरी ने जैनाचार्य श्री विजय धर्म सूरी जी से संपर्क स्थापित कर लिया था। अपने गुरू को टैसिटोरी ने लिखा कि, ''मैं चाहता हूं कि मैं अपने आपको आपके अर्पण कर दूं।'' जैनाचार्य श्री विजय धर्म सूरी जी के प्रभाव स्वरूप वे जैन धर्म की ओर उन्मुख हुए। जैन धर्म के सिद्धांतो के प्रभाव स्वरूप उन्होंने मांसाहारी से शाकाहारी भोजन ग्रहण करना शुरू किया तथा उन्होंने एक पत्र मे लिखा ''इटली में जैन धर्म के बजाय बौद्ध धर्म अधिक लोकप्रिय है, मैं भविष्य में जैन धर्म एवं दर्शन पर एक किताब लिखना चाहता हूँ जिससे यूरोप के लोग जैन धर्म को बेहतर ढंग से जान सके।'' उन्होंने 'उपदेश माला', 'भववैराग्यशतक', 'इन्द्रिय पराजयशतक', 'नासिकेतकी कथा' व 'पुण्याश्रावक कथा कोष' का इटालियन भाषा में अनुवाद किया। बीकानेर के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री अगरचंद नाहटा के साहित्य संग्रह में डॉ.तैस्सितोरी के अनेक ग्रंथ सुरक्षित रहे हैं जिन्होंने उन्हें अपने भांजे श्री हजारीमल बांठिया के माध्यम से राजस्थानी साहित्य को समृद्ध करने का कार्य किया है। डॉ.तैस्सितोरी ने शैव धर्म के कनफटा नाथ सम्प्रदाय से संबंधित धर्म, दर्शन एवं साहित्य का भी अध्ययन किया। सर ग्रियर्सन ने उन्हें कानफटा नाथ सम्प्रदाय से संबंधित गोरखनाथबोध नामक पुस्तक का संपादन करने के लिए भी नियुक्त किया।

सन् 1919 में तैस्सितोरी को अपनी माँ की बीमारी की खबर मिली तो 17 अप्रेल, 1919 को जलयान द्वारा बम्बई से इटली के लिए रवाना हो गए लेकिन उनके वहाँ पहुँचने से पूर्व ही उनकी माता का देहान्त हो गया था। अब उनका इटली में रहना निरर्थक हो गया और जब माँ के निधन का वियोग कम हुआ तो पुन: राजपूताना के लिए रवाना हो गए तथा 05 नवम्बर, 1919 को बीकानेर पहुँचे। लम्बी और थका देने वाली यात्रा के दौरान तैस्सितोरी को निमोनिया हो गया और उनका स्वास्थ्य निरंतर गिरता चला गया। बीकानेर के राजस्व मंत्री श्री जी॰डी.रूडकिन अंत समय तक उनकी देखभाल करते रहे लेकिन अन्तत: मात्र 32 वर्ष की उम्र में 22 नवम्बर, 1919 को डॉ.तैस्सितोरी का अपने सपनों और कल्पना की भूमि राजपूताना के बीकानेर में निधन हो गया।

-डॉ. दुलीचंद मीना,
आर.ए.एस.

राशिफल शुक्रवार 21 नवम्बर, 2025

पंडित अनिल शर्मा

मार्गशीर्ष मास, कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2082, अनुराधा नक्षत्र दिन 1:56 तक, अतिगंड योग दिन 10:43 तक, बव करण दिन 2:48 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-वृश्चिक, बुध-वृश्चिक, गुरू-कर्क, शुक्र-तुला, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग दिन 1:56 तक है। आज चन्द्र दर्शन, उत्तर श्रृंगोन्नति, रूद्र व्रत (पीडिया व्रत) है। आज भैरव षटरात्र उत्सव आरम्भ होगा। भगवान पुष्प दंत जन्म और तप कल्याणक दिवस है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 8:14 तक, लाभ-अमृत 8:14 से 10:53 तक, शुभ 12:13 से 1:32 तक, चर 4:11 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 6:55, सूर्यास्त 5:30 तक

मेष
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

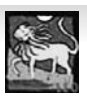

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

धनु
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है।

वृष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मकर
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

मिथुन
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

तुला
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कर्क
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्य योजना बनेगी।

वृश्चिक
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सड़क, पीने के पानी और सिवर लाइन के लिए दिया धरना

बीकानेर(निसं)। स्थानीय निकाय प्रकोष्ठ के वार्ड नम्बर 21 के अध्यक्ष बिलाल अहमद ख़िलजी के नेतृत्व में वार्ड नंबर 21 की जन समस्याओं को लेकर धरना दिया गया स्थानीय निकाय प्रकोष्ठ के शहर जिला अध्यक्ष हसन अली गोरी ने बताया कि धरने में वार्ड नंबर 21 बंगला नगर में सड़क, सिवर लाइन और पीने के पानी की पाइपलाइन का जुडाव नहीं है और साफ सफाई आदि की समस्याओं के लिये जिला कलेक्टर को ज्ञापन दिया गया। आज के धरना प्रदर्शन में पूर्व महापौर मकसूद अहमद, नितिन वत्सस, राहुल जादू संगत, इशाक अली एडवोकेट, उपेन्द् श्रीमाली, हरिकिशन जाट,इमरान सैयद,अयूब अली, चंद्रशेखर चांवरिया, कामराज गोयल, शाह,अब्दुल हमीद ग़ोरी,सैय्यद वली मो,खेरदिन राठौड़,सिकन्दर राठौड़, शबनम बानो, इस्माइल ख़िलजी, रोहित वाल्मीकि, भागीरथ सुथार, अब्दुल लतीफ साइ, आमीन साइ, कालूराम नायक, एडवोकेट मकबूल खान भोमाराम नायक मनोज नायक मनीष जाट, रोहित रविंद्र वाल्मीकि बुलाकी सुथार, मोहम्मद इस्लाम खिलजी, नंदलाल नायक, नरपत सिंह राजवी, सैयद सद्दाम हुसैन, सद्दाम हुसैन गोरी,असद अली गोरी, जबरूद्दीन गौरी, बरकत खिलजी, मुस्तफा खिलजी, अशरफ साईं, इमरान एडी, आदि मौजूद रहे।

विधि विद्यार्थी समाज के प्रत्येक वर्ग को विधि के प्रति जागरूक करने हेतु कार्य करें: राजवी

■ जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

बीकानेर, (निसं)। ब.ज.सि. रामपुरिया जैन विधि महाविद्यालय सभागार में आज महाविद्यालय की रासेयो की दोनों ईकाइयों एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के संयुक्त तत्वाधान में एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य रालसा द्वारा किए जा रहे नवाचार न्याय आपके द्वार–लोक उपयोगिता से विधि विद्यार्थियों को अवगत करवाते हुए समाज में प्रसारित करना था। जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्रीमती मांडवी राजवी थे।

श्रीमती राजवी ने स्वयंसेवकों तथा विद्यार्थियों से आव्हान किया कि वे विधि विद्यार्थी होने के नाते समाज के प्रत्येक वर्ग को विधि के प्रति जागरूक करने हेतु कार्य करें और इस हेतु रालसा का यह नवाचार बहुत उपयोगी साबित हो सकता है। उन्होंने लोक अदालत के जरिए होने वाली कार्यवाही के बारे में विद्यार्थियों को अवगत करवाया। श्रीमती राजवी ने विद्यार्थियों को बताया कि किस प्रकार लोक अदालत के माध्यम से आम जन को सस्ता, सुलभ एवं त्वरित न्याय मिल सकता है। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि आज के समय में पढे लिखे लोग भी विधिक प्रावधानों की जानकारी के अभाव में अपने अधिकारों से वंचित हो रहे है। उन्होंने विद्यार्थियों से आ ान किया कि विधि विद्यार्थी होने के नाते सभी स्वयंसेवकों का समाज के प्रति यह दायित्व है कि वे इस प्रकार के कार्यक्रमों तथा प्रावधानों के प्रति पहले स्वयं सजग होकर और समाज में प्रेरणा प्रदान करने कार्य करे। इससे पूर्व महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अनन्त जोशी एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्रीमती मांडवी राजवी ने माँ सरस्वती के चित्र पर पुष्पांजली के द्वारा कार्यक्रम की शुरूआत की।

इसके पश्चात अपने स्वागतीय उद्बोधन में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. जोशी ने जिला विधिक सेवा प्राधिकरण तथा रालसा का धन्यवाद दिया तथा अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन से विधि विद्यार्थियों को प्रेरणा मिलती है तथा वे आगे समाज में जाकर पीडित तथा वंचित व्यक्तियों को अपने विधिक तथा संवैधानिक अधिकारों के बारे में जागरूक कर सकते है।

कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने अतिथियों से प्रश्नों के माध्यम से अपनी जिज्ञासाओं का समाधान किया। कार्यक्रम के अन्त में महाविद्यालय परिवार द्वारा स्मृति चिन्ह के रूप में भारतीय संविधान की प्रस्तावना की प्रति अतिथियों को प्रदान की।कार्यक्रम में महाविद्यालय के व्याख्याता डॉ. बालमुकुन्द व्यास, डॉ. प्रीति कोचर, डॉ. पीयूष किराडू, चेतना ओझा, राजश्री सुथार, राकेश रंगा, रासेयो स्वयंसेवक तथा महाविद्यालय के विद्यार्थी उपस्थित थे।कार्यक्रम का संचालन महाविद्यालय की व्याख्याता श्रीमती सुनीता लूणिया ने किया तथा श्रीमती चेतना ओझा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

सार-समाचार

स्वयंसेवकों को राष्ट्रीय एकता की शपथ दिलाई

बीकानेर(निसं)। राजकीय डूंगर महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना की स्थानीय इकाई द्वारा आज अल्पसंख्यक कल्याण दिवस मनाया गया, और स्वयंसेवकों को राष्ट्रीय एकता की शपथ दिलाई। कार्यक्रम में जिला समन्वयक डॉ घनश्याम बीठू , कार्यक्रम अधिकारी इकाई द्वितीय डॉ प्रकाश गर्ग, इकाई चतुर्थ डॉ रविकांत व्यास , इकाई प्रथम डॉ पूजा कस्वां आदि उपस्थित रहे। डॉ रविकांत व्यास ने सभी आगंतुकों का स्वागत किया तथा कार्यक्रम का संचालन किया। डॉ घनश्याम बीठू ने स्वयंसेवकों को राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी प्रदान की ।डॉ प्रकाश गर्ग ने स्वयंसेवकों को राष्ट्रीय एकता की भावना को बनाए रखने हेतु प्रेरित किया। डॉ पूजा कस्वां ने बालिकाओं के लिए विशेषता चलने वाली जनकल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी दी तथा सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

बाल वाहिनियों की आकस्मिक चैकिंग की

बीकानेर(निसं)। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव तथा अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश मांडवी राजवी ने गुरुवार को गंगाशहर रोड पर बाल वाहिनियों को रुकवाकर वाहनों की आकस्मिक जांच की। बाल वाहिनियों में स्कूली बच्चों की सुरक्षा से जुड़े पुख्ता इंतजाम नहीं मिले। ज्यादातर वाहनों में क्षमता से अधिक बच्चों को बिठाया हुआ पाया गया, जिससे किसी हादसे की संभावना रहती है। ज्यादातर बाल वाहिनियां नियम विरू०द्ध चलती पाई गई। गेट के लॉक टूटे हुए थे। चालकों के पास ड्राईवर के वैध लाईसेंस व पहचान दस्तावेज पूर्ण नहीं थे। कईं वाहनों पर नम्बर अंकित नहीं थे। विभिन्न अधिकारियों द्वारा वाहनों को सीज कर चालान काटे। मौके पर मिली एक स्कूल बस को परिवहन विभाग द्वारा चैक किया गया तो उसमें कई कमियां पाई गई। निरीक्षण के दौरान, संजीव चौधरी, क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी, क्षेत्रीय परिवहन पुलिस व ट्रेफिक पुलिस स्टाफ इत्यादि उपस्थित रहे।

घड़साना के गांव फुलेवाला में बीएलओ से मारपीट

घड़साना(निसं)। यहा फुलेवाला गांव में शिक्षा विभाग के बीएलओ डूंगरराम के साथ मारपीट की घटना सामने आई है। महेंद्र गोस्वामी नामक व्यक्ति स्कूल परिसर में पहुंचा और डूंगरराम के साथ गाली–गलौज करने लगा। बात बढ़ने पर उसने हाथापाई भी की। स्कूल में मौजूद अन्य लोगों ने तुरंत बीच–बचाव कर स्थिति को संभाला। डूंगरराम ने बताया कि यह विवाद स्कूल से जुड़ी पुरानी रंजिश के कारण हुआ है। घटना की सूचना तत्काल घड़साना पुलिस को दी गई है। इस पूरे मामले को लेकर फुलेवाला गांव के लोगों में रोष है और वे प्रशासन से सख्त कार्रवाई की मांग कर रहे हैं।

नापासर थाना अधिकारी लक्ष्मण सिंह सुथार को विदाई

नापासर(निसं)। यहा थाना अधिकारी लक्ष्मण सिंह सुथार को रात सुथार समाज द्वारा विदाई दी गई। यह समारोह देशनोक रोड स्थित श्री विश्वकर्मा मंदिर में आयोजित किया गया। उन्हें शॉल, साफा और स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। समाज के गणमान्य नागरिकों ने उनके उत्कृष्ट और जनसमर्पित कार्यकाल की सराहना की। इस अवसर पर समाज के वरिष्ठजन मालचंद छडिया, सीताराम सुथार, कालूराम सुथार, सामाजिक कार्यकर्ता दमालाल झवर, मोहन सुथार, रामलाल सुथार, मेघराज सुथार, भंवरलाल माडण, घनश्याम सुथार, मुकेश सुथार और दुलीचंद सुथार उपस्थित रहे। थाना अधिकारी लक्ष्मण सिंह सुथार ने नापासर की जनता से मिले सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि नापासर के लोगों का साथ उन्हें हमेशा याद रहेगा। सुथार ने बताया कि उनकी नई पोस्टिंग व्यास कॉलोनी में हुई है। नापासर नगरपालिका के पूर्व चेयरमैन प्रतिनिधि रामरतन सुथार ने लक्ष्मण सुथार को कर्तव्यनिष्ठ और ईमानदार अधिकारी बताया। उन्होंने कहा कि सुथार ने नापासर में कानून–व्यवस्था मजबूत करने, महिला सुरक्षा और यातायात नियमों के प्रति जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण

उत्तर पश्चिम रेलवे

खुली ई–निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति के लिए एवं उनकी ओर से मुख्य कारखाना प्रबंधक, कैरिज एवं वैगन कारखाना, उ. प. रेलवे, बीकानेर द्वारा खुली ई–निविदा सूचना संख्या : 07R-MECH-BKNW-IMTE-25 निम्नलिखित कार्य के लिए ई–निविदा आमंत्रित की जाती है । **1.कार्य का नाम** : कैरिज एवं वैगन कारखाना, उ.प.रेलवे, बीकानेर में मास्टर/फील्ड आईएमटीई के कैलिब्रेशन का कार्य। **2 कार्य की अनुमानित लागत** : रु. 15,28,526.36 (जीएसटी सहित) **3.बयाना राशि** : रू.30,600.00 **4. ई–निविदा प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि एवं खुलने का समय व दिनांक** : 09.12.2025 को 14:30 बजे तक। ई –निविदा उसी दिन 15:00 बजे खोली जाएगी। **5. वेबसाइट विवरण जहाँ से ई–निविदा की पूर्ण जानकारी देखी जा सकती है** : www.ireps.gov.in

1492-DR/25

हमें /NWRailways NWRailways_पर फॉलो करें

नाम परिवर्तन

मनके राम प्रकाश बिश्नोई पुत्र रतिराम ज्याणी, उम्र 38वर्ष निवासी श्री विश्लेश्वर स्कूल वाली गली राजकीय विद्यालय के पास पंचायती बास रासीसर, नोखा, बीकानेर का हूँ:–

1.मेरे पुत्र आदित्या बिश्नोई (जन्मतिथि:03.02.2011)वर्तमान में फ्लोरिश ग्लोबल स्कूल, विराट नगर, उदासर रोड़, बीकानेर में कक्षा 8 का छात्र है।

2.मेरे पुत्र आदित्या बिश्नोई (Aaditya Bishnoi) का नाम विद्यालय रिकार्ड में आदित्य (Aditya) अंकित है व पिता का नाम रामप्रकाश एवं माता का नाम संतोष अंकित है, परन्तु सही नाम आधार कार्ड अनुसार आदित्या बिश्नोई (Aaditya Bishnoi) पिता नाम:रामप्रकाश बिश्नोई (Ram prakash Bishnoi)माता का नाम: संतोष ज्याणी (Santosh Jyani)है, सूचित रहे।

रामप्रकाश बिश्नोई

श्रीविजयनगर में रेहड़ी वालों के काटे चालान

श्रीविजयनगर(निसं)। शहर में यातायात जाम की समस्या से निपटने के लिए पुलिस और स्थानीय प्रशासन ने संयुक्त अभियान शुरू किया है। इस अभियान के तहत अवैध पार्किंग और सड़क पर अतिक्रमण करने वाले रेहड़ी–खोखा संचालकों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जा रही है। शहर में स्कूलों की छुट्टी के समय और बाजारों में भीड़भाड़ के कारण अक्सर यातायात बाधित होता है। अव्यवस्थित पार्किंग और सड़क पर लगी रेहडि़यों के कारण स्कूली बच्चों, महिलाओं और वरिष्ठ नागरिकों को आवागमन में विशेष परेशानी का सामना करना पड़ता था। थाना अधिकारी के निर्देश पर पुलिस टीम ने मुख्य बाजार, सब्जी मंडी, इंदिरा मार्केट और संहिता रोड जैसे भीड़भाड़ वाले इलाकों में विशेष चेकिंग अभियान चलाया। इस दौरान अवैध रूप से वाहन पार्क करने वाले आधा दर्जन दोपहिया और चौपहिया वाहन चालकों के चालान काटे गए।

850 महिलाओं ने एक-साथ घूमर कर बनाया एशिया-रिकॉर्ड

■ 18 मिनट तक एक ही ट्रैक पर किया नृत्य, भाजपा शहर-अध्यक्ष के भी थिरके कदम

बीकानेर(निसं)। डॉ. करणी सिंह स्टेडियम में बुधवार देर रात एक साथ साढ़े आठ सौ महिलाओं ने घूमर नृत्य किया। प्रदेश के सभी सात संभाग मुख्यालयों पर हुए इस अनूठे आयोजन ने एशिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड भी बनाया है।

बीकानेर में आयोजित संभाग स्तरीय घूमर महोत्सव में 850 महिला प्रतिभागियों ने 18 मिनट के एक ही ट्रैक पर एक साथ घूमर किया। लय, ताल और एकरूपता से भरा यह प्रदर्शन राजस्थान की सांस्कृतिक गरिमा का अनूठा प्रदर्शन रहा। आयोजकों के अनुसार प्रतिभागियों की संख्या और अधिक हो सकती थी, लेकिन गुरुवार से शुरू हो रही हाफ–इ्यरली परीक्षाओं के कारण स्कूली बच्चों ने हिस्सा नहीं लिया। बीकानेर में घूमर नृत्य में प्रतिभागियों की संख्या बढ़ सकती थी लेकिन गुरुवार से हाफ इ्यरली एग्जाम शुरू होने के कारण स्कूली बच्चों ने रुचि नहीं ली।

प्रदेश के सभी सातों संभाग मुख्यालयों पर हुए इस घूमर आयोजन ने एक साथ सबसे ज्यादा प्रतिभागियों के प्रदर्शन का एशिया रिकॉर्ड बनाया। बीकानेर का आयोजन भी इसी श्रृंखला का हिस्सा रहा जिसने रिकॉर्ड में महत्वपूर्ण योगदान दिया। कार्यक्रम की शुरुआत किशनगढ़ से आए डांस ग्रुप की प्रस्तुति से हुई। घूमर महोत्सव की कोरियोग्राफर मानसी सिंह पंवार ने 'सुंदर गौरी रे' लोकगीत पर भव्य नृत्य प्रस्तुत किया। वर्षा सोनी ने भवई नृत्य की प्रस्तुति दी जिसने दर्शकों का मन मोह लिया। खाजूवाला विधायक डॉ. विश्वनाथ, संभागीय आयुक्त विश्राम मीणा, शहर भाजपा अध्यक्ष सुमन छाजेड़ और देहात भाजपा अध्यक्ष श्याम पंचारिया ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। महोत्सव में कुल 153 एकल प्रतिभागियों और 33 समूहों ने हिस्सा लिया। स्टेडियम में बीकानेरवासी, विद्यार्थी और बड़ी संख्या में महिलाएं व युवतियां मौजूद रहीं। पूरा स्टेडियम घूमर की लय में झूमता दिखाई दिया। मंच संचालन ज्योति रंगा, गोपाल जोशी, मोनिका गौड़ और नीतू आचार्य ने संभाला।

28 दिसंबर को रवाना होगी वैष्णो देवी यात्रा

घड़साना। जय मां वैष्णो देवी चैरिटेबल ट्रस्ट की 10वीं यात्रा 28 दिसंबर 2025 को घड़साना से वैष्णो देवी (कटरा) के लिए रवाना होगी। इस संबंध में हाल ही में बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें यात्रा की तैयारियों पर चर्चा हुई। ट्रस्ट के अध्यक्ष मुकेश सोनी ने बताया कि यात्रा के लिए प्रति सीट किराया 3500 रुपए निर्धारित किया गया है। यात्रा के दिन 28 दिसंबर को दोपहर 12 बजे मुख्य बाजार से एक शोभायात्रा निकाली जाएगी। इसके बाद बस वैष्णो देवी के लिए प्रस्थान करेगी।

बैठक में ट्रस्ट परिवार के सभी सदस्य मौजूद रहे। इसमें यात्रा से जुड़ी सभी व्यवस्थाओं पर विस्तार से चर्चा की गई। अध्यक्ष मुकेश सोनी ने सभी सदस्यों से यात्रा को सफल बनाने में सहयोग करने की अपील की।

दुधारू पशुओं में खुरपका-मुंहपका रोग फैल रहा

लूणकरणसर(निसं)। यहा तहसील में दुधारू पशुओं में खुरपका–मुंहपका रोग तेजी से फैल रहा है। यह सूक्ष्म विषाणु (वायरस) जनित बीमारी गाय, भैंस, भेड़ और ऊंट जैसे पशुओं को अपनी चपेट में ले रही है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में पशुधन के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया है। पशुपालन विभाग ने इस बीमारी के प्रसार को रोकने के लिए गांवों में टीकाकरण अभियान शुरू कर दिया है। विभाग के अनुसार, 38 ग्राम पंचायतों में चलाए गए इस अभियान के तहत 62,700 से अधिक पशुओं का टीकाकरण किया जा चुका है। हालांकि, जमीनी स्तर पर अभी और अधिक प्रयास की आवश्यकता बताई जा रही है। कार्यवाहक ब्लॉक पशु चिकित्साधिकारी लखन पाल झाझडिया ने बताया कि लूणकरणसर क्षेत्र में इस बीमारी का प्रकोप स्थानीय स्तर पर अधिक नहीं है। उनके अनुसार, यह रोग मुख्य रूप से पंजाब–हरियाणा जैसे बाहरी राज्यों से आने वाले पशुओं में पाया जा रहा है। पशुपालकों की सूचना पर विभाग द्वारा तत्काल टीकाकरण किया जा रहा है।

कृषि अनुसंधान केंद्र के बाहर स्कूली बच्चों का प्रदर्शन

श्रीगंगानगर(निसं)। यहा 1–ई छोटी स्थित सतगुरु कॉलोनी के 150 स्कूली बच्चे अर्धवार्षिक परीक्षा देने कृषि अनुसंधान केंद्र पहुंचे तो केंद्र के अधिकारियों ने गेट को ताला जड़ दिया। जिसके बाद आधे बच्चे अंदर रह गए और आधे बाहर सड़क पर खड़े रोते रहे। बच्चों की परीक्षा नहीं हो पाई।

गुस्साए ग्रामीणों और जनप्रतिनिधियों ने केंद्र के बाहर धरना शुरू कर दिया। हंगामा बढ़ता देख जिला प्रशासन और शिक्षा विभाग के अधिकारी मौके पर पहुंचे। अधिकारियों ने आनन–फानन में 7 दिन की ऑप्शनल व्यवस्था कर दी। जिसके बाद अब ये बच्चे पुलिस लाइन में पढ़ेंगे और आने–जाने के लिए तीन बसें लगाई गई हैं। दरअसल, 1 ई छोटी की सतगुरु कॉलोनी में स्थित राजकीय उच्च प्राथमिक स्कूल का भवन जर्जर हो चुका है और कभी भी ढह सकता है।

भेड़ एवं बकरी पालन में वैज्ञानिक प्रबंधन के जरिए रोजगार देने वाले बनें किसान-पशुपालक: डॉ. गर्ग

■ वैज्ञानिक भेड़ एवं बकरी पालन के माध्यम से उद्यमिता विकास प्रशिक्षण आयोजित

■ 8 राज्यों के 41 पशुपालकों ने निभाई भागीदारी

बीकानेर(निसं)। वैज्ञानिक तरीकों से भेड़ एवं बकरी पालन के माध्यम से उद्यमिता विकास के गुर सिखाने के लिए 41 किसानों तथा पशुपालकों को स्वामी ाे ेशानान्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में प्रशिक्षण दिया गया। कृषि विज्ञान केंद्र बीकानेर तथा कृषि महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस सात दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान किसानों और पशुपालकों को भेड़ एवं बकरी पालन के वैज्ञानिक तरीके, पोषण, प्रबंधन , नियमित टीकाकरण के बारे में विस्तार से बताया गया। वहीं उद्यमिता व स्वरोजगार की दिशा में प्रेरित करने हेतु विभिन्न फर्मों का भ्रमण, हैण्डस आन ट्रेनिंग, विभिन्न सरकारी योजनाओं, बैंक ऋण प्रकिया की विस्तार से जानकारी दी गई। प्रशिक्षण का समापन गुरुवार को विश्वविद्यालय के एचआरडी सभागार में हुआ। समारोह में कुलगुरु डॉ अखिल रंजन गर्ग ने कहा कि किसानों और पशुपालकों को आय बढ़ाने के लिए समन्वित कृषि की तरफ जाना होगा। खेती के साथ वैज्ञानिक तरीकों से पशुपालन अपना कर किसान न केवल अपना जीवन स्तर सुधार सकता है बल्कि उद्यमिता विकास के माध्यम से वह अन्य लोगों को रोजगार के अवसर भी उपलब्ध करवा सकता है।

उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक प्रबंधन करते हुए भेड़ एवं बकरी पालन की देश–भर में असीमित संभावनाएं हैं। इन संभावनाओं को साकार रूप देने के लिए पशुपालक प्रशिक्षण लें तथा यहां प्राप्त जानकारी को अपने जीवन में अपनाते हुए उद्यमी बनें । उन्होंने कहा कि खेती के साथ–साथ पशुपालन में तकनीक हस्तांतरण वर्तमान की महती आवश्यकता है। पशुपालक वैज्ञानिक तौर तरीके अपनाकर निश्चित तौर पर लाभान्वित हो सकेंगे।

कुलगुरु ने कहा कि सहकारिता के माध्यम से मिलकर काम करते हुए आय संवर्धन की दिशा में बेहतरीन परिणाम प्राप्त किए गए हैं। किसान इस मॉडल को अपनाएं। प्रशिक्षण से सीखे ज्ञान का उपयोग कर अपना उद्यम स्थापित करें और अन्य लोगों को रोजगार देने वाले बनें।

इस अवसर पर तेलंगाना, उत्तरप्रदेश, गुजरात, हरियाणा, राजस्थान सहित अन्य राज्यों के किसानों ने भी प्रशिक्षण लिया एवं अपने अनुभव साझा किए। प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ दीपाली धवन ने स्वागत उद्बोधन दिया।

उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा किसानों के हित में गत 10 महीने में इस विषय पर छह प्रशिक्षण आयोजित किए गए हैं। उन्होंने किसानों को प्रशिक्षण से प्राप्त जानकारी अपने आसपास के लोगों के साथ साझा करने की अपील की। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ पी के यादव ने प्रशिक्षण की विस्तार से जानकारी दी।

निदेशक अनुसंधान डॉ एच एल देशवाल ने कहा कि पशुपालन को लाभप्रद बनाने में वैज्ञानिक प्रबंधन सबसे बड़ी आवश्यकता है। डॉ कुलदीप प्रकाश शिंदे ने आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए प्रभारी डॉ. शंकरलाल ने बताया कि सात दिवसीय प्रशिक्षण में किसानों को विश्वविद्यालय स्थित समन्वित कृषि प्रणाली इकाई में सिरोही बकरी पालन, केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान बीकानेर के मगरा, चोकला, मारवाडी भेड़ों की नस्लों के फर्मों, राजूवास बीकानेर के विभिन्न फर्मों का भ्रमण करवाया गया। इस दौरान विभिन्न नस्लों से परिचित करवाते हुए वैज्ञानिक पोषण प्रबंधन की जानकारी दी गई।

इस दौरान उपनिदेशक प्रसार शिक्षा डॉ राजेश वर्मा, डॉ सीमा त्यागी सहित अन्य डीन डायरेक्टर्स और किसान पशुपालक उपस्थित रहे।

राजस्थान सरकार, कार्यालय नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर (राज.)

Telefax No. 0154-2466652, Email :- uit_sgnr@yahoo.com Off. Add:- UIT Office, Model Town, Sri Ganganagar (Raj.) 335001

क्रमांक :- भू.वि./2025-26/ **उजरदायरी** दिनांक : 27.10.2025

नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर की कुंज विहार योजना में निलामी द्वारा आवंटित भूखण्ड संख्या जी-25 माप 25'-0'' गुणा 49'-0'' फीट को श्री बलजीत सिंह पुत्र श्री महेन्द्र सिंह को आवंटित किया जाकर दिनांक 20.08.1999 को पटटा जारी किया गया। श्री बलजीत सिंह पुत्र श्री महेन्द्र सिंह द्वारा पंजीकृत बैयनामा से श्री राकेश पुरी पुत्र श्री सीता राम पुरी को दिनांक 08.05.2003 को विक्रय कर दिया गया। श्री राकेश पुरी पुत्र श्री सीता राम पुरी की मृत्यु दिनांक 25.07.2010 को हो चुकी है, जिनके वारिस प्रमाण-पत्र के अनुसार दो वारिस दर्शाए गए हैं। 1. श्रीमती सुरेशा रानी पत्नी स्व. श्री राकेश पुरी 2. श्री मोहित पुरी पुत्र स्व. श्री राकेश पुरी। आवेदिका श्रीमती सुरेशा रानी पत्नी स्व. श्री राकेश पुरी एवं श्री मोहित पुरी पुत्र स्व. श्री राकेश पुरी निवासी मकान नं. जी-25, नजदीक बी.एस.एन.एल. ऑफीस, कुंज विहार, श्रीगंगानगर द्वारा मृत्यु प्रमाण पत्र, वारिस प्रमाण पत्र, पंजीकृत दस्तावेजों की प्रति प्रस्तुत कर उक्त भूखण्ड का अपने नाम से नामान्तरण करवाने हेतु निवेदन किया है। यह उजरदायरी साया करते हुए हर आम व खास, हितबद्ध को सूचित किया जाता है कि उपरेक्त वर्णित भूखण्ड के वारिसान / वसीयत के संबंध में किसी को कोई एतराज हो तो उजरदायरी प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस में मय सबुत न्यास कार्यालय में प्रस्तुत करें। समयावधि व्यतीत होने के बाद कोई उजर मान्य नहीं होगा एवं न्यास कार्यालय द्वारा नियमानुसार कार्यवाही कर उक्त भूखण्ड का नामान्तरण श्रीमती सुरेशा रानी पत्नी स्व. श्री राकेश पुरी एवं श्री मोहित पुरी पुत्र स्व. श्री राकेश पुरी निवासी मकान नं. जी-25, नजदीक बी. एस.एन.एल. ऑफीस, कुंज विहार, श्रीगंगानगर के नाम से कर दिया जावेगा। Rajkaj Ref. No. 18449637 - सचिव, नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

कार्यालय नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर (राज.)

क्रमांक :- नियमन/2025 Rajkaj Ref No. 4506 दिनांक :- 20.11.2025

सार्वजनिक आपत्ति सूचना

सर्व साधारण को सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि कृषि भूमि क्षेत्र में रिहायशी भूखण्ड वाके चक 1 ए छोटी मुरब्बा नं. 71 के किला नं. 12,13,18,19 में भूखण्ड संख्या का माप 21'-3" गुणा 48'-6" फीट के नियमन/पट्टा हेतु आवेदक श्रीमती रेखा देवी पत्नी श्री मोहन महतो निवासी 15 ब्रह्म कॉलोनी, श्रीगंगानगर द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों के आधार पर इनके भूखण्ड का नियमन किया जाना है। अतः उपरोक्त वर्णित भूखण्ड के आवेदक के द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों/रकबे के संबंध में किसी को कोई आपत्ति हो तो वह अपनी आपत्ति मय सबूत आपत्ति सूचना के प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस के अन्दर-अन्दर न्यास कार्यालय में कमरा नं. 17 में प्रस्तुत कर सकता है अन्यथा बाद मियाद गुजरने अवधि के उपरान्त आवेदक श्रीमती रेखा देवी पत्नी श्री मोहन महतो निवासी 15 ब्रह्म कॉलोनी, श्रीगंगानगर द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों के आधार पर चक 1 ए छोटी मुरब्बा नं. 71 के किला नं. 12,13,18,19 में भूखण्ड संख्या का माप 21'-3" गुणा 48'-6" फीट का नियमन/पट्टा जारी कर दिया जावेगा। यदि उक्त वर्णित क्षेत्र का पूर्व में नियमन/पट्टा जारी होना पाया गया तो वर्तमान पट्टा स्वतः ही निरस्त माना जावेगा। न्यास किसी भी विवाद के लिए जिम्मेवार नहीं होगा। - सचिव, नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

कार्यालय प्राधिकृत अधिकारी, नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

क्रमांक- LU2012/SGN/2025-26/101457 **लोक सूचना** दिनांक- 20.11.2025

श्रीमती गुंजन अरोड़ा पत्नी श्री अमित कुमार निवासी 31 थर्ड ब्लॉक, वार्ड नं. 16, ग्रीन पार्क, उदाराम चौक, पुरानी आबादी, श्रीगंगानगर ने इस कार्यालय में नीचे उल्लिखित भूमि का आवासीय प्रयोजनार्थ के उपयोग हेतु ऐसी भूमि के अपने अभिधृति अधिकारों के निर्वापन के लिए आवेदन प्रस्तुत किया है, अर्थात् -

क्र. सं.	ग्राम तहसील व जिले का नाम	खातेदार का नाम	खसरा सं./भूमि का विवरण	क्षेत्रफल (हैक्टेयर)
1.	चक 4 ई छोटी तहसील व जिला श्रीगंगानगर	श्रीमती गुंजन अरोड़ा पत्नी श्री अमित कुमार	चक 4 ई छोटी मुरब्बा नं. 39 के किला नं. 1/1 में 0.0660 हैक्टे. किला नं. 2/2 में 0.0300 हैक्टे. किला नं. 9/1 में 0.1010 हैक्टे. किला नं. 10/4 में 0.0510 हैक्टे. यथाकुल 0.2480 हैक्टेयर	कुल 0.2480 हैक्टेयर

इसलिए, इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 90-क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारो के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो वह इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिन के भीतर-भीतर एसएसओ आईडी से लॉग इन कर 90-A For Development Authority (UDH) आईकॉन पर जाकर समर्थक दस्तावेज को अपलोड कर अपना आक्षेप दर्ज कर सकते है। उपर्युक्त नियत समय के भीतर-भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जायेगा कि किसी को आक्षेप नही है और तदनुसार मामले का निपटारा किया जायेगा। यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज .... को जारी की गयी। - प्राधिकृत अधिकारी, नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

राजस्थान सरकार, कार्यालय नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर (राज.)

Telefax No. 0154-2466652, Email :- SECYUIT.SGNR@RAJASTHAN.GOV.IN Off. Add:- UIT Office, Model Town, Sri Ganganagar (Raj.) 335001

क्रमांक :- नियमन/2025/4502 **सार्वजनिक आपत्ति सूचना** दिनांक : 18.11.2025

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि श्री अरिन्द्र पाल सिंह पुत्र श्री जसपाल सिंह एवं इन्द्रजीत कौर पत्नी श्री अरिन्द्र पाल सिंह निवासी म.नं. 14 गली नं. 11, नजदीक मिनी स्पोर्टस स्कूल, सेतिया कॉलोनी, श्रीगंगानगर के द्वारा न्यास क्षेत्र में स्थित आवासीय भूखंड का न्यास रिकार्ड में नामान्तरण हेतु आवेदन किया गया है। उक्त भूखंड के सम्बन्ध में न्यास रिकार्ड एवं आवेदक के द्वारा प्रस्तुत दस्तावेज की स्थिति निम्नानुसार है :-

न्यास रिकार्ड के अनुसार भूखंड का विवरण		आवेदक के द्वारा भूखंड के नामांतरण हेतु प्रस्तुत दस्तावेजों का विवरण
भूखण्ड का विवरण	मूल भूखण्डधारी	दस्तावेज का विवरण
चक 3 ए छोटी मुरब्बा नं. 02 किला नं. 24 में माप 30 इंटू 60 फीट भू.सं. एन-09 श्रीगंगानगर	उक्त भूखंड का नियमन पट्टा सं. 8714 दिनांक 02.08.2018 को श्री बलदेव सिंह पुत्र श्री बसन्त सिंह के नाम से जारी किया हुआ है।	श्री अरिन्द्र पाल सिंह व इन्द्रजीत कौर द्वारा उक्त पंजीकृत बैयनामा दिनांक 22.10.2021 की प्रति प्रस्तुत कर उक्त भूखंड के नामान्तरण हेतु न्यास में ऑनलाईन आवेदन प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार उक्त भूखण्ड के सम्बन्ध में उपर्युक्तानुसार दस्तावेजों की प्रति इस कार्यालय में प्रस्तुत कर नामान्तरण चाहा गया है इस संबंध में श्री अरिन्द्र पाल सिंह पुत्र श्री जसपाल सिंह एवं इन्द्रजीत कौर पत्नी श्री अरिन्द्र पाल सिंह निवासी म.नं. 14 गली नं. 11, नजदीक मिनी स्पोर्टस स्कूल, सेतिया कॉलोनी, श्रीगंगानगर द्वारा प्रस्तुत दस्तावेज/फ्री लीज होल्ड पट्टे के संबंध में कोई आपत्ति है तो सूचना के प्रकाशन के 07 दिवस में पुख्ता दस्तावेजों सहित अपनी आपत्ति/उजर/ दावा निम्न हस्ताक्षरकर्ता के समक्ष प्रस्तुत कर सकते है। उक्त अवधि के दौरान इस भूखण्ड से सम्बन्धित समस्त दस्तावेजों को आमखास/हितबद्ध व्यक्ति के देखने व पढ़ने के लिये कार्यालय समय में खुला रखा गया है। बाद मियाद प्रकरण का निस्तारण कर दिया जायेगा एवं कोई आपत्ति/उजर स्वीकार नहीं होगा। आवेदन संख्या :- SGNR/FY25-26/MUT/955 - सचिव, नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

कार्यालय नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर (राज.)

क्रमांक: नियमन/2025/4495 **सार्वजनिक आपत्ति सूचना** दिनांक : 14.11.2025

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि श्रीमती साक्षी पत्नी श्री येतेन्द्र कौशिक एवं श्री येतेन्द्र कौशिक पुत्र श्री दिनेश कुमार शर्मा, निवासी 6 क्यू-5 जवाहरनगर, श्रीगंगानगर के द्वारा न्यास क्षेत्र में स्थित आवासीय भूखंड का न्यास रिकॉर्ड में नामांतरण हेतु आवेदन किया गया है। उक्त भूखंड के संबंध में न्यास रिकार्ड एवं आवेदक के द्वारा प्रस्तुत दस्तावेज की स्थिति निम्नानुसार है -

न्यास रिकार्ड के अनुसार भूखंड का विवरण		आवेदक के द्वारा भूखंड के नामांतरण हेतु प्रस्तुत दस्तावेजों का विवरण
भूमि का विवरण	मूल भूखंडधारी	दस्तावेज का विवरण
चक 6 ई छोटी मुरब्बा नं. 42 किला नं. 16 में माप 40 इन्टू 65 फीट भूखण्ड संख्या ए-39 ज्योति नगर, श्रीगंगानगर	उक्त भूखण्ड का नियमन पट्टा संख्या 1030 दिनांक 24.03.2001 को श्री पवन मोहनका पुत्र श्री द्वारका दास के नाम से जारी किया हुआ है।	श्रीमती साक्षी एवं श्री येतेन्द्र द्वारा पंजीकृत बैयनामा दिनांक 29.08.2025 की प्रति प्रस्तुत कर उक्त भूखण्ड के नामान्तरण बाबत न्यास में ऑनलाइन आवेदन प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार उक्त भूखंड के संबंध में उपर्युक्तानुसार दस्तावेजों की प्रति इस कार्यालय में प्रस्तुत कर नामांतरण चाहा गया है। इस संबंध में श्रीमती साक्षी पत्नी श्री येतेन्द्र कौशिक एवं श्री येतेन्द्र कौशिक पुत्र श्री दिनेश कुमार शर्मा, निवासी 6 क्यू-5 जवाहरनगर, श्रीगंगानगर द्वारा प्रस्तुत दस्तावेज/फ्री लीज होल्ड पट्टे के संबंध में कोई आपत्ति है तो सूचना के प्रकाशन के 07 दिवस में पुख्ता दस्तावेजों सहित अपनी आपत्ति/उजर/दावा निम्न हस्ताक्षरकर्ता के समक्ष प्रस्तुत कर सकते हैं। उक्त अवधि के दौरान इस भूखंड से संबंधित समस्त दस्तावेजों को आमखास/हितबद्ध व्यक्ति के देखने व पढ़ने के लिए कार्यालय समय में खुला रखा गया है। बाद मियाद प्रकरण का निस्तारण कर दिया जावेगा एवं कोई आपत्ति/उजर स्वीकार नहीं होगा।

आवेदन संख्या - SGNR/FY25-26/MUT/814 - सचिव, नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

फर्जी निवेश वेबसाइट चलाकर 3500 करोड़ से अधिक की ठगी का पर्दाफाश

पांच आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया, तीन लाख से अधिक लोगों को शिकार बनाया था

भरतपुर/जयपुर। भरतपुर पुलिस ने एक विशाल फर्जी निवेश नेटवर्क का भंडाफोड़ किया है। इस नेटवर्क ने देशभर के तीन लाख से अधिक भोले-भाले निवेशकों से 3500 करोड़ रुपए से अधिक की ठगी की थी। पुलिस ने इस मामले में गिरोह के पांच मुख्य आरोपियों को गिरफ्तार किया है और उनसे भारी मात्रा में संपत्ति जब्त की है।

जिला पुलिस अधीक्षक भरतपुर दिगत आनंद के निर्देशन में वृत्ताधिकारी भरतपुर शहर पंकज यादव, आईपीएस की गठित टीम ने यह प्रभावी कार्रवाई की। इस फर्जीवाड़े का खुलासा तब हुआ जब 12 नवंबर को थाना मथुरा गेट पर एक मुकदमा दर्ज किया गया। शिकायत में बताया गया कि एक फर्जी निवेश वेबसाइट और मोबाइल एप्लिकेशन क्रिप्टो करेंसी एवं विदेशी बाजारों (फॉरेक्स) में उच्च लाभ, बोनस और अतिरिक्त प्रलोभन का झांसा देकर लोगों से निवेश करवा रही थी। जांच में पाया गया कि यह कंपनी भारत में सेबी, आरबीआई, एमसीए या किसी भी सक्षम प्राधिकरण से पंजीकृत नहीं थी।

पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से भारी मात्रा में संपत्ति जब्त की।

- पुलिस ने लगभग 40 लाख नकद, सोने के जेवर, 5 लग्जरी वाहन और लगभग 40 लाख रुपये मूल्य की क्रिप्टो करेंसी जब्त की

रूस का दावा, संचालन जयपुर से :- अनुसंधान के दौरान चौंकाने वाले तथ्य सामने आए। वेबसाइट खुद को 2016 से रूस में संचालित होना बताती थी, लेकिन पुलिस ने खुलासा किया कि इसका वास्तविक संचालन नवंबर 2022 में जयपुर से शुरू किया गया था। इस फर्जी नेटवर्क के निर्माण और संचालन की मुख्य भूमिका में संदीप सिगर और रजत शर्मा नामक व्यक्ति पाए गए। वेबसाइट 47 लाख उपयोगकर्ताओं और 4.3 बिलियन डॉलर फंड प्रबंधन का झूठा दावा कर रही थी, जबकि वास्तविक जांच में लगभग 4.7 लाख उपयोगकर्ता सामने आए, जिनसे जमा की गई वास्तविक राशि 350 मिलियन डॉलर (लगभग 3100 करोड़ रुपये) निकली। यही समूह एक और फर्जी निवेश वेबसाइट भी चला रहा था, जिसके माध्यम से लगभग 9000 उपयोगकर्ताओं से 58 मिलियन डॉलर (500 करोड़ रुपये से अधिक) की ठगी की गई थी।

आरोपी गिरफ्तार, करोड़ों की संपत्ति जब्त :- भरतपुर पुलिस ने इस मामले में पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इनके कब्जे से लगभग 40 लाख रुपये नकद, सोने के जेवरात, 5 लग्जरी वाहन और लगभग 40 लाख रुपये मूल्य की क्रिप्टो करेंसी जब्त की है। यह कार्रवाई अनियमित जमा योजना प्रतिबंध अधिनियम 2019 और बीएनएस की धाराओं के तहत की गई है। इस पूरी कार्रवाई में वृत्त कार्यालय भरतपुर शहर के कांस्टेबल सोनू मीना की विशेष भूमिका रही।

इस विशेष गठित टीम में एसआई मथुरा गेट बलराम यादव, एएसआई हरगोपाल, थाना कोतवाली से एएसआई चंद्रशेखर, सीओ सिटी कार्यालय से एएसआई हिम्मत सिंह, हेड कांस्टेबल नरेंद्र सिंह, कांस्टेबल सोनू मीणा, देवेंद्र सिंह, भरत, थाना साइबर से कांस्टेबल कुंवर पाल, थाना अटलबंध से कांस्टेबल अंकित, थाना कोतवाली से कांस्टेबल विश्वेंद्र सिंह एवं साइबर सेल भरतपुर की टीम शामिल थे, जिन्होंने यह बड़ी सफलता हासिल की।

कोयला माफ़िया ने 20 बीघा चरागाह भूमि से हरे वृक्ष उखाड़े

- बताया जा रहा है कि माफ़िया ने जेसीबी से 200 बीघा चरागाह में से लगभग 20 बीघा भूमि पर लगे विलायती बबूल के हरे वृक्षों को जड़ से उखाड़ दिया
- माफ़िया की मनमानी के कारण, ज़रूरतमंद ग्रामीणों में गहरा आक्रोश और असंतोष फैल रहा है

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले के आसींद क्षेत्र के बालापुरा ग्राम में कथित तौर पर कोयला माफ़िया के बेखौफ इरादों ने सार्वजनिक चरागाह भूमि की हरियाली को नष्ट कर दिया है, जिससे स्थानीय ग्रामीणों में भारी आक्रोश फैल गया है। बताया जा रहा है कि माफ़िया ने जेसीबी मशीनों का इस्तेमाल कर 200 बीघा चरागाह में से लगभग 20 बीघा भूमि पर लगे विलायती बबूल (बम्बूल) के हरे वृक्षों को जड़ से उखाड़ दिया।

ग्रामीणों के अनुसार, यह अवैध गतिविधि यहीं नहीं रुक रही है और माफ़िया शेष चरागाह भूमि की हरियाली को भी नष्ट करने पर तुला हुआ है। स्थानीय लोगों ने माफ़िया को रोकने का प्रयास किया, लेकिन वह किसी भी चेतावनी या विरोध को अनसुना कर रहा है। वहीं ग्रामीण ने बताया कि चरागाह भूमि हमारे पशुओं के लिए जीवनरेखा है। माफ़िया ने खुलेआम पेड़ों को उखाड़ दिया है। विरोध करने पर भी वह नहीं रुक रहा, जिससे हमारी हरियाली पूरी तरह से नष्ट हो रही है।

मामले की गंभीरता तब और बढ़ जाती है जब यह पता चला कि माफ़िया न केवल हरियाली को नष्ट कर रहा है, बल्कि ग्रामीणों को अपने आवारा पशुओं को सुरक्षित रखने के लिए साधारण बाड़ (मेढ़/बाढ़) लगाने से भी रोक रहा है। ज़रूरतमंद आदमी, जिनके पशुओं को खुले में रखने की समस्या है, उन्हें माफ़िया के इस कृत्य से भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। माफ़िया की मनमानी के कारण, ज़रूरतमंद ग्रामीणों में गहरा आक्रोश और असंतोष फैल रहा है। इस गंभीर स्थिति ने ग्रामीणों को स्थानीय प्रशासन की कार्यशैली पर सवाल उठाने के लिए मजबूर कर दिया है, क्योंकि इतनी बड़ी संख्या में पेड़ों को उखाड़ने के बावजूद, अब तक माफ़िया के खिलाफ कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं हुई है।

बेटे की शादी से पांच दिन पहले पिता की हार्टअटैक से मौत

- रिश्तेदारों के साथ जमकर डांस किया, थके तो कुर्सी पर बैठे, फिर नहीं उठे

बीकानेर, (निसं)। यहां बेटे की शादी से पांच दिन पहले पिता की हार्टअटैक से मौत हो गई। बेटे की शादी की खुशी में रिश्तेदारों के साथ पिता नाच रहे थे। नाचने के बाद वे थक कर कुर्सी पर बैठ गए। कुर्सी पर बैठे-बैठे ही उनको हार्ट अटैक आया और वहीं बेसुध हो गए। परिजन उनको पीबीएम हॉस्पिटल लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टर ने उनको मृत घोषित कर दिया। डॉक्टर्स ने प्रारंभिक तौर पर साइलेंट हार्ट अटैक से मौत होना बताया है।

घटना से कुछ देर पहले का एक वीडियो भी सामने आया है, जिसमें वे परिवार के साथ डांस करते दिखाई दे रहे हैं। डांस करने पर पूनमचंद थक गए तो उन्होंने नाचने से मना कर दिया, लेकिन लोगों की फरमाइश पर फिर नाचने लगे। भाजपा के जिला उपाध्यक्ष अशोक प्रजापत ने बताया कि पूनम चंद प्रजापत (57) निवासी बंगलानगर के बेटे पंकज की 25 नवंबर को शादी होनी है। घर में मांगलिक आयोजन में बहन-बेटियां और परिवार के सदस्य शामिल होने पहुंच गए। बुधवार को दोपहर करीब 1.30 बजे पूनमचंद घर में शादी की खुशी में चल रहे नाच-गाने में शामिल थे। उन्होंने परिवार के लोगों के साथ खूब डांस किया। जब वह थक गए तो एक कुर्सी पर जाकर बैठ गए। थोड़ी देर बाद ही वह कुर्सी पर बैठे-बैठे बेसुध हो गए। पूनमचंद के अचानक बेसुध होने पर परिजन घबरा गए। वह पूनमचंद को लेकर पीबीएम के हल्दीराम हार्ट हॉस्पिटल पहुंचे, जहां डॉक्टर ने जांच के बाद उनको मृत घोषित कर दिया। पूनमचंद के निधन की सूचना मिलते ही शादी वाले घर में मातम छा गया। उनकी बेटियां अंजू और राजू भी बेसुध हो गईं। पूनमचंद का बेटा पंकज बुधवार को जयपुर में था, उसे गुरुवार को बीकानेर आना था। पूनमचंद की मौत के बाद उसे जानकारी दी गई और तुरंत बीकानेर बुलाया गया।

प्रदेश के सरकारी और प्राइवेट स्कूलों में अर्द्धवार्षिक परीक्षाएं शुरू

- दो पारियों में चल रही इन परीक्षाओं में करीब 27 लाख विद्यार्थी शामिल हो रहे हैं
- क्लास 9 से 12 के लिए प्रदेशभर में एक ही पेपर, बोर्ड पैटर्न पर हो रहे हैं एग्जाम

बीकानेर, (निसं)। शिक्षा विभाग की समान परीक्षा योजना के तहत गुरुवार से प्रदेशभर के सरकारी और प्राइवेट स्कूलों में नौवीं से बारहवीं तक हाफ इयरली परीक्षाएं एकसमान टाइम-टेबल के साथ शुरू हो गईं। दो पारियों में चल रही इन परीक्षाओं में करीब 27 लाख विद्यार्थी शामिल हो रहे हैं। सुबह की पारी के बाद दोपहर डेढ़ बजे से दूसरी पारी शुरू हो चुकी है। पहली ही दिन स्टूडेंट्स ने अनिवार्य अंग्रेजी का पेपर दिया, जबकि शुक्रवार को दसवीं में विज्ञान और ग्यारहवीं-बारहवीं में हिन्दी का अनिवार्य पेपर होगा।

राज्यभर में पहली पारी 9:30 से 12:45 बजे तक आयोजित हुई, जबकि दूसरी पारी 1:15 से 4:30 बजे तक ली जा रही है। पेपर बोर्ड पैटर्न पर तैयार किए गए हैं और उन्हें सील-पैक तरीके से परीक्षा केंद्रों तक भेजा जा रहा है। प्राइवेट स्कूलों को पेपर सीधे नहीं दिए जा रहे हैं बल्कि सरकारी स्कूलों को नोडल एजेंसी बनाया गया है। अधिकृत व्यक्ति को ही परीक्षा से कुछ देर पहले पेपर उपलब्ध कराया जा रहा है। एक ही दिन, एक ही समय और एक ही पेपर से परीक्षा होने के कारण नौवीं से बारहवीं तक के छात्रों को बोर्ड जैसा अनुभव मिल रहा है। शिक्षा विभाग का उद्देश्य छात्रों को बड़े एग्जाम के लिए मानसिक रूप से तैयार करना है।

शहर के कई स्कूलों में छात्रों की अनुपस्थिति देखने को मिल रही है। एक प्राइवेट स्कूल संचालक मनोज व्यास के अनुसार, 22 नवंबर और 30 नवंबर को बड़े पैमाने पर विवाह समारोह होने के कारण बच्चे घर से बाहर हैं। कई विद्यार्थी दो से चार पेपर तक मिस कर रहे हैं, जिससे टीचर्स ने परीक्षा की तारीख तय करते समय इस पहलू पर विचार न करने को लेकर विभाग पर सवाल उठाए।

पंजीयक शिक्षा विभागीय परीक्षा कार्यालय की ओर से आयोजित इस समान परीक्षा में इस बार 27 लाख विद्यार्थी शामिल हो रहे हैं। कक्षा 9 से 12 तक के सभी छात्रों के लिए एक-समान पेपर प्रकाशित करवाए गए हैं।

मजदूर परिवार की किशोरी से दुष्कर्म, पड़ोसी गिरफ्तार

बीकानेर, (निसं)। यहां बीछवाल थाना क्षेत्र की एक आवासीय कॉलोनी में 14 साल की किशोरी से दुष्कर्म का मामला सामने आया है। दुष्कर्म करने वाला किशोरी का पड़ोसी है।

बीछवाल थाना क्षेत्र के इंडस्ट्रियल एरिया में बिहार का रहने वाला परिवार मजदूरी कर अपना गुजारा कर रहा है। परिवार में पति-पत्नी, 10 साल का बेटा और 14 साल की बेटी है। पति-पत्नी एक फैक्टरी में काम करते हैं। आरोप है कि 16 नवंबर को फैक्ट्री की छुट्टी थी। पति-पत्नी घर का सामान लेने बाजार गए थे। इस दौरान पड़ोस में रहने वाला अर्जुनराम किशोरी को जबरन अपने कमरे में ले गया और उसके साथ दुष्कर्म किया। किशोरी की आंखों में कुछ विकार है। पति-पत्नी घर पहुंचे तो वारदात का पता चला। किशोरी ने उन्हें बताया कि आरोपी ने पूर्व में भी बार-बार उसके साथ दुष्कर्म किया है। परिजनों ने बीछवाल थाना पुलिस को रिपोर्ट दी तो पॉक्सो एक्ट में मुकदमा दर्ज कर किशोरी का मेडिकल कराया गया। पुलिस ने अर्जुनराम को गिरफ्तार कर लिया है।

14 साल की युवती के साथ पड़ोस में रहने वाले युवक की ओर से बार-बार दुष्कर्म किए जाने की गंभीर वारदात में पुलिस ने गुपचुप तरीके से कार्रवाई की। परिजन पुलिस के पास पहुंचे तो मुकदमा दर्ज कर लिया और आरोप प्रमाणित पाए जाने पर अर्जुनराम को गिरफ्तार कर लिया। उसे कोर्ट में पेश कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया। महिलाओं पर अपराध संबंधी इस मामले में पुलिस ने इतनी गोपनीयता बरती कि किसी को पता ही नहीं चलने दिया।

दस दिन तक मौसम शुष्क रहने की उम्मीद

बीकानेर, (निसं)। यहां सर्दी बढ़ रही है लेकिन इस रफ्तार अगले कुछ दिनों तक थम सकती है। मौसम विभाग ने राज्य के अधिकांश हिस्सों में अगले दस दिन तक मौसम शुष्क रहने की उम्मीद जताई है, साथ ही तापमान में विशेष परिवर्तन नहीं होने की संभावना भी है।

बीकानेर में इन दिनों न्यूनतम तापमान 12 से 13 डिग्री सेल्सियस के बीच है, वहीं अधिकतम पारा 30 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच रहा है। ऐसे में आने वाले दस दिन तक कमोबेश इतना ही पारा रह सकता है। जिले के मौसम में तरह-तरह का असर दिख रहा है। सुबह और रात के तापमान में बड़ा अंतर सामने आ रहा है। सुबह दस बजे तक जहां 17 डिग्री सेल्सियस के आसपास तापमान रहा, वहीं रात को ये 28 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। आज भी दिन में हल्की धूप रहने और आसमान में बादल दिख सकते हैं।

शाम-रात में फिर से सर्दी रहेगी। न्यूनतम तापमान दस से बारह डिग्री सेल्सियस के बीच ही रहने की उम्मीद है। शहर की हवा बहुत खराब स्थिति में पहुंच गई है। बीकानेर में एक्यूआई लगभग 163-174 तक मापा गया है, जो खराब श्रेणी में दर्ज होता है।

पिछले लंबे अर्से से बीकानेर में एक्युआई बहुत ही खराब स्थिति को दर्ज करा रहा है, लेकिन इससे सुधार की फिलहाल कोई स्थिति नजर नहीं आ रही है। कोई प्रशासनिक प्रयास भी नहीं है।

भारत-पाकिस्तान सीमा पर खेत में ड्रोन मिला

जैसलमेर, (निसं)। जैसलमेर में भारत-पाकिस्तान सीमा पर रामगढ़ नहरी इलाके के खेत में ड्रोन मिला है। सूचना मिलने के पश्चात पुलिस, वायुसेना और सेना के अधिकारी मौके पर पहुंचे।

जानकारी के अनुसार रामगढ़ नहरी क्षेत्र में स्थित एक खेत में गुरुवार दोपहर ड्रोन मिला। स्थानीय किसान ने खेत में इसे देखा और पुलिस को सूचना दी। पुलिस एएसआई प्रेमशंकर ने बताया कि हमें सूचना मिली की खेत में एक ड्रोन गिरा है। जानकारी मिलते ही मौके पर पहुंचे और ड्रोन के आसपास से भीड़ को हटाया। सूचना पर दोपहर 3 बजे भारतीय वायुसेना और सेना की टीम मौके पर पहुंची। सेना से मिली जानकारी के अनुसार भारतीय वायुसेना का यूएवी तकनीकी खराबी के कारण एक खेत में गिरा। यह यूएवी अपने नियमित अभ्यास उड़ान पर था, तभी इसमें तकनीकी समस्या आ गई। वायुसेना की टीम ने मौके पर पहुंचकर जांच-पड़ताल की। ड्रोन ने जमीन पर गिरने के बाद कई फीट तक स्लाइड करते हुए मिट्टी में खिंचाव बनाए। इसके आगे वाला हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया। पंख और पिछले हिस्से के फिन्स सुरक्षित हैं। ड्रोन किसी सर्विलांस, रिकॉर्डिंग या तकनीकी निगरानी मिशन में काम आने वाला मॉडल है।

रिटायर्ड रेलवे कर्मचारी से 46.39 लाख की सायबर ठगी

शेयर मार्केट में रिटर्न का झांसा देकर ठगी की, पीड़ित ने पुलिस में दी शिकायत

अजमेर, (निसं)। अजमेर में गुरुवार सायबर अपराधियों ने रिटायर्ड रेलवे कर्मचारी को ठगी का शिकार बनाया, शातिरों ने शेयर मार्केट में भारी मुनाफे का लालच देकर 46 लाख 39 हजार रुपए ठगे। शातिर ठगों ने फेसबुक एड के जरिए संपर्क साधा और पीड़ित को फर्जी एप डाउनलोड करवाकर बैंकिंग जानकारी हासिल कर ली। पीड़ित ने आरोपियों के खिलाफ सायबर थाना पुलिस ने मामला दर्ज कराया है, पुलिस मामले की जांच जुट गई है।

सायबर थाना पुलिस के अनुसार चंद्रवरदाई नगर निवासी इफ्तेखार अहमद सिद्दीकी रेलवे से सेवानिवृत कर्मचारी हैं। सिद्दीकी ने दर्ज मुकदमे में बताया कि फेसबुक पर शेयर बाजार को लेकर एक विज्ञापन देखा और उसमें हां करने पर उसे व्हाट्सएप मैसेज मिला। मैसेज में दावा किया गया कि वह प्रतिदिन 10 से 30 प्रतिशत तक मुनाफा कमा सकता है। इसके बाद ठगों ने पीड़ित को यह कहते हुए फुसलाया कि यदि उसे शेयर मार्केट की समझ नहीं है तो वे उसे विशेषज्ञों के जरिए गाइड किया जाएगा। ठगों ने बातचीत कर झांसे में लेकर उनसे प्ले स्टोर से एक ऐप डाउनलोड करवाया। ऐप डाउनलोड करने के बाद उनसे बैंक डिटेल्स और व्यक्तिगत जानकारी अपलोड करवाने को कहा गया।

पीड़ित ने बताया कि इसके बाद उसे एक व्हाट्सऐप ग्रुप में शामिल किया गया,जहां रोजाना हाई प्रॉफिट स्कीम और फर्जी सफलता के स्क्रीनशॉट शेयर किए जाते थे। इस पर विश्वास कर उसने उनके बताए अनुसार अलग-अलग रुपए भेजने शुरू किए। 11 ट्रांजैक्शन के जरिए उससे 46 लाख 39 हजार रुपए विभिन्न बैंक खातों में जमा करवाए गए। पुलिस जांच में सामने आया कि ठगों ने उसे 11 अलग-अलग मोबाइल नंबरों से संपर्क किया और चार संदिग्ध बैंक खातों में रकम डलवाई। जब पीड़ित ने मुनाफे की राशि निकालने का प्रयास किया, तो ऐप ने काम करना बंद कर दिया। इसके बाद ठगों ने सभी नंबर स्विच ऑफ कर दिए। तब जाकर उसे ठगी का एहसास हुआ। पीड़ित की शिकायत पर सायबर थाना पुलिस ने सायबर धोखाधड़ी का मुकदमा दर्ज किया है। मामले की जांच रामगंज थाना प्रभारी रवीश सामरिया को सौंपी गई है।

झोंपड़े में आग लगने से मासूम जिंदा जली

बज्जू, (निसं)। रणजीतपुरा थाना क्षेत्र के डेहरिया (बरसलपुर) के चक 2 बीएलएसएम में आग लगने से एक झोंपड़ा जल गया। इस घटना में चिमनाराम जाट की दो साल की बेटी मोनिका की मौत हो गई। हादसे की सूचना मिलने पर कोलायत विधायक अंशुमान सिंह भाटी भी मौके पर पहुंचे। विधायक अंशुमान सिंह भाटी ने घटना को दुखद बताया। उन्होंने कहा कि जानकारी मिलते ही वे प्रशासनिक अधिकारियों के साथ मौके पर पहुंचे। विधायक ने पीड़ित परिवार को सांत्वना दी और आमजन से आर्थिक सहयोग भी करवाया। उन्होंने राज्य सरकार स्तर से भी विशेष आर्थिक सहायता दिलाने का प्रयास करने का आश्वासन दिया।

बदमाशों ने युवक के सीने में गोली मारी

- बदमाशों ने पहले मोबाइल, नकदी और बाइक छीनने की कोशिश की

भीलवाड़ा, (निसं)। अजमेर-भीलवाड़ा हाईवे नंबर 48 पर रायला थाना क्षेत्र में गुरुवार सुबह नकाबपोश दो बाइक सवार बदमाशों ने एक व्यक्ति को लूट की नीयत से गोली मार दी। घटना उस समय हुई जब इंदौर निवासी मानसिंह (45) रायला थाना के पास सड़क किनारे शौच के लिए रुका था। इस दौरान पीछे से आए दो अज्ञात बदमाशों ने उससे मोबाइल, नकद राशि और बाइक छीनने की कोशिश की। जब मानसिंह ने विरोध किया तो बदमाशों ने उसके सीने में गोली मार दी और मौके से फरार हो गए। गोली लगने से मानसिंह गंभीर रूप से घायल हो गया। राहगीरों की सूचना पर रायला पुलिस मौके पर पहुंची और घायल को प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर हालत में उदयपुर रेफर कर दिया गया। सूचना पर एफएसएल टीम भी भीलवाड़ा से घटनास्थल पर पहुंची और साक्ष्य एकत्र किए। शाहपुरा के एडिशनल एसपी, गुलाबपुरा सीओ और रायला थाना अधिकारी बछराज चौधरी ने टीम के साथ मौके का मुआयना किया। पुलिस ने पूरे क्षेत्र में नाकाबंदी कर बदमाशों की तलाश शुरू कर दी है। घटना से इलाके में सनसनी फैल गई है।

हत्या का आरोपी गिरफ्तार

उदयपुर, (कासं)। गोगुन्दा थाना पुलिस ने हत्या के मामले में छह माह से फरार आरोपी को गिरफ्तार किया। प्रकरण के अनुसार 15 मई को दीपाराम, लक्ष्मण, गणेशलाल, पन्ना, गिता तथा केसरबाई निवासी काड़ पुला नाल गोगुन्दा सभी बाइक पर गोगुन्दा जा रहे थे, जहां बीच रास्ते में लोगों ने दिपाराम व लखमाराम उर्फ लक्ष्मण का रास्ता रोककर मारपीट कर तलवार से हमला कर दिया, जिससे दिपाराम की मौत हो गई थी तथा लक्ष्मण घायल हो गया। इस मामले में प्रकरण दर्ज होने पर जिला पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एवं पुलिस उपाधीक्षक गोपाल चंदेल के सुपरविजन में गोगुन्दा थानाधिकारी श्यामसिंह मय टीम ने तकनीकी अनुसंधान में मिले सांख्यों एवं मुखबीर से मिली सूचना के आधार पर आरोपी पप्पूराम पुत्र होमा निवासी नाल फला डामरावास गोगुन्दा को गिरफ्तार किया।

मंदबुद्धि महिला से दुष्कर्म करने वाले को गार्ड को आजीवन कारावास

न्यायालय ने दोषी पर 50 हजार का जुर्माना लगाया

अलवर, (निसं)। अलवर के विशिष्ट न्यायालय पॉक्सो कोर्ट ने मंदबुद्धि महिला से रेप करने वाले गार्ड को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है।

जज हिमांकनी गौड़ ने फैसला सुनाते हुए कहा कि "एक रक्षक ही भक्षक बन गया। इस अपराध की प्रकृति को देखते हुए सजा में नरमी का रुख अपनाया जाना उचित नहीं है, क्योंकि इससे समाज पर गलत प्रभाव पड़ेगा।" न्यायालय ने दोषी पर 50 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है। आरोपी पश्चिम बंगाल का रहने वाला था।

सरकारी वकील सुनील कुमार शर्मा ने बताया कि यह मामला अलवर के विजय मंदिर थाना क्षेत्र का है। महिला (50) एक संस्थान में रहकर अपना जीवन यापन कर रही थी। नवंबर 2024 में वहीं पर गार्ड की नौकरी कर रहे सुरेश मुंडा (50) ने महिला को अकेली देख उसके साथ रेप किया। सुनील कुमार शर्मा ने बताया कि रेप करते हुए संस्थान के दूसरे कर्मचारियों ने देख लिया। गवाहों के आधार पर कोर्ट ने आरोपी को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। इसके अलावा 50 हजार रुपए के आर्थिक दंड से दंडित किया है। आरोपी पश्चिम बंगाल का रहने वाला था।

सुनील कुमार शर्मा ने बताया कि कोर्ट में यह तथ्य पेश किया गया कि आरोपी सुरेश एक दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हो गया था। तब उसका इलाज भी इसी संस्थान में रहकर हुआ था। जब वह ठीक हो गया तो उसे गार्ड की नौकरी दे दी गई।

यहां संस्थान में बेसहारा महिला और पुरुष रहते हैं। गार्ड का काम वहां रहने वालों की सुरक्षा करना है। इसके बावजूद सुरेश ने मानसिक रूप से कमजोर महिला के साथ रेप किया, जिसके कारण कोर्ट ने उसे सजा देने में नरमी बरतना उचित नहीं समझा और आजीवन कारावास के अलावा आर्थिक दंड से भी दंडित किया।

- जज हिमांकनी गौड़ ने फैसला सुनाते हुए कहा कि एक रक्षक ही भक्षक बन गया, इस अपराध की प्रकृति को देखते हुए सजा में नरमी का रुख अपनाया जाना उचित नहीं है, क्योंकि इससे समाज पर गलत प्रभाव पड़ेगा

लाखों के आभूषण व नकदी चोरी

पावटा, (निसं)। सरूण्ड थाना क्षेत्र के रघुनाथपुरा स्थित ब्राह्मणों के मोहल्ले में पुश्तैनी मकान में मंगलवार की रात अज्ञात चोरों ने चोरी की घटना को अंजाम दिया है। मामले को लेकर पीड़ित नीरज कुमार शर्मा ने बताया कि मंगलवार की रात अज्ञात चोरों ने पुश्तैनी मकान में चोरी की घटना को अंजाम देते हुए मकान में रखी तीन अलमारियों से नकदी व आभूषण चोरी कर फरार हो गए। एक अलमारी से अज्ञात चोरों ने 80 हजार नकद व जेवर, दूसरी अलमारी से 3 लाख नकद व जेवर व तीसरी अलमारी में भी जेवर, नकद दस हजार रुपए गुल्लक के चोरी कर ले गए।

वहीं अज्ञात चोरों ने पड़ोस में रहने वाले नरेंद्र मीणा पुत्र जगदीश मीणा के घर को भी निशाना बनाया हुआ है। वही लगे हुए सीसीटीवी फुटेज में अज्ञात चोर एक गाड़ी के साथ नजर आ रहे हैं। सीटीवी फुटेज थाना पुलिस को भी सौंपा गया, लेकिन पुलिस का इतना सहयोग करने पर पुलिस के हाथ खाली हैं।

महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर

निविदा सूचना

विश्वविद्यालय में गोल्ड मेडल आपूर्ति हेतु निविदा जारी की गयी हैं, जिसका यूबीएन **GSU2526GSOB00047** है, जारी की गई है। निविदा से संबंधित विस्तृत जानकारी **http://sppp.rajasthan.gov.in** पर उपलब्ध है।

राज.संवाद/सी/25/14196 वित्त नियंत्रक

BHARATPUR DEVELOPMENT AUTHORITY, BHARATPUR

S. No:-Tech/BDA/2025-26/15964-75 Date :- 18-11-2025

EXPRESSION OF INTREST

Consultancy work for preparation of Detailed Project Report for Construction of BDA office building and staff quarters at Bharatpur

The Bharatpur Development Authority (BDA), Bharatpur Invites proposal for Preparation Of Consultancy work for preparation of Detailed Project Report for Construction of BDA office building and staff quarters at Bharatpur Detailed of EOI, eligibility criteria schedule and condition can be seen on https://eproc.rajasthan.gov.in from dated 19.11.2025 04:00 PM to 01.12.2025 at 4.00 pm.

UBN No.01. WAQ2526SLOB00261

राज.संवाद/सी/25/14207 Executive Engineer BDA, Bharatpur

GOVERNMENT OF RAJASTHAN
OFFICE OF THE SUPERINTENDING ENGINEER WATER RESOURCES CIRCLE AJMER

NO. 4179 Date: 13.11.2025

E-NIT NO. 08/2025-26

01 Bid are invited from interested bidders Upto 06.00 pm dated 11.12.2025 and technical bid will be opened on dated 12.12.2025 at 3.00 PM. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.raj.nic.in) of the state. The approximate value of the procurement is Rs. 148.07 Lacs.

NIB NO. WRD2526A0524
UBN- WRD2526WSOB01523
DIPR/C/16921/2025

(Onkar Berwal)
Superintending Engineer
Water Resources Circle, Ajmer

उदयपुर विकास प्राधिकरण, राजस्थान

No. :- F-2(01)Acct/Contract/2025-26/201 - 203 Date :- 18/11/2025

ई-निविदा सूचना संख्या 58/2025-26

उदयपुर विकास प्राधिकरण, उदयपुर द्वारा निम्नलिखित कार्यो मय डिफेक्ट लाईबिलिटी अवधि के लिये जो कि निविदा प्रपत्र में अंकित है के लिये उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदको से निर्धारित प्रपत्र में ई–टेण्डरिंग के माध्यम से ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है :–

निविदा कार्यो की कुल लागत	रूपये 140.00 लाख (01 कार्य)
ऑनलाईन निविदा प्रपत्र डाउनलोड / अपलोड करने की अवधि	19.11.2025 को प्रातः 10.00 बजे से 09.12.2025 को सांयः 6.00 बजे तक
Online EMD, Tender Fee & Processing Fee जमा कराने की तिथी	19.11.2025 को प्रातः 10.00 बजे से 09.12.2025 को सांयः 6.00 बजे तक
ऑनलाईन निविदा खोलने की तिथी	10.12.2025 को प्रातः 11:00 बजे

विस्तृत विवरण वेबसाईट urban.rajasthan.gov.in/uitudaipur, www.eproc.rajasthan.gov.in व www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

UBN No. : ITU2526SLOB00335

राज.संवाद/सी/25/14189 अधिशाषी अभियन्ता - प्रथम उदयपुर विकास प्राधिकरण

VARDHMAN MAHAVEER OPEN UNIVERSITY
Rawatbhata Road, Kota -324021
Examination Department

No. :- VMOU/Exam/ 2025/1269 Date :- 18/11/2025

Notice Inviting E-Tender of
"Transportation of Confidential material and blank answer copies"
NIB No. 18 Date: 18-11-2025

University invites e-tender from the registered & reputed firms for "Transportation of Confidential material and blank answer copies" for University. The Estimated cost of the tender is Rs. 80.00 lacs. Tender will be available online from 20-11-2025 up to 01-12-2025 05:00 pm. on https://eproc.rajasthan.gov.in. Last date to fill tender online is 01-12-2025 Technical bid will be opened online on 02-12-2025 at 02:00 pm The bidders must send original D.D. of Tender form fees Rs. 2000/-, processing fees Rs. 1500/- and Bid Security DD for Rs. 160,000 last upto 01-12-2025 04:00 pm at the office of the undersigned. For further details, kindly visit websites **www.vmou.ac.in, https://eproc.rajasthan.gov.in and www.sppp.raj.nic.in {UBN Number: VMU2526SLRC00021}.** If any corrigendum generated/occurred, then it will be uploaded only on the above mentioned websites.

Raj.Samwad/C/25/14194 Controller of Examinations

सशक्त बिजनेस इकोसिस्टम से राजस्थान बनेगा जी.सी.सी. एक्सीलेंस हब

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित मंत्रिमंडलीय बैठक में अनुमोदित हो चुकी है राजस्थान ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर पॉलिसी-2025

- एनसीआर, डीएमआईसी के साथ कनेक्टिविटी से जीसीसी निवेशकों को बड़े औद्योगिक केन्द्र तथा बाजारों तक पहुंच मिलेगी
- ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर के आवेदनों का निस्तारण भी त्वरित गति से होगा

जयपुर (कासं)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित मंत्रिमण्डल की बैठक में अनुमोदित राजस्थान ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर पॉलिसी-2025 प्रदेश को ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर (जीसीसी) का पसंदीदा गंतव्य स्थान बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। राज्य के प्रमुख शहरों का सशक्त बिजनेस इकोसिस्टम और किफायती ऑपरेशनल लागत के साथ-साथ नीति के अंतर्गत सब्सिडी के प्रावधान इच्छुक कंपनियों को यहां जीसीसी की स्थापना के लिए आकर्षित करते हैं।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

मुख्यमंत्री के मार्गदर्शन में राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट-2024 में लगभग 35 लाख करोड़ रुपये के एमओयू किए गए, जिनमें से लगभग 7 लाख करोड़ रुपये के एमओयू की ग्राउंड ब्रेकिंग हो चुकी हैं। आज बहुराष्ट्रीय कंपनियां प्रदेश में निवेश के लिए इच्छुक हैं। प्रदेश की बेहतर कनेक्टिविटी ने प्रदेश में निवेश के नए द्वार खोले हैं।

एनसीआर रीजन और दिल्ली-मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर (डीएमआईसी) के साथ कनेक्टिविटी राजस्थान में जीसीसी निवेशकों की पहुंच बड़े औद्योगिक केन्द्रों और बाजारों तक उपलब्ध करवा रही है। देश के बड़े शहरों की तुलना में यहां प्रमुख शहरों में साधनों एवं सेवाओं की किफायती ऑपरेशनल लागत भी सुगम बनाती है।

यह होगी आवेदन प्रक्रिया

राजस्थान ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर पॉलिसी-2025 में जीसीसी के लिए आवेदन प्रक्रिया को सुगम बनाया गया है। इच्छुक आवेदकों को राजनिवेश सिंगल विंडो पोर्टल के माध्यम से आवेदन करना होगा। प्रोजेक्ट इवैल्यूएशन कमेटी (पीईसी) इन आवेदनों की डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट का अध्ययन कर अपनी अनुशंसा प्राथमिकता से 60 दिन की समय सीमा में प्रोजेक्ट अप्रुवल कमेटी (पीएसी) को प्रस्तुत करेगी। यह अप्रुवल कमेटी भी 60 दिन की समय सीमा में अनुशंसा के आधार पर आवेदन पर निर्णय करेगी। कार्यकारी निदेशक रीको, पीईसी और प्रशासनिक सचिव उद्योग एवं वाणिज्य विभाग, पीएसी के अध्यक्ष होंगे। वहीं, जीसीसी के आवेदनों के निस्तारण के लिए उद्योग एवं वाणिज्य विभाग को नोडल विभाग बनाया गया है।

100 अरब डॉलर का लक्ष्य

राजस्थान ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर पॉलिसी-2025 वर्ष 2030 तक प्रदेश में 200 से अधिक जीसीसी स्थापित करने, 1.5 लाख रोजगार सृजित करने के साथ भारत के 100 अरब डॉलर के जीसीसी बाजार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने के लक्ष्य पर आधारित है।

इस नीति के माध्यम से जयपुर, उदयपुर, जोधपुर जैसे शहरों को जीसीसी हब के रूप में विकसित किया जाएगा।

जीसीसी स्थापना पर रिप्स का लाभ

इस नीति में जीसीसी की स्थापना के लिए राजस्थान औद्योगिक प्रोत्साहन योजना (रिप्स-2024) के प्रावधानों का लाभ दिया जाएगा। इसमें परियोजना लागत (भूमि और भवन लागत को छोड़कर) का 30 प्रतिशत या अधिकतम 10 करोड़ रुपए तक की पूंजी निवेश सब्सिडी प्रदान की जाएगी। भूमि या लीज एरिया की लागत का 50 प्रतिशत अधिकतम 1 करोड़ रुपए तक प्रतिपूर्ति लैण्ड कॉस्ट इंसेटिव के रूप में दी जाएगी। साथ ही, कर्मचारियों के वेतन पर पहले तीन वर्षों तक 30 प्रतिशत (अधिकतम 1.25 लाख प्रति कर्मचारी प्रति वर्ष) की पेरोल सब्सिडी उपलब्ध दी जाएगी। यह सब्सिडी 10 करोड़ रुपए प्रति जीसीसी प्रति वर्ष से अधिक नहीं होगी।

तीन वर्षों तक किराये में छूट मिलेगी

किराए पर संचालित इकाइयों को पहले तीन वर्षों तक किराए का 50 प्रतिशत तथा अगले दो वर्षों के लिए 25 प्रतिशत अधिकतम 5 करोड़ रुपए प्रति जीसीसी प्रति वर्ष तक रेंटल असिस्टेंस के रूप में मिलेगा। कर्मचारियों के कौशल विकास को प्रोत्साहित करने के लिए प्रशिक्षण लागत का 50 प्रतिशत अधिकतम ढाई करोड रुपए प्रति जीसीसी प्रति वर्ष तक प्रतिपूर्ति पात्रतानुसार की जाएगी। इसके साथ ही, पर्यावरण-अनुकूल नवाचारों को बढ़ावा देने के लिए ग्रीन इंसेंटिव, अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में पेटेंट, कॉपीराइट आदि की लागत पर 50 प्रतिशत सहायता, स्टांप ड्यूटी एवं बिजली शुल्क पर छूट भी प्रदान की जाएगी।

उल्लेखनीय है कि वर्ष 2024 में देश में स्थित ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर्स में लगभग 1.9 मिलियन की वर्कफोर्स नियोजित थी, जिन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था में 64.6 बिलियन डॉलर का योगदान दिया था। वर्ष 2030 तक जीसीसी इंडस्ट्री में 110 बिलियन डॉलर का योगदान अनुमानित है।

कांग्रेस को सता रही रोहिंग्या-बांग्लादेशियों की चिंता : अशोक परनामी

'चुनाव हारने पर पहले कांग्रेस ईवीएम का राग अलापती थी, अब एसआईआर का राग अलाप रही'

- 'प्रधानमंत्री मोदी ने कांग्रेस के पास कोई मुद्दा नहीं छोड़ा, इसलिए बेवजह जनता को भ्रमित कर रही है कांग्रेस'

जयपुर। भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अशोक परनामी ने विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) पर कांग्रेस द्वारा फैलाए जा रहे भ्रम और अनावश्यक विरोध पर तिखी प्रतिक्रिया दी। परनामी ने कहा कि कांग्रेस लगातार बुरी तरह हारती जा रही है, फिर चाहे हरियाणा हो, महाराष्ट्र हो, दिल्ली हो या फिर बिहार चुनाव। कांग्रेस का जनाधार लगातार बुरी तरह गिरता जा रहा है। कांग्रेस पहले ईवीएम पर राग अलापती थी, सर्वोच्च न्यायालय के स्पष्टीकरण के बाद कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों ने ईवीएम को छोडकर अब एसआईआर पर राग अलापना शुरू कर दिया। हार के बाद कांग्रेसी नेता घबरा गए है, उन्हें उनके बांग्लादेशी, रोहिंग्या घुसपेठियों की चिंता सता रही है।

उन्होंने कहा कि केवल विरोध करना, आंदोलन करना विपक्ष का काम नहीं है। विपक्ष को विकास के लिए आंदोलन करना चाहिए, लेकिन देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विपक्ष के पास कोई मुद्दा ही नहीं छोड़ा। ऐसे में मुद्दा विहीन कांग्रेस बेवजह जनता को भ्रमित करने का कामकर रही है।

भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अशोक परनामी ने कहा कि राहुल गांधी और कांग्रेस को आंदोलन करने की बजाए बिहार चुनाव में बुरी तरह हार की समीक्षा करनी चाहिए। जनता कांग्रेस के साथ नहीं, मोदी के साथ है, यह समझना चाहिए। राजधानी जयपुर में युवा कांग्रेस का तथाकथित आंदोलन महज चंद मिनटों में समाप्त हो गया और फ्लोप शो शाबित हुआ। यह बताता है कि देश की जनता, युवा अब कांग्रेस के साथ नहीं है, ना ही कांग्रेस के बहकावे में आनी वाली है।

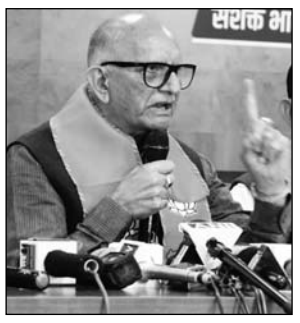

अशोक परनामी

परनामी ने एसआईआर को लेकर कहा कि एसआईआर का उद्देश्य केवल और केवल मुक्त, निष्पक्ष और पारदर्शी चुनाव सुनिश्चित करना है। यह प्रक्रिया मतदाता सूची को अधिक शुद्ध बनाने के लिए चलाई जा रही है, जिसके तहत मृतकों, प्रवासियों, गलत पते वालों और दोहरी प्रविष्टियों को हटाया जाता है ताकि केवल पात्र मतदाता ही सूची में रह सकें।

पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अशोक परनामी ने आरोप लगाया कि एसआईआर से कांग्रेस को जो भय सता रहा है, वह नाम जुड़ने का नहीं, बल्कि कांग्रेस के फर्जी वोटरों के नाम कटने का है। कांग्रेस को पहले एसआईआर को पढना और समझना चाहिए। एसआईआर से होने वाले नफा नुकसान को समझना चाहिए लेकिन कांग्रेस अपने नुकसान की चिंता कर रही है। एसआईआर अयोग्य मतदाताओं को हटाने और बढ़ती अनियमितताओं पर रोक लगाने का एक सशक्त माध्यम है।

परनामी ने कहा कि अशोक गहलोत भजनलाल सरकार के दो वर्षों के विकास कार्यों को पचा नहीं पा रहे है। आज डबल इंजन सरकार राजस्थान में विकास के नए आयाम स्थापित कर रही है, और आने वाले तीन सालों में विकसित राजस्थान के लिए आयाम स्थापित किए जाएंगे।

उन्होंने कहा कि, गहलोत के कार्यकाल में पेपरलीक हुए, युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ हुआ, जबकि भजनलाल सरकार के 2 साल के कार्यकाल में एक भी पेपर लीक नहीं हुआ। गहलोत 5 साल तक ईआरसीपी पर कुंडली मारकर बैठे रहे, जबकि भजनलाल शर्मा ने इस अमृत योजना को धरातल पर उतारने का काम किया। भजनलाल सरकार ने राइजिंग राजस्थान में 35 लाख करोड के एमओयू साइन किए और करीबन 7 लाख करोड के निवेश धरातल पर उतारे, जबकि गहलोत ने निवेश के नाम पर जनता से धोखा किया। गहलोत पूरे 5 साल अपने ही लोगों से सरकार बचाने में लगे रहे, जबकि जनता की सेवा, विकास कार्यों को उन्होंने नजर अंदाज किया। गहलोत भ्रष्टाचार में आकंठ तक डूबे हुए और होटलों से सरकार चलाते रहे। अब भजनलाल शर्मा सरकार के जनकल्याण, जनहितैषी कार्यों को गहलोत पचा नहीं पा रहे है। प्रेसवार्ता में भाजपा प्रदेश महामंत्री श्रवण सिंह बगडी, भाजपा कार्यालय प्रभारी मुकेश पारीक और भाजपा युवा मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष अंकित चेची उपस्थित रहे।

जेडीए बताए पीआरएन के जोनल ऑफिस का कितना निर्माण कार्य हो चुका

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट की खंडपीठ ने मानसरोवर स्थित पत्रकार कॉलोनी के सामुदायिक केन्द्र के भवन में पृथ्वीराज नगर का जोनल ऑफिस खोलने को चुनौती देने के मामले में जेडीए से एक सप्ताह में यह पूछा है कि जोनल ऑफिस के निर्माण की मौजूदा स्थिति क्या है, कितना निर्माण कार्य हो चुका है। जस्टिस महेन्द्र गोयल व बीएस संधू की खंडपीठ ने यह आदेश गुरुवार को एसएस शर्मा व अन्य की जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।इससे पहले हुई सुनवाई में खंडपीठ ने जेडीए से पूछा था कि वह इस ऑफिस को शिफ्ट करने का प्लान दें और बताएं कि इसे कहां शिफ्ट किया जाएगा। वहीं राज्य सरकार को भी कहा था कि वह भी जोनल ऑफिस के लिए जेडीए को जगह मुहैया कराए। हाईकोर्ट के निर्देश पर राज्य सरकार ने पीआरएन के जोनल ऑफिस के लिए वेस्टवे हाईट्स में 2624 वर्गमीटर जमीन आवंटित की। वहीं इस जमीन पर निर्माण के लिए वर्क आर्डर जारी कर निर्माण कार्य शुरू किया गया। दरअसल इस पीआईएल में पत्रकार कॉलोनी के सामुदायिक भवन में जेडीए का जोनल ऑफिस खोलने को चुनौती दी है।

राजस्थान विधानसभा में विधायक अब करेंगे ''डिजिटल हस्ताक्षर''

वासुदेव देवनानी के स्पीकर बनने के बाद राजस्थान विधानसभा की डिजिटल यात्रा में एक और नया अध्याय जुड़ा

- डिजिटल उपस्थिति दर्ज करने के लिए विधानसभा सचिवालय ने एक एप्लीकेशन भी तैयार की है, जिसका प्रशिक्षण दिया जा रहा है

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर । राजस्थान विधानसभा की डिजिटल यात्रा में एक और नया अध्याय जुड़ रहा है। राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी द्वारा किए जा रहें नवाचारों के तहत राज्य विधानसभा सचिवालय में होने वाली समितियों की बैठकों में माननीय सदस्यों की उपस्थिति अब आईपैड पर डिजिटल रूप से दर्ज होगी। पूर्व में यह उपस्थिति हस्ताक्षर मैन्युल ढंग से दर्ज किए जाते थे।

डिजिटल उपस्थिति दर्ज करने के लिए विधानसभा सचिवालय द्वारा एक एप्लीकेशन तैयार कर ली गई है। विधानसभा के उप सचिवों और समस्त सहायक सचिवों को इस एप्लीकेशन के प्रयोग के लिए प्रशिक्षण दिया गया है। साथ ही विधान सभा के सभी सदस्यों को इसकी जानकारी देने के लिए एक बुलेटिन भी जारी किया जा रहा है।

इसके अलावा विधानसभा की सभी समितियों की बैठकों के लिए

विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी

बैठक दिवस पर आई पेड उपलब्ध कराने तथा दो समितियों के मध्य पेंसिल शेयर करने के निर्देश भी जारी किए जा रहें है। समिति की बैठक के पश्चात प्रतिदिन आईपैड पुन: विधानसभा सचिवालय में जमा कराने होंगे।

उल्लेखनीय है कि राजस्थान विधान सभा के डिजिटलाइजेशन के तहत सभी 200 माननीय सदस्यों की सीटों पर आई पेड लगाए गए है और विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी की पहल पर वन नेशन वन एप्लीकेशन के तहत ई- विधान एप्लीकेशन नेवा का उपयोग राजस्थान विधान सभा को डिजिटल बनाये जाने के लिए किया जा रहा है। इससे विधान सभा के सदन से संबंधित विधेयक, रिपोर्टस, वीडियो आदि मीडिया अनुसंधानकर्ता और आम नागरिक को अब सरलता से ऑन लाईन उपलब्ध हो रहे है। केन्द्र सरकार द्वारा राज्यों की विधान सभाओं को डिजिटल बनाए जाने के लिए वन नेशन-वन एप्लीकेशन के तहत नेशनल ई- विधान एप्लीकेशन का उपयोग कर राजस्थान विधान सभा सदन और सचिवालय को डिजिटल किया गया है। इससे पर्यावरण की रक्षा एवं समय की बचत के लिए विधान सभा और सचिवालय की कार्यवाही पेपरलेस गई है। ई- विधान ऐप एन्ड्रायड और आई. ओ.एस दोनों तरह के मोबाइल पर संचालित हो रहे है। नेवा के तहत सदन की कार्यवाही विवरण, सदन में रखे जाने वाले पेपर्स, विधेयकों से सम्बन्धित जानकारी समितियों की रिपोर्ट, प्रश्न और उनपके जवाब, बुलेटिन, कार्यवाही विवरण, डिजिटल लाइब्रेरी, सूचनाएं और सदस्यों से सम्बन्धित जानकारी एक ही एप्लीकेशन में उपलब्ध हो रही है। इसके साथ ही राजस्थान विधान सभा का ई-बुलेटिन भी जारी किया जा रहा है। साथ ही अन्य कई नवाचार भी किये गये है।

जंगली जानवरों द्वारा फसल नुकसान को 'स्थानीयकृत जोखिम' के रूप में मान्यता मिली

इसके साथ ही धान जलभराव को भी स्थानीयकृत आपदा श्रेणी में पुन: शामिल किया गया

- कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने देश के अननदाताओं को बड़ी सौगात दी
- इस प्रावधान का लाभ तटीय, हिमालयी और उत्तर-पूर्वी राज्यों के किसानों को मिलेगा

जयपुर (कासं)। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत अन्नदाताओं को बड़ी सौगात दी है। मंत्रालय ने जंगली जानवरों द्वारा फसलों के नुकसान और धान जलभराव को कवर करने के लिए नई प्रक्रियाओं को औपचारिक रूप से मान्यता दे दी है।

संशोधित प्रावधानों के अनुसार, जंगली जानवरों द्वारा फसल नुकसान को स्थानीयकृत जोखिम श्रेणी के पाँचवें 'ऐड-ऑन कवर' के रूप में मान्यता दी गई है।

राज्य सरकारें जंगली जानवरों की सूची अधिसूचित करेंगी तथा ऐतिहासिक आंकड़ों के आधार पर अत्यधिक प्रभावित जिलों/लोंबीमा इकाइयों की पहचान करेंगी। किसान को फसल नुकसान की सूचना 72 घंटे के भीतर फसल बीमा ऐप पर जियो-टैग्ड फोटो के साथ दर्ज करनी होगी। इसे खरीफ 2026 से पूरे देश में लागू किया जायेगा।

इस प्रावधान का सबसे अधिक लाभ ओडिशा, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, उत्तराखंड तथा हिमालयी और उत्तर-पूर्वी राज्यों जैसे असम, मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, सिक्किम और हिमाचल प्रदेश के किसानों को होगा, जहाँ जंगली जानवरों द्वारा फसल क्षति एक प्रमुख चुनौती है।

ज्ञात रहे कि देशभर में किसान लंबे समय से हाथी, जंगली सूअर, नीलगाय, हिरण और बंदरों जैसे जंगली जानवरों के हमलों के कारण बढ़ते फसल नुकसान का सामना कर रहे हैं। यह समस्या मुख्यत: वन क्षेत्रों, त्रों वन गलियारों और पहाड़ी इलाकों के निकट बसे किसानों में अधिक देखी जाती है। अब तक ऐसे नुकसान फसल बीमा योजना के दायरे में नहीं आते थे, जिसके कारण किसानों को भारी आर्थिक हानि उठानी पड़ती थी।

ऐसे में कृषि एवं किसान कल्याण विभाग ने एक विशेषज्ञ समिति गठित की। समिति की रिपोर्ट को कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा स्वीकृति प्रदान कर दी गई है। इस महत्वपूर्ण निर्णय के साथ अब स्थानीय स्तर पर फसल नुकसान झेलने वाले किसानों को समयबद्ध और तकनीक-आधारित दावा निपटान का लाभ मिलेगा।

धान जलभराव को स्थानीयकृत आपदा श्रेणी में पुन: शामिल किए जाने से तटीय और बाढ़ संभावित राज्यों जैसे ओडिशा, असम, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक,महाराष्ट्र और उत्तराखंड के किसानों को प्रत्यक्ष लाभ मिलेगा, जहाँ जलभराव से धान की फसल का नुकसान हर वर्ष दोहराया जाता है।

ऑक्शन खानों को परिचालन में लाने के लिए टाइम लाइन तय : पीयूष गोयल

केन्द्रीय खान सचिव ने जयपुर में एलओआईधारकों से बातचीत की

- भविष्य में नीलाम होने वाले माइनिंग ब्लॉकों के नीलामी से पहले ही चरागाह, वन कन्वर्जन आदि इसी तरह की आने वाली समस्याओं को दूर करते हुए ब्लॉक बनाने के प्रयास किए जाएंगे : टी. रविकांत

जयपुर (कासं)। केन्द्रीय खान सचिव पीयूष गोयल ने कहा है कि विकसित भारत 2047 के सपने को साकार करने के लिए देश का माइनिंग सेक्टर नई उर्जा और गति के साथ आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि माइनिंग सेक्टर को आगे बढ़ाने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा लगातार कानून कायदों को व्यावहारिक बनाने के साथ ही टाइमलाईन तय की गई है जिससे खानों की नीलामी के बाद खानों के परिचालन में लाने में लगने वाले समय को कम किया जा सके। उन्होंने साफ किया कि इसके लिए सरकारी स्तर पर देरी होती है तो उसके लिए और एलओआई स्तर पर देरी होती है तो उसके लिए दण्डात्मक प्रावधान किये गये हैं।

केन्द्रीय खान सचिव पीयूष गोयल ने गुरूवार को जयपुर में आरआईसी में प्रमुख सचिव खान टी. रविकान्त के साथ एलओआईधारकों से बातचीत की।

केन्द्रीय खान सचिव पीयूष गोयल गुरुवार को आरआईसी में प्रमुख सचिव खान टी. रविकान्त के साथ एलओआईधारकों से रुबरु हो रहे थे। उन्होंने कहा कि नए प्रावधानों में एलओआई धारकों द्वारा जितनी जल्दी खानों को परिचालन में लाया जाएगा उतना ही अधिक लाभ खानधारकों को होगा। उन्होने कहा कि इसके लिए प्रोत्साहन के प्रावधान किये गये हैं।

गोयल ने राजस्थान में मेजर मिनरल माइंस के ऑक्शन और प्री एम्बेडेड खानों की ऑक्शन प्रक्रिया शुरु करने की सराहना करते हुए कहा कि आने वाले समय में राजस्थान माइनिंग सेक्टर से रेवेन्यू के क्षेत्र में भी अग्रणी प्रदेश बन जाएगा। उन्होंने आवश्यक अनुमतियां प्रदान करने वाली संस्थाओं से व्यावहारिक रुख अपनाने की आवश्यकता प्रतिपादित की वहीं प्रीएम्बेडेड की तर्ज पर ही पुरानी नीलाम खानों को परिचालन में लाने के लिए राज्य सरकार स्तर से भी सहयोग और मार्गदर्शन पर जोर दिया। उन्होंने एलओआईधारकों से भी आवश्यक औपचारिकता पूरी करने में अनावश्यक देरी नहीं करने का स्पष्ट संदेश दिया। उन्होंने कहा कि एलओआईधारकों से संवाद कायम करने के लिए यह बैठक आयोजित की गई है।

प्रमुख सचिव खान टी. रविकान्त ने बताया कि राजस्थान में 112 मेजर मिनरल ब्लॉकों की नीलामी की जा चुकी है। भविष्य में नीलाम होने वाले माइनिंग ब्लॉकों के नीलामी से पहले ही चरागाह, वन कन्वर्जन आदि इसी तरह की आने वाली समस्याओं को दूर करते हुए ब्लॉक बनाने के प्रयास किए जाएंगे जिससे आवश्यक अनुमतियां प्राप्त करने मे एलओआई धारक अनावश्यक परेशानियों से बच सके।

श्री रविकान्त ने बताया कि इस वर्ष 21 ब्लॉकों की सफल नीलामी हो चुकी हैं और 8 प्री एम्बेडेड ब्लॉकों सहित 26 ब्लॉकों की नीलामी प्रक्रिया जारी है। उन्होंने बताया कि राजस्थान विपुल और विविध प्रकार के खनिज संपदा वाला प्रदेश हैं।

राज्य सरकार द्वारा माइनिंग सेक्टर को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं। नई खनिज नीति, एम. सेण्ड नीति के साथ ही प्रक्रिया को सरल किया गया है। इसके साथ ही एलओआईधारकों को सहयोग व मार्गदर्शन के लिए अलग से सेल बनाया गया है। उन्होंने कहा कि एलओआईधारकों व संबंधित संस्थाओं के बीच बेहतर समन्वय के लिए दो कार्यशालाएं आयोजित की जा चुकी हैं वहीं निरन्तर मोनेटरिंग की जा रही है।

केन्द्रीय खान उप सचिव आशीष सक्सेना, पीसीएफ पीके उपाध्याय, अरुण प्रसाद, सदस्य सचिव सीया विजय एन, निदेशक माइंस महावीर प्रसाद मीणा, संयुक्त सचिव माइंस अरविन्द सारस्वत, उप सचिव राजस्व, आईबीएम के अभय अग्रवाल, अतिरिक्त निदेशक महेश माथुर, एडीजी आलोक प्रकाश जैन सहित विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ ही एलओआईधारकों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

आबकारी आयुक्त और वित्त सचिव आकर बताए इंटरनेशनल प्लेयर को क्यों नहीं दी नियुक्ति?

- राजस्थान हाइकोर्ट ने अंतर्राष्ट्रीय पैरा खिलाड़ी को आउट ऑफ टर्न अपॉइंटमेंट रूल्स, 2017 के तहत सहायक आबकारी अधिकारी के पद पर नियुक्ति नहीं देने पर नाराजगी जताई

जयपुर (कासं)। राजस्थान हाइकोर्ट ने अंतर्राष्ट्रीय पैरा खिलाड़ी को आउट ऑफ टर्न अपॉइंटमेंट रूल्स, 2017 के तहत सहायक आबकारी अधिकारी के पद पर नियुक्ति नहीं देने पर नाराजगी जताई है। इसके साथ ही अदालत ने मामले में आबकारी आयुक्त और वित्त सचिव को 26 नवंबर को व्यक्तिगत रूप से पेश होने के आदेश दिए हैं। अदालत ने दोनों अफसरों से पूछा है कि पैरालंपिक सहित अन्य प्रतियोगिताओं में देश का प्रतिनिधित्व करने वाले याचिकाकर्ता को नियुक्ति की सिफारिश के बावजूद नियुक्ति क्यों नहीं दी गई। जस्टिस अशोक कुमार जैन की एकलपीठ ने यह आदेश निहाल सिंह की याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान अदालत ने कहा की गत सुनवाई पर राज्य सरकार की ओर से मामले में सकारात्मक निर्णय लेकर 2 सप्ताह में अदालत में जानकारी पेश करने को कहा था, लेकिन राज्य सरकार की ओर से तय अवधि में कोई जानकारी नहीं दी गई।

याचिका में अधिवक्ता तनवीर अहमद ने बताया की याचिकाकर्ता 26 वर्षीय अंतर्राष्ट्रीय पैरा एथलीट है और 41 फीसदी लोकोमोटर दिव्यांग है। याचिका में कहा गया कि उसने एशियन पैरा गेम्स, 2023 और पेरिस पैरालंपिक, 2024 में प्रतिनिधित्व करते हुए कई विश्व पैरा शूटिंग प्रतियोगिताओं में करीब 20 मैडल जीते हैं।

इनमें वर्ल्ड चैम्पियनशिप गोल्ड मैडल भी शामिल है। राज्य के खेल विभाग ने 29 सितंबर, 2023 को आउट ऑफ टर्न अपॉइंटमेंट रूल्स, 2017 के तहत उसका ए श्रेणी में चयन करते हुए उसे सहायक आबकारी अधिकारी की साल 2023-24 की रिक्तियों के विरुद्ध नियुक्ति देने की सिफारिश की। इसमें कहा गया कि यदि पद रिक्त नहीं हैं तो पद का सृजन मान लिया जाए। इस पत्र को 11 अक्टूबर, 2023 को आबकारी विभाग को भेजा गया, लेकिन विभाग ने दिव्यागों के लिए पदों की पहचान नहीं होने का हवाला देते हुए अब तक उसे नियुक्ति नहीं दी। याचिका में बताया गया की राज्य दिव्यांग आयोग में आबकारी विभाग ने स्वीकार किया है कि बीते तीन सालों से दिव्यागों के लिए कोई भी पद पहचान प्रक्रिया नहीं की गई है, यह भी दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 की धारा 33 और धारा 34 के साथ ही इस संबंध में साल 2018 में बनाए नियमों के खिलाफ है।

याचिका के अदालत को बताया गया कि याचिकाकर्ता के समान मामले में पूर्व में अन्य पैरा एथलीट अवनी लखेरा,सुंदर गुर्जर और देवेंद्र झाझडिया को एसीएफ के पद पर नियुक्ति दी गई थी, जबकि उस समय भी वह पद दिव्यागों के लिए निर्धारित नहीं था। याचिकाकर्ता ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देश का मान बढ़ाया है, लेकिन अफसरों की उपेक्षा के कारण उसे आजीविका और सम्मान से वंचित किया जा रहा है। जिस सुनवाई करते हुए अदालत ने दोनों अधिकारियों को हाजिर होकर जवाब देने को कहा है।

अलवर : भूमाफिया की अवैध कॉलोनी पर चला यूआईटी का बुलडोजर

50 बीघा सहारा वाली जमीन पर अवैध कॉलोनी को ध्वस्त किया

अलवर, (निसं)। अलवर में गुरुवार को यूआईटी ने बड़ी कार्रवाई करते हुए दिल्ली-नेशनल हाईवे से सटी लगभग 50 बीघा कृषि भूमि पर की गई अवैध प्लाटिंग को ध्वस्त कर दिया। यह जमीन हिंगराज कंपनी के नाम से रजिस्टर्ड है, जिसे स्थानीय लोग सहारा वाली जमीन के नाम से भी जानते हैं। भूमाफियाओं ने बिना यूआईटी से अनुमति लिए इस पूरे क्षेत्र में बड़े-बड़े प्लॉट काट दिए थे। 60-60 फीट चौड़ी कच्ची सड़कें बनाकर तीन बड़े एंट्री गेट भी तैयार किए गए थे। कुछ प्लॉट तो एग्रीमेंट पर बेच भी दिए गए थे। सूचना पर गुरुवार को यूआईटी की टीम पांच बुलडोजर, महिला पुलिस और करीब 10 जवानों के साथ दिवाकर के पास हाईवे किनारे पहुंची और पूरे अवैध लेआउट को ध्वस्त करना शुरू किया। टीम के पहुंचते ही भूमाफिया मौके से फरार हो गए। कार्रवाई के दौरान सभी प्लॉटों की कच्ची सड़कें खुदवा दी गई, तीनों एंट्री गेट तोड़ दिए गए और रास्तों में गड्ढे डालकर उन्हें बंद कर दिया गया।

अलवर में यूआईटी ने हाईवे से सटी कृषि भूमि पर की गई अवैध प्लाटिंग को ध्वस्त कर दिया।

बिजली पोल शिफ्टिंग के दौरान विवाद : डूंगरपुर कोतवाली थाना क्षेत्र के भंडारिया में मुख्यमंत्री जन आवास योजना के पास बिजली पोल शिफ्टिंग के दौरान बड़ा विवाद हो गया। इस विवाद में लेबर, बिजली निगम के लाइनमैन और पातापुर जीएसएस के कर्मी शामिल थे। घटना का एक वीडियो सामने आया है, जिसमें जीएसएस कर्मी एक लेबर को थप्पड़ मारते हुए दिखाई दे रहा है।

मुख्यमंत्री जन आवास योजना के कार्यस्थल पर सड़क के बीच लगे बिजली के पोल को शिफ्ट किया जा रहा था। इस कारण भंडारिया फीडर की बिजली करीब एक घंटे तक बंद रही। काम रात के अंधेरे तक जारी रहा। इसी दौरान लाइनमैन लालशंकर और पातापुर जीएसएस का ठेकाकर्मी राजू मौके पर पहुंचे, जहां राजू ने एक लेबर को थप्पड मार दिया। यह घटना 7 सेकंड के वीडियो में स्पष्ट दिखाई देती है। विवाद की जानकारी मिलते ही डूंगरपुर एईएन आशीष मिश्रा तुरंत मौके पर पहुंचे। उन्होंने बताया कि उन्हें विवाद की सूचना मिली थी और वे जांच कर रहे हैं कि लेबर और अन्य कर्मियों के बीच झगड़ा किस कारण हुआ। जांच पूरी होने के बाद उचित कार्रवाई की जाएगी।

लाइनमैन लालशंकर ने कहा ठेकेदार के लेबर ने काफी समय से लाइन बंद करवा रखी थी, जिससे लोगों के लगातार फोन आ रहे थे और इससे स्थिति तनावपूर्ण हो गई।

नशे की हालत में झूठी सूचना देने वाला आरोपी गिरफ्तार

पावटा, (निसं)। विराटनगर थाने में मंगलवार को दर्ज कराए गए लूट के प्रकरण का खुलासा करते हुए पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार किया है।

जिला कोटपुतली-बहरोड़ पुलिस अधीक्षक देवेंद्र बिश्नोई ने जानकारी देते हुए बताया कि 18 नवंबर मंगलवार को राजू बावरिया ने विराटनगर थाने में

- **स्कॉर्पियो में अज्ञात व्यक्तियों द्वारा लूट की घटना निकली झूठी**

मामला दर्ज करवाया कि एक वाहन स्कॉर्पियो में सवार अज्ञात व्यक्तियों ने उसके साथ मारपीट कर 4.50 लाख रूपये लूट लिए। घटना की गंभीरता को देखते हुए त्वरित एवं प्रभावी कार्यवाही के निर्देशों की पालना में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कोटपूतली वैभव शर्मा के निर्देशन व कार्यवाहक वृत्ताधिकारी वृत्त विराटनगर राजेंद्र बुरड़क के सुपरविजन एवं विराटनगर थाना प्रभारी सोहनलाल के नेतृत्व में टीम का गठन कर वारदात वाली घटना स्थल का बारीकी से निरीक्षण कर, आस-पड़ोस से पूछताछ की। घटना करने वाले वाहन की तलाश करते हुए विराटनगर थाना क्षेत्र से थानागाजी व मनोहरपुर जाने वाले रास्तों की सीसीटीवी फुटेज खंगालते गए। राजू बावरिया से लूट की घटना के बारे में गहनता से पूछताछ की गई तो उसने बताया कि मैं व मेरा भांजा फैलीराम अलवर तिराहा से पिकअप गाड़ी में बीयर पीते हुए आ रहे थे। नवरंगपुरा के आगे पहुंचे तो सामने से आ रही स्कार्पियो की तरफ साइड दब गई। जिस पर स्कॉर्पियो में सवार दो लोगों ने मेरे साथ मारपीट कर दी। जिस पर मैंने उनको फंसाने के लिए प्लानिंग कर स्कॉर्पियो गाड़ी वाले अज्ञात व्यक्तियों द्वारा कर 4 लाख 50 हजार रूपये लूट कर ले जाने की शराब के नशे में झूठी सूचना दी, जिस पर लूट की घटना में सत्यता की जांच कर झूठी सूचना पाए जाने पर राजू बावरिया पुत्र कालूराम बावरिया निवासी वार्ड न.37 कल्याणपुरा थाना मनोहरपुर को गिरफ्तार किया गया।

पुलिस ने लूट की झूटी सूचना देने वाले को गिरफ्तार किया।

धौलपुर में ग्रामीण डिजिटल लाइब्रेरी के निर्माण कार्य का शुभारंभ

धौलपुर/जयपुर। धौलपुर जिले के कछपुरा आंगई में गुरूवार को आईआईएफसीएल एवं जिला परिषद धौलपुर के सहयोग से ग्रामीण डिजिटल लाइब्रेरी के निर्माण कार्य का शुभारंभ हुआ। यह पहल विकसित भारत के

- **शिक्षा की शक्ति से ग्रामीण विकास को नई दिशा : प्रबंध निदेशक, आईआईएफसीएल**

विज़न को ग्रामीण विकास के माध्यम से साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जिसमें शिक्षा को आधार स्तंभ माना गया है।

कार्यक्रम में आईआईएफसीएल के प्रबंध निदेशक पलाश श्रीवास्तव ने कहा कि ग्रामीण भारत ही हमारे देश की असली ताकत है। यदि गांवों के बच्चे डिजिटल लाइब्रेरी से जुड़ जाएँ तो वे किसी भी बड़े शहर के बच्चों से कम नहीं रहेंगे। उन्होंने इस बात पर विशेष जोर दिया कि पढ़ाई और तकनीक तक बराबर पहुंच हर बच्चे का अधिकार है। उन्होंने सड़क सुरक्षा पर विशेष जोर देते हुए कहा कि हमारे युवा नियमों का पालन कर सड़क दुर्घटनाओं से बचे और दूसरो को भी जाग्रत करें। हेलमेट, सीट बेल्ट और सड़क के नियमों का पालन कर हम सड़क दुर्घटना कम कर सकते हैं।

श्रीवास्तव ने आगे कहा कि शिक्षा सिर्फ किताबों तक सीमित नहीं है बल्कि यह नए अवसरों की कुंजी है। डिजिटल लाइब्रेरी का उद्देश्य गांव के हर बच्चे, खासकर लड़कियों को वह मंच देना है, जहाँ से उनका सपना ऊँचाई छू सके। हम चाहते हैं कि यह लाइब्रेरी सिर्फ पढ़ने की जगह नहीं बल्कि बच्चों के सपनों को उड़ान देने का केंद्र बने।

आईआईएफसीएल जिला परिषद के साथ साझेदारी करके धौलपुर जिले के कई गांवों में ऐसी आधुनिक डिजिटल लाइब्रेरी स्थापित कर रहा है, जिनमें कंप्यूटर लैब, डिजिटल टीवी, वाई-फाई, आरामदायक फर्नीचर सहित बच्चों के विकास हेतु कॅरियर काउंसलिंग के साथ कई सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएंगी।

जिला परिषद सीईओ आव्हाद निवृत्ति सोमनाथ ने इस परियोजना को ग्रामीण शिक्षा में एक नई क्रांति बताते हुए कहा कि यह डिजिटल लाइब्रेरी संविधान घर के नाम से जानी जाएगी, जिससे ग्रामवासियों में संवैधानिक मूल्यों के प्रति समझ, डिजिटल इंडिया में सहभागिता, जनभागीदारी के साथ सामुदायिक स्वामित्त्व की भावना, रोज़गार और कौशल विकास में मदद, शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार जिससे ग्रामीणों के जीवन में भविष्य में दूरगामी स्थायी बदलाव देखने को मिलेंगे।

इस मिशन का उद्देश्य जन-भागीदारी के साथ महिलाओं और छात्राओं को सशक्त बनाना है। लड़कियां भी अपने गांव में दूसरी लड़कियों के लिए आदर्श बनेगी, जो गांव से देश-प्रदेश का नाम रोशन करेंगी। कार्यक्रम में जिला परिषद से पवन कुमार, गौरव सिंघल, ऐश्वर्य मुद्गल एवं आईआईएफसीएल की ओर से सुबोध शर्मा, विकास अधिकारी गिर्राज, रामलखन मीणा, किशन सिंह, धर्मेंद्र, समीप की अनेक ग्राम पंचायतों के गणमान्य, युवा तथा विद्यार्थियों ने भागीदारी निभाई।

आईआईएफसीएल के प्रबंध निदेशक पलाश श्रीवास्तव समेत अतिथियों ने निर्माण कार्य का शुभारंभ किया।

पत्नी ने की आत्महत्या, आहत पति ने भी पुत्र को फंदे पर लटकाकर खुदकुशी की

उदयपुर, (कासं)। ऋषभदेव कस्बे के मसारों की ओवरी गांव में महिला द्वारा फांसी का फंदा लगा आत्महत्या करने से आहत पति ने पुत्र को फंदे पर लटका कर स्वयं भी फांसी के फंदे पर लटक गया। सुसाइड नोट में पत्नी के आत्महत्या करने से सुसाइड करने की बात लिखी है।

पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार ऋषभदेव थाना क्षेत्र मसारों की ओवरी गांव में बुधवार रात में शारदा पत्नी जगदीश ने अपने मकान में फांसी लगा आत्महत्या कर ली। इसका पता चलने पर जगदीश पुत्र अमरा ने अपने

- **सुसाइड नोट में पत्नी के आत्महत्या करने से सुसाइड करने की बात लिखी है**

पुत्र हिमांशु उर्फ हेमु को फांसी के फंदे पर लटकाने के बाद स्वयं ने फांसी लगा आत्महत्या कर ली। जगदीश पेट्रोल पंप पर काम कता था, जिसका वर्ष 2017 में कल्याणपुर रजोल गांव निवासी शारदा के साथ विवाह हुआ था। घटना वाले दिन जगदीश नौकरी पर गया था एवं उसके माता-पिता कानुवाड़ा गांव में करियावर में गए थे। सांय घर लौटने पर किवाड़ बंद था। पड़ोसियों को बुलाकर किवाड़ तोड़ कर देखा तो शारदा जमीन पर मृत हालत में पड़ी थी एवं जगदीश व हिमांशु फंदे पर लटके हुए थे।

इसकी सूचना मिलने पर पुलिस उप अधीक्षक ऋषभदेव राजीव राहर, ऋषभदेव एसडसीएम एवं तहसीलदार मय जाप्ता मौके पर पहुंचे। जहां मृतक जगदीश के पास मिले सुसाइड नोट में पत्नी द्वारा आत्महत्या करने से परेशान होकर आत्महत्या करने की बात लिखी थी। पुलिस ने मृतकों को फंदे से निचे उतार कर ऋषभदेव चिकित्सालय मोर्चरी में रखवाया। गुरूवार को मृतका शारदा के पीहर कल्याणपुर के रजोल गांव से परिजनों को बुलवा कर उनकी मौजूदगी में मृतकों का मेडिकल बोर्ड से पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया। पुलिस ने हत्या का मामला दर्ज कर जांच शुरू की। प्रारंभिक अनुसंधान में पता चला कि पत्नी को फंदे पर लटका हुआ देख जगदीश अपने पुत्र को ऋषभदेव स्कूल से लेकर घर लाकर उसे फंदे पर लटका कर स्वयं फांसी पर लटकने की संभावना जताई जा रही है।

आधार केंद्र पर अवैध वसूली को लेकर लोगों का हंगामा

भीलवाड़ा, (निसं)। महिला एवं बाल विकास विभाग के कार्यालय में संचालित आधार केंद्र पर गुरुवार को अवैध वसूली को लेकर लोगों ने हंगामा कर दिया।

जानकारी के अनुसार कार्यालय परिसर में चल रहे आधार केंद्र पर नए आधार कार्ड से लेकर आधार अपडेट तक के कार्य किए जा रहे हैं, लेकिन केंद्र पर तैनात युवक द्वारा निर्धारित सरकारी शुल्क से दोगुनी राशि वसूलने का आरोप सामने आया है। मौके पर मौजूद लोगों ने बताया कि आधार अपडेट का सरकारी शुल्क 75 रुपए तय है, जबकि संचालक लोगों से 150 रुपए वसूल रहा था। इस दौरान कई लोगों ने ऑनलाइन पेमेंट के सबूत भी दिखाए, जिसके बाद वहां मौजूद आमजन में आक्रोश फैल गया और उन्होंने पूरे घटनाक्रम का वीडियो बनाकर अवैध वसूली का विरोध शुरू कर दिया। लोगों का कहना था कि सरकारी कार्यालय में बैठकर इस तरह मनमानी करना आमजन के साथ खुली लूट है। मामले की जानकारी कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष विकास सुवालका तक पहुंची, जिन्होंने तुरंत उपखंड अधिकारी को शिकायत दर्ज कराई।

अवैध वसूली के इस प्रकरण ने विभागीय कार्यप्रणाली पर भी सवाल खड़े कर दिए हैं। आमजन ने मांग की है कि आधार केंद्र की नियमित जांच हो और भविष्य में ऐसी मनमानी पर सख्त रोक लगाई जाए।

उपखंड अधिकारी संजना जोशी ने बताया कि उन्हें इस प्रकार की शिकायत मिली है। संबंधित व्यक्ति को नोटिस जारी कर स्पष्टीकरण मांगा जाएगा। उन्होंने कहा कि जांच के बाद दोषी पाए जाने पर उचित कार्रवाई की जाएगी।

युवती लापता

श्रीगंगानगर, (निसं)। जिले के ग्रामीण इलाके में यूनिवर्सिटी में पढ़ाई कर रही एक युवती के लापता हो जाने का मामला सामने आया है। लड़की परिजनों को घर से यूनिवर्सिटी जाने का कहकर निकली थी, लेकिन वापस घर नहीं लौटी। सदर थाना पुलिस को दी शिकायत में युवती के पिता ने बताया कि उसकी 21 साल की लड़की घर से लापता हो गई। लड़की रीको स्थित टांटिया यूनिवर्सिटी में एलएलबी की पढ़ाई कर रही थी। लड़की 17 नवंबर की सुबह 9:30 बजे यूनिवर्सिटी में जाने का कहकर घर से निकली थी, लेकिन शाम को वह वापस नहीं लौटी, जिसके बाद लड़की के परिजनों ने लड़की की काफी जगह तलाश की और दोस्तों, रिश्तेदारों के यहां भी पता किया।

झुंझुनूं पुलिस ने वांटेड बदमाशों के खिलाफ अभियान चलाया

झुंझुनूं, (निसं)। जिले के बिसाऊ थाने के हिस्ट्रीशीटर और हिस्ट्रीशीटर डेनिस बावरिया के मर्डर के वांटेड मंदीप उर्फ मदिया के फैन फॉलोविंग अब सोशल मीडिया पर कम होती दिख रही है।

जानकारी के अनुसार एसपी बृजेश ज्योति उपाध्याय ने झुंझुनूं जिले के वांटेड बदमाशों के सोशल मीडिया प्रोफाइल्स के खिलाफ अभियान छेड़ रखा है। एसपी द्वारा छेड़े गए अभियान के बाद मंडावा, बिसाऊ और धनूरी थाना पुलिस ने 14 युवकों को अलग-अलग जगहों से गिरफ्तार किया। इनमें से अधिकतर ने कोतवाली झुंझुनूं के वांटेड और बिसाऊ थाने के हिस्ट्रीशीटर मंदीप उर्फ मदिया के सोशल मीडिया अकाउंट को इंस्टाग्राम पर फॉलो कर रखा था। साथ ही लाइक और कमेंट करने वालों में शामिल थे। एसपी बृजेश

- **मंडावा, बिसाऊ और धनूरी थाना पुलिस ने 14 युवकों को गिरफ्तार किया**

ज्योति उपाध्याय की सख्ती के बाद अब एक ही दिन में 300 से ज्यादा लोगों ने मंदीप उर्फ मदिया के सोशल मीडिया अकाउंट को छोड़ दिया है। जिसके बाद मंदीप उर्फ मदिया के सोशल मीडिया अकाउंट में फॉलोवर्स की संख्या में कमी आ गई है। कल तक जहां इंस्टाग्राम पर मंदीप उर्फ मदिया के 15 हजार 200 के करीब फॉलोवर्स थे, अब वो 300 घटकर 14 हजार 900 के करीब आ गए।

अब तक 19 फॉलोवर्स को पुलिस ने किया गिरफ्तार:- बदमाशों, खासकर मंदीप उर्फ मदिया और उसके साथियों को सोशल मीडिया पर फॉलो करने वाले अब तक 19 फॉलोवर्स को पुलिस ने शांतिभंग के आरोप में गिरफ्तार किया है।

इनमें धनूरी पुलिस ने छह, बिसाऊ पुलिस ने पांच, मंडावा पुलिस ने तीन युवकों को पूर्व में गिरफ्तार किया था। वहीं अब पिलानी पुलिस ने धींधवा बिचला निवासी संदीप कुमार पुत्र विद्याधर जाट, झेरली निवासी लोकेश सिंह पुत्र भवानी सिंह राजपूत, पिलानी कस्बे के वार्ड नंबर पांच निवासी समीर खान पुत्र सलीम खान लीलगर को, बबाई पुलिस ने ढ ाणी लोढ़ ा की तन कालोटा निवासी विजेश पुत्र ख्यालीराम गुर्जर तथा मेहाड़ा थाना पुलिस ने ढ ाणी मांगलिया तन बांसियाल निवासी सचिन उर्फ महाकाल पुत्र लीलाधर गुर्जर को गिरफ्तार किया है।

तीन युवकों को वाहन ने टक्कर मारी, एक की मौत

अजमेर, (निसं)। गेगल थाना क्षेत्र में बुधवार देर रात हुए सड़क हादसे ने एक परिवार की खुशियों को मातम में बदल दिया। शादी समारोह में जा रहे बाइक सवार तीन युवकों को अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। हादसे में तीन युवक गंभीर रूप से घायल हो गये। हादसे के बाद आसपास के लोग मौके पर पहुंचे और घायलों को अजमेर के जवाहर लाल नेहरू अस्पताल पहुंचाया, जहां उपचार के दौरान एक युवक ने दम तोड़ दिया।

मृतक के भाई विवेक यादव ने बताया कि उसके दो भाई और उनका दोस्त बुधवार रात गगवाना में शादी में शामिल होने के लिए बाइक से निकले थे। गेगल थाना सीमा में अज्ञात वाहन ने बाइक को पीछे से टक्कर मार दी। टक्कर इतनी तेज थी कि तीनों युवक

- **हादसे में दो गंभीर घायल, अस्पताल में भर्ती कराया**

सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए।

अस्पताल में भर्ती करवाने के बाद कमला बावड़ी निवासी दीपक यादव ने उपचार के दौरान दम तोड़ दिया। हादसे में मृतक के भाई अभिषेक यादव और उनके दोस्त वैशाली नगर निवासी सुरजीत को गंभीर चोटें आई हैं। दोनों का उपचार जेएलएन अस्पताल में जारी है। मृतक के परिजन की शिकायत पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया है। गेगल थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर वाहन व चालक की तलाश शुरू कर दी है।

शराब ठेकेदार और चिड़ावा पुलिस आमने-सामने

चिड़ावा, (निसं)। कस्बे में शराब ठेकेदार और चिड़ावा पुलिस आमने-सामने हो गए। रात को चिड़ावा सीआई आशाराम गुर्जर द्वारा एक शराब ठेके पर की गई कार्रवाई के बाद ऐसे हालात पैदा हो गए, जिसमें पुलिस, शराब ठेकेदार और आबकारी विभाग एक-दूसरे के आमने-सामने हो गए है।

शराब ठेकेदारों ने आरोप लगाया है कि बीती रात को पिलानी रोड पर एक शराब ठेके में सेल्समैन अशोक सो रहा था। चिड़ावा सीआई आशाराम गुर्जर रात को पहले तो शराब ठेके का शटर खोला और इसके बाद ठेके के अंदर सो रहे सेल्समैन को उठाया। सीआई ने सेल्समैन अशोक को थप्पड़ मारे और अपने साथ थाने ले जाकर शांतिभंग के आरोप में बंद कर दिया। सेल्समैन अशोक के पास ठेके की चाबी थी, जो जब्त कर ली। इस मामले को लेकर शराब ठेकेदारों ने एसडीएम को ज्ञापन देकर शराब ठेकों के संचालन में पुलिस के हस्तक्षेप पर आपत्ति जताई है। साथ ही कहा है कि आबकारी नियम में पुलिस शराब ठेकों का निरीक्षण नहीं कर सकती। बावजूद सीआई आशाराम गुर्जर ना केवल ठेकों का निरीक्षण करते हैं, बल्कि जबरदस्ती सेल्समैनों को गिरफ्तार कर रहे है। इधर, ठेके के मालिक विकास कटेवा ने आबकारी अधिकारी को लिखित में शिकायत देकर ठेके की चाबी पुलिस द्वारा जब्त होने तथा ठेका नहीं खुलने के कारण राजस्व के नुकसान की बात कही है। जिसके बाद सहायक आबकारी अधिकारी चिड़ावा ने भी चिड़ावा सीआई को पत्र लिखकर ठेके की चाबी लौटाने तथा रात को हुई पूरी घटना की रिपोर्ट मांगी है। सभी पक्षों के आमने-सामने होने से माहौल गरमा गया है।

- **आरोप है कि ठेके के अंदर सो रहे सेल्समैन को उठा ले गए सीआई, पहले खुलवाया शटर, फिर थप्पड़ मारे**

सीआई आशाराम गुर्जर ने बताया कि नियत समय के बाद ठेका खुलने की शिकायत मिली थी। जिसके बाद ठेके में सेल्समैन शराब बेचता हुआ मिला, जिस पर उसे गिरफ्तार किया गया है। इस घटना का सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है। जिसमें पुलिस शराब ठेके का शटर खुलवाते हुए और सीआई सेल्समैन को थप्पड़ मारते हुए नजर आ रहे हैं। वहीं ठेकेदारों ने अगस्त माह का एक वीडियो और उपलब्ध करवाया है, जिसमें भी सीआई आशाराम गुर्जर चिड़ावा कस्बे के एक शराब ठेके के बाहर पड़ी कुर्सी पर डंडा मारकर उसे तोड़ते हुए नजर आ रहे हैं।

आतंकवादियों के केस में दिनेश शर्मा स्पेशल पीपी नियुक्त

जोधपुर, (कासं)। राजस्थान सरकार के विधि विभाग ने अपर जिला न्यायालय संख्या 3 जोधपुर महानगर में लंबित आतंकवादियों के बहुचर्चित केस में ए. टी. एस. विभाग की ओर से पैरवी करने के लिए दिनेश कुमार शर्मा को विशिष्ट लोक अभियोजक नियुक्त किया है।

इस प्रकरण में एटीएस ने पुलिस थाना प्रताप नगर में देश के विरुद्ध, विधि विरुद्ध गतिविधियों के लिए प्रथम सूचना रिपोर्ट संख्या 113/2014 दर्ज करवाई थी, जिसमें अनुसंधान के दौरान 12 संदिग्ध आतंकवादी पकड़े गए थे, जिसका प्रकरण अभी अपर जिला न्यायालय संख्या 3 जोधपुर महानगर में विचाराधीन है। शर्मा इस प्रकरण में एटीएस विभाग की ओर से पैरवी करेंगे।

शर्मा अभी वर्तमान में लोक अभियोजक जोधपुर महानगर में पदस्थापित है तथा इस प्रकरण में पूर्व में भी एटीएस की ओर से पैरवी कर चुके हैं। उनके अनुभव को देखते हुये एटीएस विभाग की अनुसंशा पर विधि विभाग राजस्थान सरकार ने शर्मा को इस प्रकरण में पैरवी करने के लिए स्पेशल लोक अभियोजक नियुक्त करने का आदेश जारी किया है।

मादक पदार्थ समेत एक गिरफ्तार

श्रीविजयनगर, (निसं)। पुलिस ने नशे के एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी सुनील कुमार के कब्जे से 1.84 ग्राम चिट्टा (हेरोइन) बरामद की है। यह क्षेत्र में नशे के खिलाफ पुलिस की लगातार पांचवीं कार्रवाई है। जानकारी के अनुसार थाना अधिकारी सुमन परिहार के नेतृत्व में पुलिस टीम नियमित गश्त पर थी। इसी दौरान संदिग्ध व्यक्ति सुनील कुमार को रोककर उसकी तलाशी ली गई। तलाशी के दौरान आरोपी के पास से 1.84 ग्राम चिट्टा बरामद हुआ, जिसे मौके पर ही जब्त कर लिया गया। पुलिस ने आरोपी सुनील कुमार को गिरफ्तार कर उसके खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया है।

युवक से परेशान छात्रा ने आत्महत्या की

डूंगरपुर, (निसं)। युवक की प्रताड़ना से परेशान होकर 12 वीं कक्षा की छात्रा ने आत्महत्या कर ली। फोन पर धमकाने और प्रताड़ित करने का आरोप लगाने के बाद जहर खा लिया। परिजन छात्रा को हॉस्पीटल लेकर गए, जहां इलाज के दौरान मौत हो गई। मामला डूंगरपुर जिले के बिछीवाड़ा थाना इलाके का है।

जानकारी के अनुसार बिछीवाड़ा थाने के अब्दुल मुनाफ ने बताया कि पिता ने मामले में रिपोर्ट दर्ज कराई है। 12वीं क्लास में पढ़ने वाली 18 साल की बेटी ने घर पर विषाक्त पदार्थ का

- **फोन पर धमकाने और प्रताड़ित करने का आरोप लगाने के बाद जहर खाया**

सेवन कर लिया। तबीयत बिगड़ने पर परिजन उसे स्थानीय अस्पताल ले गए, जहां से गंभीर हालत के कारण उसे डूंगरपुर जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। जिला अस्पताल में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर अनुसंधान प्रारंभ कर दिया।

जेवर व नकदी चोरी

उदयपुर, (कासं)। शहर के भुपालपुरा थाना क्षेत्र में चोर मकान में घुस कर सोने चादी के जेवर व नकदी चुरा ले गए। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार 19 नवंबर रात में अज्ञात चोर लौहार कॉलोनी आयड़ गली नं. 3 निवासी मुख्तार अहमद पुत्र सईद अहमद के मकान में घुस कर सोने चांदी के जेवरात व नकदी चुरा ले गया। परिवार में शादी होने से मुख्तार अहमद परिवार सहित पड़ोस में गए थे। मकान खुला देख चोर अंदर घुस कर अलमारी में लगी चाबी से ताला खोल सोने-चांदी के जेवरात व नकदी चुरा ले गए।

वनरक्षक पर युवक ने कुल्हाड़ी से किया हमला

गंगापुर सिटी, (निसं)। वन क्षेत्र मुराड़ा में गश्त के दौरान एक वनरक्षक पर कुल्हाड़ी से हमला किया गया। यह घटना तब हुई जब वनरक्षक ने एक व्यक्ति को अवैध रूप से बकरियां चराने से रोका। क्षेत्रीय वन अधिकारी द्वितीय सुरेश गुर्जर ने बताया कि बीट इंचार्ज हरि सिंह मीणा वृक्षारोपण क्षेत्र नेता की तलाई में गश्त कर रहे थे। उन्होंने ग्राम राखला की ढाणी मुराड़ा निवासी शिवराज योगी पुत्र कैलाश योगी को अवैध रूप से बकरियां चराते देखा और उसे रोका। इसी दौरान शिवराज योगी ने हरि सिंह मीणा पर कुल्हाड़ी से घात लगाकर हमला कर दिया। हमले में वनरक्षक हरि सिंह मीणा के हाथ में फ्रैक्चर हो गया और 8 से 10 टांके लगे। वन विभाग ने इस मामले में आरोपी शिवराज योगी के खिलाफ थाना सदर, गंगापुरसिटी में एफआईआर दर्ज कराई है। वन विभाग ने इस घटना की कड़ी निंदा करते हुए वन कर्मियों पर हमले को गंभीर अपराध बताया है।

कज़ाकिस्तान के खिलाफ सेमीफाइनल मैच था। रिंग में यह एक शानदार अनुभव था... अगला हमारा आखिरी मैच है जिसमें हम सभी बहुत अच्छा प्रदर्शन करेंगे। - जैस्मीन लाम्बोरिया

भारतीय मुक्केबाज, खिताबी मुकाबले को लेकर बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

दीक्षा डागर

भारतीय गोल्फर दीक्षा डागर ने गुरुवार को जापान के टोक्यो में 25वें समर डेफलंपिक्स में अपना गोल्ड मेडल बचाकर इतिहास रच दिया। दीक्षा ने टोक्यो के पार-72 वाकासु गोल्फ लिंक्स में 68, 65, 72 के राउंड खेले और महिलाओं की इंडिविजुअल स्ट्रोकप्ले कॉम्पिटिशन में 14-स्ट्रोक के बड़े अंतर से पोडियम पर टॉप किया। मैं डेफलंपिक्स में लगातार दो गोल्ड मेडल जीतकर बहुत खुश हूं। हर साल कॉम्पिटिशन मुश्किल होता जा रहा है। मुझे 20 अलग-अलग देशों की लड़कियों के खिलाफ मुकाबला करना था। मैं अपने प्लान पर टिकी रही।

क्या आप जानते हैं ?... 2018-19 और 2021-22 के बाद ऑस्ट्रेलिया में लगातार दो बार टेस्ट सीरीज़ जीती है।

गिल गुवाहाटी टेस्ट नहीं खेल पाएंगे, पंत उनकी जगह कप्तान होंगे

गुवाहाटी, 20 नवम्बर। शुभमन गिल पिछले हफ्ते कोलकाता में पहले टेस्ट के दौरान लगी गर्दन की चोट से पूरी तरह ठीक नहीं हो पाने के कारण शनिवार को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ गुवाहाटी में शुरू होने वाले भारत के दूसरे टेस्ट से बाहर हो जाएंगे। उप कप्तान ऋषभ पंत उनकी जगह कप्तान होंगे।

माना जा रहा है कि मेडिकल सलाह के अनुसार, अगर गिल इतनी जल्दी खेलते हैं तो उन्हें गर्दन में ऐंठन दोबारा होने का खतरा है। उन्हें और आराम करने की सलाह दी गई है। इस बात का असर 30 नवंबर से दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ शुरू होने वाले तीन मैचों के लिए वनडे टीम में उनके सिलेक्शन पर भी पड़ सकता है। उस सीरीज के लिए टीम 23 नवंबर को चुने जाने की उम्मीद है। गिल के बाहर होने की वजह से, भारत को उनकी जगह साई सुदर्शन, देवदत्त पडिक्कल और नीतीश कुमार रेड्डी में से किसी एक को चुनना पड़ सकता है।

कोलकाता टेस्ट के दूसरे दिन गिल को हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया था, जब उन्होंने भारत की पहली पारी में सिर्फ तीन बॉल खेलने के बाद रिटायर्ड हर्ट होने का फैसला किया था। तीसरे दिन की सुबह, बीसीसीआई ने कहा कि वह टेस्ट में आगे हिस्सा नहीं लेंगे। भारत 124 रन के टारगेट का पीछा करते हुए 93 रन पर आउट हो गया और पिच पर अनइवन बाउंस थी, जिसके बाद टीम 30 रन से मैच हार गई। गिल अक्टूबर 2024 में न्यूज़ीलैंड के खिलाफ गर्दन में ऐंठन की वजह से एक टेस्ट भी नहीं खेल पाए थे।

गुरुवार को, जब ईएसपीएन क्रिकइंफो को पता चला कि गिल मैच नहीं खेल पाएंगे, तो भारत के बैटिंग कोच सीतांशु कोटक ने गिल को बाहर किए बिना एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा था कि अगर ऐंठन दोबारा होने की कोई संभावना है तो टीम उन्हें खिलाने का रिस्क नहीं लेगी। कोटक ने कहा, "वह निश्चित रूप से बहुत अच्छी तरह से ठीक हो रहे हैं।" "अब, (उन्हें खिलाना है या नहीं) यह फैसला कल शाम को लिया जाएगा। फिजियो, डॉक्टरों को यह फैसला करना होगा कि, (भले ही) वह पूरी तरह से ठीक हो जाएं, (खेल के दौरान), उन्हें फिर से वह ऐंठन नहीं होनी चाहिए।

"अगर हमारे पास यह गारंटी है कि, बहुत संभावना है, उन्हें यह समस्या दोबारा नहीं होगी, तो वह खेलेंगे। अगर कोई शक है, तो मुझे यकीन है कि वह एक और गेम के लिए आराम करेंगे, क्योंकि अगर वह खेलते हैं तो यह टीम के लिए मददगार नहीं होगा।" गिल के रिप्लेसमेंट के बारे में सोचते समय भारत के लिए एक चिंता यह है कि उनकी टीम में बाएं हाथ के बल्लेबाजों की संख्या ज़्यादा है। कोलकाता में उनकी में छह खिलाड़ी थे - टॉप आठ में पांच - और साई सुदर्शन और पडिक्कल, जो लाइन-अप में आने की कोशिश कर रहे थे, वे भी बाएं हाथ से बल्लेबाजी करते हैं। भारत की लाइन-अप में बाएं हाथ के बल्लेबाजों की संख्या ज़्यादा होने से कोलकाता में प्लेयर ऑफ द मैच चुने गए ऑफ स्पिनर साइमन हार्मर को काफी फायदा हुआ।

कोटक ने कहा कि ऑफ स्पिनर बनाम बाएं हाथ के बल्लेबाज के मैच पर बहुत ज़्यादा ध्यान दिया गया, और बताया कि दक्षिण अफ्रीका ने कोलकाता में बाएं हाथ के स्पिनर केशव महाराज को भी खिलाया, जिससे भारत की लाइन-अप को फायदा होना चाहिए था।

मैच से दो दिन पहले इंडिया के ज़रूरी प्रैक्टिस सेशन से कुछ इशारा मिला कि गिल की जगह कौन आ सकता है। नेट्स में बैटिंग करने आए पहले चार बैटर यशस्वी जायसवाल, केएल राहुल, वाशिंगटन सुंदर और ध्रुव जुरेल थे। पहले तीन कोलकाता में इंडिया के टॉप तीन थे, और जुरेल ने गिल की गैरमौजूदगी में दूसरी इनिंग्स में नंबर 4 पर बैटिंग की थी। साई सुदर्शन अगले नेट्स में थे। इस बीच, पडिक्कल ने नेट्स सेशन के शुरुआती हिस्से में बैटिंग नहीं की, लेकिन स्पिनर्स के नेट में पार्ट-टाइम ऑफस्पिन बॉलिंग करते दिखे।

सीम-बॉलिंग ऑलराउंडर रेड्डी, जिन्हें कोलकाता में स्क्वॉड से रिलीज कर दिया गया था ताकि वह दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ इंडिया ए की लिमिटेड-ओवर्स सीरीज में खेल सकें, ट्रेनिंग में वापस आ गए, और साथ में बॉलिंग की। जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज और आकाश दीप फास्ट बॉलर्स के नेट में। अक्षर ने शुरू में बॉलिंग नहीं की, और सेशन शुरू होने के लगभग 45 मिनट बाद ही अपने टीम के साथियों के साथ शामिल हुए।

इनमें से कोई भी बात जरूरी नहीं कि भारत के संभावित सिलेक्शन की ओर इशारा करती हो। खिलाड़ियों ने मैच से पहले, वे किस तरह की ट्रेनिंग करते हैं और कितनी करते हैं, इस बारे में उनकी अपनी पसंद होती है।

लेकिन शनिवार को कोलकाता की उम्मीद से ज़्यादा बैलेंस्ड पिच होने की वजह से, भारत को शायद चौथे स्पिन बॉलर और दूसरे लेफ्ट-आर्म ऑर्थोडॉक्स स्पिनर की जरूरत महसूस न हो। अगर साई सुदर्शन गिल की जगह लेते हैं, तो अक्षर की जगह रेड्डी के आने से भारत को कोलकाता में मौजूद लेफ्ट और राइट-हैंड बैटर का वही बैलेंस बनाए रखने में मदद मिलेगी। टेस्ट से दो दिन पहले पिच पर अच्छी-खासी घास होने की वजह से, इस बात की संभावना है कि रेड्डी बॉल के साथ भी एक काम का ऑप्शन हो सकते हैं।

प्रखर असावा ने इंडियन ऑयल सर्वो मास्टर्स नेशनल गोल्फ चैम्पियनशिप में शानदार प्रदर्शन किया

जयपुर, 20 नवम्बर। इंडियन ऑयल सर्वो मास्टर्स ओपन नेशनल गोल्फ चैंपियनशिप 2025, जो 18 से 21 नवंबर 2025 तक डिगबोई गोल्फ क्लब में हो रही है, उसमें कुछ टॉप इंडियन प्रोफेशनल्स हिस्सा ले रहे हैं, जैसे मणि राम, अर्जुन प्रसाद, शंकर दास, युवराज संधू, विराज मडप्पा, रोहन धोले पाटिल वगैरह। इस फील्ड में जाने-माने विदेशी नामों में इंटरनेशनल खिलाड़ी शामिल थे, जैसे एन थंगाराजा / जमाल हुसैन, बादल हुसैन, स्टीफन दानेक, ग्रेग स्नो वगैरह। डिगबोई गोल्फ क्लब को भारत के सबसे अच्छे और सबसे मुश्किल गोल्फ कोर्स में से एक माना जाता है। इसमें दस पार 4, चार पार 5 और चार पार 3 हैं। यह 18-होल वाला पार - 72 कोर्स है जिसकी लंबाई 6396 यार्ड है, जिसमें सबसे लंबा होल 513 यार्ड और सबसे छोटा होल 127 यार्ड का है। यह असम में देहिंग पटकाई पहाड़ों के बैकग्राउंड में बना है। तीसरे दिन बहुत तेज़ हवाएँ चलीं, पिन की मुश्किल पोज़िशन और मुश्किल रफ़ थे, जिससे यह गोल्फ़ कोर्स मुश्किल हो गया और ग्रीन्स को पढ़ना भी मुश्किल हो गया। आज तीसरे दिन, जयपुर के रामबाग़ गोल्फ़ क्लब के प्रखर असावा ने 6 बर्डी, एक ईगल और 11 पार के साथ 6 अंडर पार का शानदार राउंड खेला और 3 दिनों में 213 के कुल स्कोर के साथ 14वें स्थान पर रहे। प्रखर 213 के कुल स्कोर के साथ 14वें स्थान पर हैं, यानी 3 अंडर पार जयपुर के इस लड़के का शानदार प्रदर्शन है। आज का 6 अंडर पार का राउंड बहुत लंबे समय में रामबाग़ गोल्फ़ क्लब के किसी भी गोल्फ़र का सबसे अच्छा और शानदार प्रदर्शन है। युवराज सिंह संधू 200 के कुल स्कोर के साथ इस फील्ड में सबसे आगे हैं।

दूसरा जयपुर चेस क्लब रेपिड टूर्नामेंड 2025 का पोस्टर विमोचन सम्पन्न

जयपुर, 20 नवंबर। आगामी दूसरा जयपुर चेस क्लब रेपिड टूर्नामेंट 2025 का पोस्टर का भव्य समारोह में विधिवत विमोचन अरुण चतुर्वेदी, अध्यक्ष - वित्त आयोग, राजस्थान के कर-कमलों से हुआ । जिनेश कुमार जैन टूर्नामेंट कोऑर्डिनेटर ने बताया कि यह टूर्नामेंट 23 नवंबर 2025 (रविवार), नव भारती सीनियर सेकेंडरी स्कूल, स्वेज फ्रॉम, जयपुर में आयोजित होगी । प्रतियोगिता का आयोजन जयपुर चेस क्लब द्वारा किया जा रहा है, जो जेडीसीए के तत्वावधान में तथा जयपुर चेस अकादमी के सहयोग से सम्पन्न होगी। इस प्रतिष्ठित रैपिड चेस टूर्नामेंट में कुल 25,000 के नकद पुरस्कार, 31 ट्रॉफियाँ व मेडल, तथा विभिन्न आयु वर्गों के लिए आकर्षक कैटेगरी प्राइज भी निर्धारित किए गए हैं। विक्रम सिंह वरिष्ठ उपाध्यक्ष जयपुर जिला चेस एसोसिएशन ने बताया कि इस टूर्नामेंट में सरकारी स्कूलों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को पंजीकरण शुल्क पर 50 की विशेष छूट दी जाएगी। यह कदम आर्थिक रूप से कमजोर लेकिन प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। इस अवसर पर भाजपा मानसरोवर मंडल मंत्री सुनील जैन गंगवाल एवं लोकेश सोगानी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। समारोह के अंत में जिनेश कुमार जैन ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह प्रतियोगिता जयपुर के उभरते शतरंज खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का उत्कृष्ट मंच प्रदान करेगी।

तमिलनाडु ने राजस्थान को 2-0 से हराया

जयपुर, 20 नवम्बर। जुनियर बालिका वर्ग राष्ट्रीय फुटबॉल प्रतियोगिता टियर 1 में जो कि आंध्रप्रदेश के अनंतपुरारम में आयोजित हो रही है। जिसमें आज राजस्थान का दूसरा लीग मैच तमिलनाडु के साथ खेला गया। राजस्थान फुटबॉल संघ के सचिव दिलीप सिंह शेखावत ने बताया की पिछले साल की सेमीफाइनल खेली टीम तमिलनाडु ने शुरुआत से ही अच्छा खेल का प्रदर्शन किया पर राजस्थान के मजबूत डिफेंस ने गोल नहीं होने दिया । मैच के 40 वे मिनट में तमिलनाडु टीम की ओर से जर्सी नंबर 8 एस दर्शनी, ने गोल कर टीम को बढ़त दिला दी। मध्यांतर के बाद 55वे मिनटमें अंविता, ने गोल कर स्कोर 2- 0 तमिलनाडु टीम को बढ़त दिला दी । दूसरे हाफ में राजस्थान की टीम ने कई जवाबी हमले किए परन्तु राजस्थान टीम गोल नहीं कर सकी । अब राजस्थान का अंतिम अगला लीग मैच आंध्रप्रदेश से 22 नवंबर को होगा ।

मीनाक्षी, प्रीति का वर्ल्ड कप में गोल्डन पंच, भारत के नाम दो स्वर्ण पदक

ग्रेटर नोएडा, 20 नवंबर। भारत की महिलाओं ने वर्ल्ड बॉक्सिंग कप फाइनल्स 2025 में देश के लिएउस समय एक ऐतिहासिक दिन बनाया, जब मीनाक्षी (48 किग्रा), प्रीति (54 किग्रा), अरुंधति चौधरी (70 किग्रा), और नूपुर (80 किग्रा) ने शहीद विजय सिंह पथिक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में खचाखच भरे स्टेडियम के सामने स्वर्ण पदक जीते। उनकी जीत कई खास डिवीजन में हुई जो 2028 ओलंपिक गेम्स में शामिल होंगे, जहां बॉक्सिंग पूरी तरह से जेंडर बराबरी की ओर बढ़ रही है और जो लॉस एंजेलिस की राह पर भारत की बढ़ती कॉम्पिटिटिव ताकत को दिखाता है।

उनके शानदार प्रदर्शन ने मेजबान देश के लिए एक शानदार कैंपेन को खत्म किया, जिसमें जदुमणि सिंह, पवन बर्तवाल, अभिनाश जामवाल और अंकुश फंगल ने भी रजत पदक जीते, जिससे पुरुषों और महिलाओं दोनों की ओलंपिक-क्लास वेट कैटेगरी में भारत का बढ़ता रुतबा दिखा। सेशन 7 में सात और भारतीय स्वर्ण पदक के लिए लड़ेंगे, जिनमें मौजूदा वर्ल्ड चैंपियन जैस्मीन लैम्बोइरा, दो बार की पूर्व वर्ल्ड चैंपियन निकहत ज़रीन और दो बार के वर्ल्ड बॉक्सिंग कप मेडलिस्ट हितेश गुलिया शामिल हैं।

मीनाक्षी ने मौजूदा एशियन चैंपियन फरज़ोना फोज़िलोवा पर लगभग बिना किसी गलती के 5:0 से जीत हासिल करके दिन का माहौल बनाया, और शुरुआती घंटी से ही अपना ट्रेडमार्क आक्रामकता दिखाई। वर्ल्ड चैंपियन ने स्पीड के साथ बहुत तेज एक्यूरेसी का मेल किया, राउंड 1 में ज़बरदस्त लेफ्ट-राइट कॉम्बिनेशन से बाउट शुरू किया और ज़ोरदार जैब, क्लीन काउंटर और एयरटाइट डिफेंस के जरिए पूरा कंट्रोल बनाए रखा।

प्रीति ने एक और जबरदस्त 5:0 का परफॉर्मेंस दिया, जिसमें उन्होंने इटली की वर्ल्ड चैंपियनशिप मेडलिस्ट सिरिन चर्राबी पर लगातार दबाव बनाया। उन्होंने चर्राबी को बार-बार कोनों में धकेला, ज़ोरदार फेस पंच मारे और बेहतर फुटवर्क और लगातार अटैकिंग बर्स्ट से टेम्पो तय किया। अरुंधति चौधरी (पूर्व यूथ वर्ल्ड चैंपियन) ने दिन का सबसे कम्प्लीट परफॉर्मेंस दिया, जिसमें उन्होंने उज़्बेकिस्तान की अज़ीज़ा ज़ोकिरोवा को 5:0 से हराया। 18 महीने बाद वापसी करते हुए, उन्होंने तेज़ अटैक और अनुशासित डिफेंस का मिक्सचर किया, डिसाइसिव जैब से खूब स्कोर किया और तीनों राउंड में पूरा टैक्टिकल कंट्रोल बनाए रखा। स्वर्ण पदक की बढ़त तब जारी रही जब नूपुर ने एक टेंशन भरे, टैक्टिकल मुकाबले में उज़्बेकिस्तान की सोटिम्बोएवा ओल्टिनोय को 3:2 से हराया।

डीपी वर्ल्ड ने उभरते स्टार अभिषेक शर्मा को ब्रांड एंबेसडर बनाया

नई दिल्ली, 20 नवंबर। ग्लोबल स्मार्ट लॉजिस्टिक्स सॉल्यूशंस के लीडिंग प्रोवाइडर डीपी वर्ल्ड ने भारतीय बल्लेबाज अभिषेक शर्मा को अपना नया ब्रांड एंबेसडर बनाया है। इस घोषणा के साथ वह क्रिकेट आइकन सचिन तेंदुलकर और ग्लोबल गोल्फ स्टार टॉमी फ्लीटवुड के साथ डीपी वर्ल्ड के बढ़ते स्पोर्ट्स पोर्टफोलियो में तीसरे एंबेसडर बन गए हैं। अभिषेक ने डीपी विश्व एशिया कप 2025 के एक टी-20 एडिशन में सबसे ज़्यादा रन बनाने का रिकॉर्ड तोड़ा, उन्होंने सात पारियों में 314 रन बनाए, और प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट चुने गए। अभिषेक आईसीसी पुरुष अंतरराष्ट्रीय टी-20 बल्लेबाजी रैंकिंग में नंबर एक पर पहुंच गए हैं, और अब तक की सबसे ज्यादा रेटिंग हासिल की है।

इस अवसर पर डीपी वर्ल्ड के मिडिल ईस्ट, नॉर्थ अफ्रीका और इंडिया सबकॉन्टिनेंट के चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर और मैनेजिंग डायरेक्टर रिजवान सूमर ने कहा, "हमें अभिषेक शर्मा का डीपी वर्ल्ड परिवार में हमारे नए ब्रांड एंबेसडर के तौर पर स्वागत करते हुए खुशी हो रही है। यह हमारे स्पोर्टिंग चैंपियंस के सर्कल में एक शानदार चरण है। डीपी वर्ल्ड में, हमारे ब्रांड का मकसद "जो मुमकिन है उसे बदलना" है। हम उनका हौसला बढ़ाने के लिए उत्सुक हैं और इस शानदार सफर में उनकी लगातार सफलता की कामना करते हैं।"

सात्विक-चिराग, लक्ष्य और आयुष क्वार्टर फाइनल में, प्रणय-श्रीकांत हुए बाहर

सिडनी, 20 नवंबर। भारतीय शटलर आयुष शेट्टी और लक्ष्य ने गुरुवार को शानदार प्रदर्शन करते हुए ऑस्ट्रेलियन ओपन 2025 बैडमिंटन टूर्नामेंट में एकल वर्ग के मुकाबलों में जीत दर्ज करते हुए क्वार्टरफाइनल में जगह बना ली। वहीं पुरुष युगल मुकाबले में सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी-चिराग शेट्टी ने चीनी ताइपे की जोड़ी सु चिंग-हेंग और वू गुआन-शुन को हराकर टूर्नामेंट के अगले दौर में प्रवेश किया। आज यहां पुरुष एकल वर्ग में 32वें नंबर के खिलाड़ी आयुष शेट्टी ने एक घंटे आठ मिनट तक चले मुकाबले में उलटफेर करते हुए जापान के नाराओका को 21-17, 21-16 से हराकर अंतिम आठ में जगह बनाई।

मुशफिकुर और लिटन के शतक, आयरलैंड के 98/5 विकेट

मीरपुर, 20 नवंबर। मुशफिकुर रहीम (106) और लिटन कुमार दास (128) की शतकीय पारियों के दम पर बंगलादेश ने दूसरे टेस्ट मैच के दूसरे दिन गुरुवार को पहली पारी में 476 रनों का विशाल स्कोर खड़ा करने के बाद बल्लेबाजी कर रही आयरलैंड के स्टंप के समय तक 98 रन पर पांच विकेट झटकर मैच पर अपनी मजबूत पकड़ बना ली है। बंगलादेश ने कल के 294 पर चार विकेट से आगे खेलना शुरु किया। आज सुबह के सत्र में अपने 100वें टेस्ट में शतक बनाने वाले मुशफिकुर रहीम आउट हुये। उन्होंने 214 गेंदों में पांच चौके लगाते हुए 106 रन बनाये। उन्हें मैथ्यू हम्फ्रीज ने आउट किया। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये मेहदी हसन मिराज ने लिटन दास के साथ छठे विकेट के लिए 123 रन जोड़े। गेविन होए ने मेहदी हसन मिराज को आउटकर इस साझेदारी को तोड़ा। बंगलादेश का सातवां विकेट दूसरे शतक वीर लिटन कुमार दास के रूप में गिरा। लिटन कुमार दास ने 192 गेंदों में आठ चौके और चार छक्कों की मदद से 128 रनों की पारी खेली। तैजुल इस्लाम (चार), हसन मुराद 11 रन बनाकर आउट हुये । 142वें ओवर की पहली गेंद पर एंडी मैकब्राइन ने खलील अहमद (आठ) को आउटकर 476 के स्कोर पर बंगलादेश की पहली पारी का अंत कर दिया। आयरलैंड के लिए एंडी मैकब्राइन ने छह विकेट लिये। मैथ्यू हम्फ्रीज और गेविन होए को दो-दो विकेट मिले।

फीफा रैंकिंग में स्पेन शीर्ष पर

जिनेवा, 20 नवंबर। फेडरेशन इंटरनेशनेल डी फुटबॉल एसोसिएशन (फीफा) की ओर जारी की ताजा विश्व रैंकिंग में स्पेन 1877.18 अंक के साथ शीर्ष पर बना हुआ है। ताजा रैंकिंग के अनुसार इस दौरान कुल 149 अंतर्राष्ट्रीय मैच खेले गए, जिसमें 74 मैत्री मैच शामिल हैं। रैंकिंग में अर्जेंटीना 1873.33 अंक के साथ दूसरे , फ्रांस 1870 अंक के साथ तीसरे और इंग्लैंड 1834.12 अंक के साथ चौथे स्थान पर बना हुआ है। ब्राजील को दो स्थान का फायदा हुआ है वह 1760.46 अंक के साथ दो पायदान चढ़कर पांचवें स्थान पर आ गया, जबकि पुर्तगाल 1760.38 अंक छठे और नीदरलैंड्स 1756.27 अंक सातवें स्थान पर आ गये। नॉर्वे से 4-1 से हारने के बाद इटली शीर्ष 10 से नीचे गिरकर 1702.06 अंक के साथ 12वें स्थान पर खिसक गया।

केएससीए ने चुनाव टालने का फैसला रद्द करने के लिए हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया

बेंगलुरु, 20 नवंबर। कर्नाटक स्टेट क्रिकेट एसोसिएशन (केएससीए) के चुनाव कानूनी पचड़े में पड़ गए हैं, एसोसिएशन ने 30 नवंबर को होने वाले चुनावों को टालने के फैसले को चुनौती देने के लिए कर्नाटक हाई कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। यह कदम एसोसिएशन के नियमों और पदाधिकारियों के लिए योग्यता के नियमों की व्याख्या को लेकर विवादों के बीच उठाया गया है, जिससे चुनावी प्रक्रिया के संचालन और कानूनी मान्यता पर सवाल उठ रहे हैं। मंगलवार को दायर एक रिट याचिका में, केएससीए ने चुनाव अधिकारी द्वारा जारी 17 नवंबर के उस पत्र को रद्द करने की मांग की है, जिसने चुनाव टाल दिए थे, और कोर्ट से अनुरोध किया है कि वह उन्हें पहले से घोषित चुनाव कैलेंडर के अनुसार आगे बढ़ने का निर्देश दे।

23 खेलों में लगभग 5000 खिलाड़ी भाग लेंगे

खो-खो को डेमोंस्ट्रेशन खेल के रूप में किया शामिल

जयपुर, 20 नवंबर। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा युवाओं को खेलों के अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध करवाने की दृष्टि से विष्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं के लिए खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स के आयोजन की सौगात दी और आज राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इन खेलों से निकले खिलाड़ी ही देश का नाम रोशन कर रहे हैं।

इन गेम्स में 24 खेलों का आयोजन होगा, जिसमें खो-खो को डेमोंस्ट्रेषन खेल के रूप में शामिल किया गया है। इन खेलों में लगभग 5000 खिलाड़ी भाग लेंगे। शासन सचिव, युवा मामले एवं खेल विभाग, राजस्थान सरकार एवं अध्यक्ष राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद् डा. नीरज के.पवन ने बताया कि इन खेलों का आयोजन सातों संभागों में किया जा रहा है। जयपुर संभाग में एथलेटिक्स, बेडमिंटन, बास्केटबॉल, हॉकी, तैराकी, टेनिस, फुटबॉल, तीरंदाजी, निषानेबाजी, मल्लखम्भ और साईक्लिंग खेलों का आयोजन किया जायेगा। सवाई मानसिंह स्टेडियम में एथलेटिक्स, बैडमिंटन, बास्केटबॉल, हॉकी, तैराकी, टेनिस और साईक्लिंग, जबकि राजस्थान विश्वविद्यालय में मल्लखम्भ, पूर्णिमा विष्वविद्यालय में फुटबॉल, जगतपुरा शूटिंग रेंज में तीरंदाजी व शूटिंग की स्पद्र्धायें होंगीं। उन्होंने बताया कि जयपुर में बैडमिंटन, तीरंदाजी व शूटिंग 24 से 28 नवंबर तक, तैराकी, फुटबॉल, हॉकी व रोड साईक्लिंग 25 से 28 नवंबर तक, ट्रैक साईक्लिंग 28 से 30 नवंबर तक, टेनिस 28 नवंबर से 4 दिसंबर तक,एथलेटिक्स 1 से 4 दिसंबर तक, बास्केटबॉल 1 से 5 दिसंबर तक और मल्लखंभ का आयोजन 2 से 5 दिसंबर तक किया जावेगा। डा. नीरज के पवन ने बताया कि अजमेर संभाग में 26 व 28 नवंबर को रग्बी का आयोजन होगा, जबकि डेमन्स्ट्रेशन खेल के रूप में खो-खो की स्पर्धा होंगी।

ऑस्ट्रेलिया को पहला एशेज टेस्ट नियमित कप्तान पैट कमिंस और जॉश हेजलवुड के बिना ही खेलना पड़ेगा

पर्थ, 20 नवम्बर। ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड के बीच एशेज सीरीज का पहला टेस्ट शुक्रवार से खेला जाएगा। दोनों ही टीमें चोटिल खिलाड़ियों की समस्या से जूझ रही हैं। जहां ऑस्ट्रेलिया को यह मैच नियमित कप्तान पैट कमिंस और जॉश हेजलवुड के बिना ही खेलना पड़ेगा तो वहीं इंग्लैड केवल दूसरी बार जोफ्रा आर्चर और मार्क वुड के साथ कोई टेस्ट मैच खेलेगा। इस मैच में स्टीव स्मिथ ऑस्ट्रेलिया की कप्तानी करते दिखेंगे।

ऑस्ट्रेलिया दो 31 वर्षीय खिलाड़ियो को डेब्यू करने का मौक़ा दे रहा है जिसमें ओपनिंग बल्लेबाज जेक वेदरॉल्ड भी शामिल हैं जो पिछले सीजन की शेफ़ील्ड शील्ड में सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज़ रहे थे। उनके अलावा तेज गेंदबाज ब्रेंडन डॉगेट भी अपना टेस्ट डेब्यू करेंगे। 2019 के बाद यह पहला मौक़ा होगा जब एक ही टेस्ट में ऑस्ट्रेलिया दो खिलाड़ियों का डेब्यू कराएगा। मार्नस लाबुशेन की भी प्लेइंग इलेवन में वापसी हुई है जिन्हें वेस्टइंडीज के ख़िलाफ़ पिछली सीरीज के दौरान अतिरिक्त बल्लेबाज के रूप में रखा गया था। बो वेब्स्टर इस मैच में नहीं खेलेंगे और उनकी जगह लेकर कैमरन ग्रीन छह नंबर पर बल्लेबाजी करते दिखेंगे।

स्कॉट बोलैंड के साथ अब डॉगेट भी प्लेइंग इलेवन का हिस्सा बन रहे हैं जिससे एक नया इतिहास बनेगा। डॉगेट ऑस्ट्रेलिया के लिए टेस्ट खेलने वाले तीसरे मूलनिवासी खिलाड़ी बनेंगे। पहली बार ऐसा होगा जब ऑस्ट्रेलिया की टेस्ट प्लेइंग इलेवन में दो मूलनिवासी खेलते दिखेंगे। ऑस्ट्रेलिया: 1 जेक वेदरॉल्ड, 2 उस्मान ख़्वाजा, 3 मार्नस लाबुशेन, 4 स्टीवन स्मिथ (कप्तान), 5 ट्रैविस हेड, 6 कैमरन ग्रीन, 7 एलेक्स कैरी (विकेटकीपर), 8 मिशेल स्टार्क, 9 नाथन लियोन, 10 स्कॉट बोलैंड, 11 ब्रेंडन डॉगेट।

इंग्लैंड ने बुधवार को 12 सदस्यीय टीम घोषित की, जिसमें शोएब बशीर के बाहर होने की संभावना है। मार्क वुड को खेलने की अनुमति मिल गई है। यह फरवरी की चैंपियंस ट्रॉफ़ी के बाद उनका पहला मैच होगा और पिछले अगस्त के बाद पहला टेस्ट। ओली पोप, जिन्होंने भारत के ख़िलाफ इंग्लैंड के पिछले टेस्ट में कप्तानी की थी को उप-कप्तान पद से हटाकर हैरी ब्रूक को यह ज़िम्मेदारी दी गई है।

इंग्लैंड (संभावित): 1 जैक क्रॉली, 2 बेन डकेट, 3 ओली पोप, 4 जो रूट, 5 हैरी ब्रूक, 6 बेन स्टोक्स (कप्तान), 7 जेमी स्मिथ (विकेटकीपर), 8 ब्राइडन कार्स, 9 गस एटकिंसन, 10 मार्क वुड, 11 जोफ्रा आर्चर। पर्थ में टेस्ट से पहले मौसम अपेक्षाकृत ठंडा रहा है और पूरे मैच के दौरान ऐसा ही रहने की उम्मीद है, जहां तापमान अधिकतम 28 डिग्री सेल्सियस तक जा सकता है। बीच-बीच में हल्की बारिश की भी संभावना है। इंग्लैंड के करीब 10,000 प्रशंसक पहले टेस्ट के लिए पर्थ में मौजूद हैं, और पूरी सीरीज के दौरान 40,000 से अधिक दर्शकों के आने की उम्मीद है।

चतुर्थ डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम स्मृति टी-20 क्रिकेट प्रतियोगिता

केण्डलविक की जीत में रौनक का ऑलराउंड प्रदर्शन, सार्थक की उम्दा गेंदबाजी

जयपुर, 20 नवम्बर। मैत्री क्रिकेट क्लब द्वारा आयोजित आज हुकम सिंह क्रिकेट ग्राउण्ड हाथोज में चतुर्थ डॉ ए.पी.जे अब्दुल कलाम स्मृति टी-20 क्रिकेट प्रतियोगिता के अन्तर्गत आज खेले गये पूल-सी के मुकाबले में रौनक सैनी 61 रन (22 गेंद, 8 छक्के, 1 चौका) व 26 रन पर 2 विकेट के ऑलराउण्ड प्रदर्शन तथा सार्थक त्यागी 19 रन पर 3 विकेट की शानदार गेंदबाजी की बदौलत कृष्णा क्रिकेट एकेडमी को 12 रन से हराकर 2 अंक अर्जित किये।

टॉस जीतकर केण्डलविक क्रिकेट एकेडमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुये आयूष आमेरिया 27 रन, दक्षण कासलीवाल 29 रन व उज्जवल 17 रन की मदद से स्कोर 15 ओवर में 5 विकेट पर 84 रन थे लेकिन निचले क्रम में बल्लेबाजी करते हुये रौनक सैनी ने 22 गेंदों में ही 61 रन की आतिशी पारी खेलकर अपनी टीम का स्कोर 20 ओवर में 8 विकेट खोकर 156 रन पंहुचा दिया। गेंदबाजी में कृष्णा क्रिकेट एकेडमी की ओर से अनामिक 22 रन पर 4 विकेट लेकर सबसे सफल गेंदबाज रहे। जबकि सौरव, श्रेष्ठ पंत व राहुल शर्मा प्रत्येक 1-1 विकेट लेकर अन्य सफल गेंदबाज रहे।

जवाबी पारी में कृष्णा क्रिकेट एकेडमी ने अपने पहले 3 विकेट मात्र 25 रन पर गवा दिये लेकिन मध्यक्रम में सौरव बद्री 48 रन, अनामिक 30 रन, जितेन्द्र यादव 20 रन, राहुल शर्मा 13 रन ने अपनी टीम को जीत दिलाने का भरसक प्रयास किया लेकिन केण्डलविक के गेंदबाजों सार्थक त्यागी 4 ओवर में 19 रन पर 3 विकेट, पूरव शर्मा 4 ओवर में 23 रन पर 2 विकेट, हिमांक झालानी 24 रन पर 2 विकेट तथा रौनक सैनी 26 रन पर 2 विकेट ने बिल्कुल कसी हुई गेंदबाजी करते हुए कृष्णा क्रिकेट एकेडमी को निर्धारित 20 ओवर में 144 रन 9 विकेट खोकर पर सीमित करते हुए 12 रन पर मैच जीत लिया। इस मैच का मैन ऑफ दी मैच रौनक सैनी केण्डलविक क्रिकेट एकेडमी रहे।

जयपुर और चूंडा टीमें जीती, पद्मनाभ सिंह ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 6 गोल किये

जयपुर, 20 नवम्बर। पीपीसी पोलो ग्राउंड परचूंडा पोलो ओर थंडरबोल्ट पोलो टीम के बीच मैच खेला गया जिसमेंचूंडा पोलो टीम ने थंडरबोल्ट टीम को 4.5 के मुकाबले 7 गोल से हराया। चूंडा टीम की ओर सेशुभम गुप्ता ओर विशाल सिंह ने 1- 1, फ्रेडेनिक डेनियल ने 2 ओर विराम देव सिंह ने भी अपनी टीम के लिए 3 गोल किये। डेढ़ गोल का एडवांटेज लेकर खेल रही थंडरबोल्टपोलो टीम की ओर से मृत्युंजय सिंह एवं एलेन माइकल ने अपनी टीम के लिए 1 गोल किए। दूसरा मैच पीपीसी पोलो ग्राउंड परजयपुर पोलो ओर कानोता पोलो टीम के बीच मैच खेला गया जिसमेंजयपुर पोलो टीम ने कानोता टीम को 5 के मुकाबले 9 गोल से हराया। जयपुर टीम की ओर सेलांस वाटसन ने 3 गोल ओर महाराज पद्मनाभ सिंह ने भी अपनी टीम के लिए 6 गोल किये। कानोता पोलो टीम की ओर से प्रताप सिंह एवं डीनो धनखड़ ने अपनी टीम के लिए 1- 1 गोल किए, हुर्रे अली ने 3 गोल किये।

भजनलाल पटना में शपथ ग्रहण समारोह में शामिल हुए

बिहार/जयपुर, 20 नवम्बर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा गुरुवार को बिहार के पटना में स्थित गांधी मैदान में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की गरिमामयी उपस्थिति में आयोजित बिहार के मुख्यमंत्री के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल हुए। उन्होंने नीतीश कुमार को बिहार के मुख्यमंत्री, सम्राट चौधरी व विजय कुमार सिन्हा को उपमुख्यमंत्री एवं अन्य सदस्यों को मंत्री के रूप में शपथ लेने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में डबल इंजन की सरकार विकसित बिहार के निर्माण में संकल्पित होकर कार्य करेगी तथा बिहार में विकास के नए आयाम स्थापित होंगे। समारोह में उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी, डॉ. प्रेमचन्द बैरवा तथा विधायक कुलदीप धनखड़ सहित, विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री एवं अन्य जनप्रतिनिधिगण उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा गुरुवार को बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल हुए। चित्र में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव और उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी उनके साथ मंच पर उपस्थित थे।

'हमारी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मीडिया संस्थान को दबाने की कोशिश बताया। संपादक प्रबोध जमवाल और अनुराधा भसीन ने सोशल मीडिया पर जारी किये गये एक संयुक्त बयान में कहा कि "जम्मू कार्यालय पर छापे और हमारे खिलाफ निराधार आरोप एक बार फिर हमें चुप कराने की कोशिश हैं।"

उन्होंने कहा कि 1954 में वेद भसीन द्वारा स्थापित कश्मीर टाइम्स ने हमेशा स्वतंत्र पत्रकारिता को बनाए रखा है। "हमने इस क्षेत्र की सफलताओं और विफलताओं दोनों को समान मेहनत से दर्ज किया है। हमने उन समुदायों को आवाज़ दी है, जिनकी आवाज़ अनसुनी रह जाती है। जब दूसरे चुप रहे, तब हमने कठिन सवाल पूछे।"

संपादकों ने कहा कि भले ही 2021-22 में "लगातार एवं निर्मम रुप से निशाना बनाए जाने" के बाद, अख़बार का प्रिंट संस्करण बंद कर दिया गया था, लेकिन कश्मीर टाइम्स अब भी डिजिटल रूप से काम कर रहा है और उसका सारा काम उसकी वेबसाइट पर सबके लिये उपलब्ध है।

प. बंगाल में वामपंथी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

नंदीग्राम में कार फैक्ट्री के लिए ज़मीन अधिग्रहण के खिलाफ उग्र आंदोलन करके उस जमे हुए सिस्टम को हिला दिया था।

जब वे सत्ता में आईं उन्हें पता था कि सिस्टम को कैसे मोड़ना है और गलत मतदाता सूचियों व वोटिंग में हेराफेरी के ज़रिये चुनावी जीत कैसे हासिल करनी है। अपने पहले कार्यकाल और 2019 के लोकसभा चुनाव में लगे तगड़े झटके के बाद, उन्होंने एक ऐसा संरक्षण तंत्र खड़ा किया, जो पूरे बंगाल के सामाजिक-राजनीतिक ढांचे में फैला हुआ है।

तृणमूल के ज़मीनी कार्यकर्ता आसानी से पहचाने जाते हैं और सोशल मीडिया पर उनका पूरा विवरण मिल जाता है। वे अक्सर बहुत पतली सोने की चेन और दाहिने हाथ में वैसा ही सोने का ब्रेसलैट पहनते हैं। बीच के स्तर के नेताओं के पास कई नई एसयूवी हैं और निचले स्तर के कार्यकर्ताओं के पास चमचमाती मोटरबाइकें।

वे तेज़ी से गाड़ी चलाते हैं और अक्सर मामूली सी बात पर भी अपनी कार से आम लोगों पर हमला कर देते हैं। हाल में न्यू टाउन इलाके में कार लेकर जा रहे आम लोगों पर, कार का स्पर्श करते हुये गुजरने पर भी, इसी तरह के हमले हुए, यहां तक कि उन लोगों को उनके अपने गेटेड परिसर के अंदर तक पीटा गया। कई मायनों में, आम लोग, जो सत्ता पक्ष से जुड़े नहीं हैं, डर के माहौल में जी रहे हैं।

यही लोग बूथ पर कब्जा करते हैं, फर्जी वोट डालते हैं और, आम तौर से, यह सुनिश्चित करते हैं कि विपक्ष के पक्ष में वोट पड़ ही न सके। नतीजतन, तृणमूल उम्मीदवार अक्सर रिकॉर्ड मतों से जीतते हैं। उदाहरण के लिए, ममता बनर्जी के मशहूर भतीजे ने देश में सबसे बड़े अंतर से जीत का रिकॉर्ड बनाया था।

बंगाल में लोग वास्तव में स्वतंत्र रूप से वोट डाल ही नहीं पाते, क्योंकि हर जगह तृणमूल के गुंडों का खतरा रहता है।

इसके अलावा, मृतक मतदाता सत्ताधारी पार्टी के लिए बड़ी मदद हैं। ऐसे मृत मतदाताओं के आंकड़ों को लेकर कई अनौपचारिक अनुमान और आँकड़े सामने आते रहते हैं। कुछ अनुमान बताते हैं कि लगभग 40 लाख मृत लोगों के नाम अभी भी जीवित मतदाता सूची में मौजूद हैं।

साथ ही, अवैध बांग्लादेशी घुसपैठिए भी इस पूरे रैकेट का हिस्सा हैं। पहले लैफ्ट फ्रंट के शासनकाल में इन्हें राज्य में घुसने में मदद दी जाती थी। तब ममता खुद इन अवैध प्रवासियों की कड़ी विरोधी थीं और संसद में यह मुद्दा कई बार उठाया था।

लेकिन सत्ता में आने के बाद, उन्होंने इसी साधन को और परिष्कृत रुप देकर, इन अवैध प्रवासियों को अपना प्रमुख एवं बड़ा वोट बैंक बना लिया। देशभर की रिपोर्टें बताती हैं कि पकड़े गए अधिकतर अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों के पास पश्चिम बंगाल के दक्षिण 24 परगना जिले के कुछ इलाकों में बने आधार और वोटर कार्ड पाए जाते हैं। नवीनतम अनौपचारिक रिपोर्टों से पता चलता है कि इन लोगों में डर फैल गया है। न्यू टाउन क्षेत्र, जहाँ पहली बार आने वाले अवैध प्रवासियों की संख्या ज्यादा रहती है, वहां बहुत सी झोपड़ियां और कमरे तालाबंद मिले हैं और उनमें रहने वाले लोग वापस बांग्लादेश लौट गए हैं। मुसलमान एसआईआर प्रक्रिया के सबसे बड़े विरोधी रहे हैं और एक समय ममता ने वादा किया था कि वे इस प्रक्रिया को रोक देंगी। अब वही लोग ममता के खिलाफ हो रहे हैं क्योंकि वे इसे रोकने में नाकाम रही हैं।

इसी वजह से ममता अब एसआईआर प्रक्रिया को ब्लॉक स्तर के अधिकारियों की मौतों के लिए जिम्मेदार ठहरा रही हैं। वे इस प्रक्रिया को आगे बढ़ने से रोकने के नए तरीके खोज रही हैं। हो सकता है कि इस प्रक्रिया को बीच में रोकने के लिए वे किसी बड़े पैमाने की कानून-व्यवस्था की गड़बड़ी को भी बढ़ावा दे दें।

डॉ. उमर उन नबी धुरी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हैंडलर्स से टेलीग्राम पर आए निर्देशों के अनुसार, बम बनाने की कोशिश करते थे। उन्होंने अपने नैटवर्क के स्टॉक में अमोनियम नाइट्रेट, जो एक शक्तिशाली विस्फोटक सामग्री है, को कई जगह जमा कर रखा था। अधिकारियों ने फरीदाबाद में लगभग 2,900 किलो अमोनियम नाइट्रेट, डेटोनेटर, टाइमर और अन्य सामग्री बरामद करने का दावा किया है।

जांच में मिली सीसीटीवी फुटेज से एक सुराग मिला है: हुंडई आई-20 को दिल्ली ले जाने से पहले अल-फलाह मैडिकल कॉलेज के परिसर में 11 दिनों तक पार्क किया गया था। पुलिस का आरोप है कि उसके बाद उमर ने, शायद अपने साथियों की गिरफ्तारी और उस पर बढ़ते दबाव में हताश होकर यह हमला करने का फैसला लिया। एक अधिकारी के अनुसार, "उसने यह सब प्लान किया और अपने दोस्तों के अरैस्ट होने के बाद इसे अंजाम दे दिया।

एन.आई.ए. और अन्य सुरक्षा एजेंसियों ने आधिकारिक रूप से उमर उन-नबी को रेड फोर्ट ब्लास्ट का मुख्य संदिग्ध बताया है और इस घटना को आतंकी हमला घोषित किया है। करता है कि कैसे एक्स्ट्रीमिस्ट हालांकि कई महत्वपूर्ण बातें, जैसे कि उन पर किस स्तर तक नियंत्रण था, जे.ई.एम. हैंडलर्स से उन्हें कितना सीधा निर्देश मिला और क्या वे वास्तव में आत्मघाती हमलावर थे, अब भी जांच के दायरे में हैं।

जांचकर्ताओं का यह भी कहना है कि जिस डिवाइस में धमाका हुआ, वह संभवत: उन्हीं सामग्रियों से बनाया गया था, जो फरीदाबाद से बरामद हुई थीं। इससे एक जुड़े हुए टैरर नेटवर्क की कड़ियां और मजबूत होती हैं। अभी सुरक्षा एजेंसियां मॉड्यूल की फंडिंग, उसके ऑपरेशन की पहुंच और पूरी लॉजिस्टिक श्रृंखला की जांच कर रही हैं। एक अधिकारी के अनुसार, "यह घटना उसी घटनाक्रम की एक महत्वपूर्ण कड़ी थी, जिससे एक बड़े आतंकी नेटवर्क का पर्दाफाश हुआ।"

अगर आरोप प्रमाणित होते हैं, तो उमर का मामला भारत के पेशेवर डॉक्टर वर्ग में कट्टरपंथी होने के सबसे गंभीर उदाहरणों में से एक होगा। एक कथित टैरर लॉजिस्टिक्स नैटवर्क में मैडिकल प्रैक्टिशनर्स का शामिल होना इस बारे में बड़े मुश्किल सवाल खड़े आइडियोलॉजी बहुत पढ़े लिखे, दिखने में सर्विस ओरिएन्टेड कम्युनिटीज़ में घुस सकती है। नई दिल्ली की एजेंसियों के सामने चुनौती न सिर्फ अदालत में टिकने वाला मजबूत मामला बनाने की है, बल्कि उन्हें यह भी तय करना है कि भविष्य में ऐसे वाइट-कॉलर आतंकी मॉड्यूल को कैसे पहचाना और रोका जाए। दुनिया की निगाहें अब इस बात पर हैं कि जांचकर्ता डॉ. उमर उन-नबी की पूरी कहानी को कैसे जोड़ते हैं।

'पढ़े ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

राजू ने कहा कि अब डॉक्टरों और इंजीनियरों का देश विरोधी गतिविधियों में शामिल होना एक ट्रेंड बन गया है। उन्होंने शरजील इमाम के कथित भड़काऊ भाषणों के वीडियो कोर्ट में दिखाये। वीडियो में इमाम को फरवरी 2020 में दिल्ली में हुए दंगों से पहले 2019 और 2020 में चाखंड, जामिया, अलीगढ़ और आसनसोल में भाषण देते हुए भी दिखाया गया।

बिहार में आजमाये ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

नीतीश कुमार के पारंपरिक समर्थन का अति महत्वपूर्ण हिस्सा है।

भाजपा की उत्तर प्रदेश रणनीति इसी जनसांख्यिकी (डैमोग्राफी) पर टिकी हुई है। यूपी में कुर्मी वोटरों की संख्या बिहार की तुलना में लगभग दोगुनी है, और कई जिलों में यह समुदाय, दूसरे ओबीसी और ईबीसी समुदायों के साथ, पारंपरिक रूप से समाजवादी पार्टी के साथ जुड़ा रहा है।

अब भगवा पार्टी का मकसद यही है कि बिहार वाले जातीय संतुलन और अभीष्ट पहुंच (टार्गेटेड आउटरीच) को यूपी में दोहराकर इस वोट आधार में सेंध लगाई जाए। भाजपा के अंदरूनी सूत्रों के अनुसार, पार्टी नेतृत्व यूपी में एक ताकतवर ओबीसी चेहरे को संभावित मुख्यमंत्री उम्मीदवार के रूप में आगे लाने पर गंभीरता से विचार कर रहा है। इस संभावना को इन रिपोर्टों से और बल मिलता है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह मौजूदा यूपी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कामकाज से पूरी तरह संतुष्ट नहीं हैं।

भाजपा के लिए बिहार से मिली सीख स्पष्ट है: जातीय गणित, खासकर कुर्मी और व्यापक ओबीसी समर्थन की एकजुटता राजनीतिक परिणामों को पूरी तरह बदल सकती है। जैसे-जैसे 2027 के यूपी चुनाव की उलटी गिनती शुरू होती है, पार्टी अपने "बिहार में खरे उतरे" फ़ॉर्मूले को यूपी में लागू करके एक व्यापक सामाजिक गठजोड़ बनाने के लिए कटिबद्ध दिखाई दे रही है, जो उसे एक निर्णायक जनादेश दिला सके।

पंजाब पुलिस ने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

को अंजाम दे सकते थे। पंजाब पुलिस ने बताया कि पाकिस्तानी आतंकी मॉड्यूल के दो आतंकवादियों का एनकाउंटर किया गया है जिसमें दो आतंकी घायल हैं। घायल हुए आतंकियों को पकड़ लिया गया है और उनसे पूछताछ की जा रही है।

'राज्यपाल अनिश्चित काल तक विधानसभा से पारित विधेयक नहीं रोक सकते'

नयी दिल्ली, 20 नवंबर। उच्चतम न्यायालय ने एक अहम संवैधानिक फैसले में गुरुवार को कहा कि राज्य के राज्यपाल राज्य विधानसभाओं द्वारा पारित विधेयक को अनिश्चित काल तक नहीं रोक सकते। न्यायालय ने हालांकि यह भी स्पष्ट किया कि वह संविधान के अनुच्छेद 200 और 201 के तहत राष्ट्रपति या राज्यपालों को मंज़ूरी देने या न देने के लिए ज़रूरी समयसीमा तय नहीं कर सकता लेकिन राज्यपाल अनिश्चित काल तक किसी भी विधेयक को नहीं रोक सकते। हालांकि इसमें स्पष्ट किया गया है कि लंबे समय तक, बिना किसी वजह के मंजूरी नहीं दिये जाने के मामलों में न्यायालय विधेयक की प्राथमिकता की जांच किए बिना एक निश्चित अवधि में फैसला करने का निर्देश देते हुए एक सीमित परमादेश रिट जारी कर सकते हैं।

थरूर ने अपनी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

एक्स पर एक पोस्ट में थरूर ने प्रधानमंत्री के मंगलवार के भाषण की तारीफ करते हुए लिखा कि "यह आर्थिक दृष्टिकोण और सांस्कृतिक प्रेरणा, दोनों का मिश्रण था, जो राष्ट्र को प्रगति के लिए बेचैन रहने का आ ान करता है।" यह प्रशंसा सामान्य लग सकती थी, अगर प्रधानमंत्री ने उसी भाषण में यह बात भी न कही होती कि "10-15 साल पहले कांग्रेस में घुसे शहरी नक्सल और माओवादी ताकतों ने कांग्रेस को मुस्लिम लीग माओवादी कांग्रेस बना दिया था, जिसने अब राष्ट्रीय हितों को छोड़कर अपने स्वार्थ के लिए देश के हितों को छोड़ दिया है।" प्रधानमंत्री ने यह भी कहा: "आज माओवादी मुस्लिम कांग्रेस देश की एकता के लिए बड़ा खतरा बनती जा रही है।" कांग्रेस की प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत ने थरूर की टिप्पणियों से दूरी बनाते हुए कहा कि उन्हें प्रधानमंत्री के भाषण में कोई प्रशंसनीय बात नहीं लगी। कांग्रेस नेता संदीप दीक्षित ने थरूर को पाखंडी बताते हुए कहा कि अगर उन्हें प्रधानमंत्री इतने योग्य लगते हैं, तो वे भाजपा में क्यों नहीं शामिल हो जाते? सी.पी.एम. के सांसद जॉन ब्रिट्टास ने भी थरूर पर जमकर हमला किया। उधर भाजपा इस विवाद का फ़ायदा उठाने में लगी है। पार्टी नेता शहजाद पूनावाला ने कांग्रेस को "इंदिरा नाज़ी कांग्रेस" कहा और पार्टी पर थरूर के खिलाफ एक और फ़तवा जारी करने का आरोप लगाया।

नीतीश ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

नड्डा, चिराग पासवान और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन-एनडीए के कई अन्य शीर्ष नेता उपस्थित थे।

राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने कुमार को ऐतिहासिक गांधी मैदान में आयोजित एक भव्य समारोह में मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाई।

मार्डन मीडिया, बीकानेर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 35214/79, **जयपुर कार्यालय:** सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, **कोटा कार्यालय :** पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, **उदयपुर कार्यालय:** आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, **अजमेर कार्यालय:**-राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665, **जालोर कार्यालय :-** जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422,226423, फैक्स: 02973-226424 **हिण्डौनसिटी कार्यालय :-** जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 **चूरू कार्यालय :** एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908